खान भारती

वर्ष : 2020 **अंक : 6**

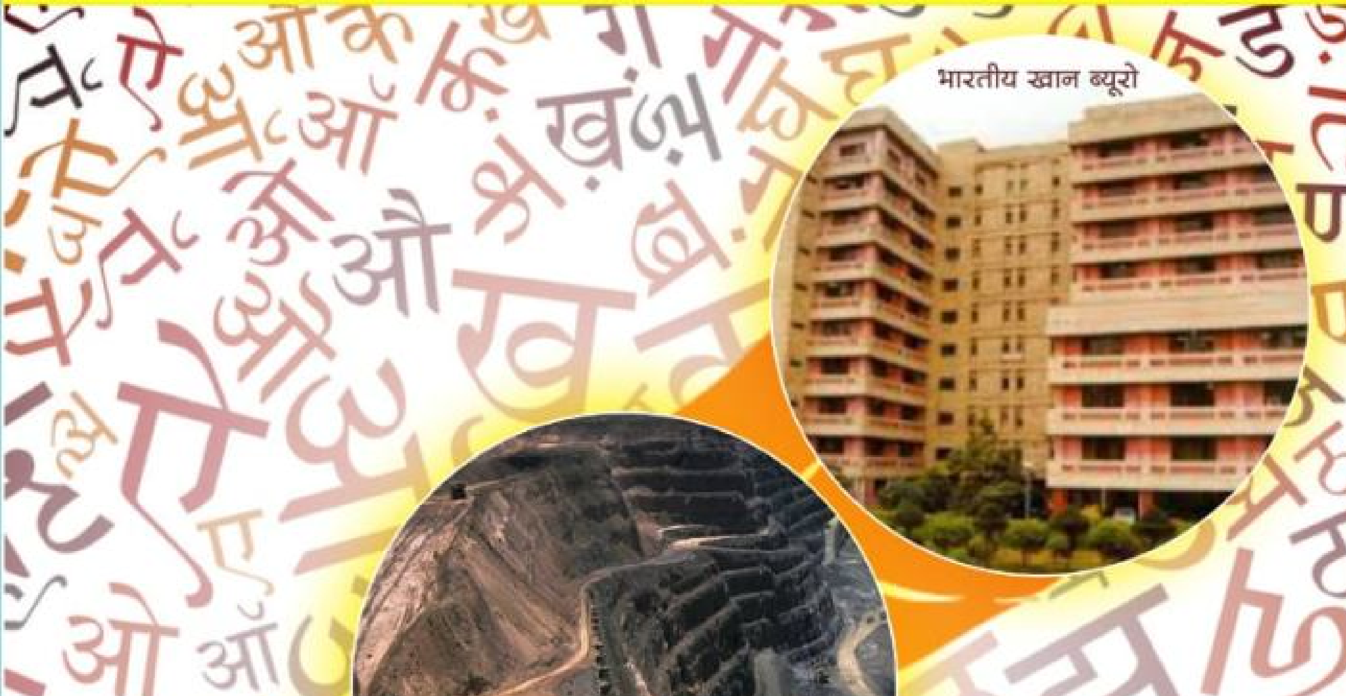

भारतीय खान ब्यूरो

नागपुर

वर्ष - 2020 अंक - 6

खान भारती

हिंदी अनुभाग
भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर

संरक्षक

सतेन्द्र सिंह

भा.प्र.से.

संयुक्त सचिव एवं महानियंत्रक (प्रभारी)

संपादक मंडल

मुख्य संपादक	डॉ. पी.के. जैन	मुख्य खनिज अर्थशास्त्री एवं राजभाषा अधिकारी
संपादक	अभिनय कुमार शर्मा	सहायक संपादक
संपादन सहयोग	मिताली चटर्जी	वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
	असीम कुमार	कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
	किशोर डी. पारधी	कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

आवरण पृष्ठ सज्जा

विनय कुमार सक्सेना वरिष्ठ पुस्तकालय एवं सूचना सहायक

साज - सज्जा एवं टंकण

प्रदीप कुमार सिन्हा अवर श्रेणी लिपिक

संदेश

यह जानकर मुझे अत्यंत गौरव की अनुभूति हो रही है कि भारतीय खान ब्यूरो (मुख्यालय), नागपुर की हिंदी गृह -पत्रिका 'खान भारती' के आगामी अंक-6 का प्रकाशन हो रहा है । राजभाषा नीति के अनुपालन तथा हिंदी के प्रचार - प्रसार में ऐसी पत्रिकाएं सहायक सिद्ध होती हैं। पत्रिका के माध्यम से अधिकारियों और कर्मचारियों को अपनी अनुभूतियाँ अभिव्यक्त करने का समुचित अवसर मिलता है ।

हिंदी हमारी राष्ट्रीयता का प्रतीक है और संविधान द्वारा राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित है। अत: हिंदी के प्रति हमारा दायित्व एक नागरिक के नाते राष्ट्रभाषा के लिए तथा एक सरकारी कार्मिक के नाते राजभाषा के लिए और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है । हिंदी में कामकाज की दिशा में हमारी जागरूकता तथा कार्य निपुणता बढ़ाने के काम में हिंदी गृह - पत्रिका 'खान भारती' की भूमिका अति महत्वपूर्ण होगी ।

आज का युग सूचना प्रौद्योगिकी का युग है। वैश्वीकरण के दौर में कम्प्यूटर और इंटरनेट के प्रयोग के बिना कोई भी भाषा विश्व पटल पर अपना अस्तित्व बनाये रखने में असमर्थ है। अत: इस दृष्टि से भी हमें हिंदी को देखना चाहिए, उस पर विचार करना चाहिए और उसे व्यवहार में लाना चाहिए ।

यह अत्यंत ही प्रसन्नता की बात है कि भारतीय खान ब्यूरो हिंदी की प्रगति, प्रचार और प्रसार के लिए सराहनीय कार्य कर रहा है। यह कार्यालय अपने खान और खनिज के तकनीकी कार्य के साथ राजभाषा कार्यान्वयन,राजभाषा निरीक्षण, राजभाषा प्रशिक्षण आदि कार्यों के द्वारा राजभाषा हिंदी के अनुपालन में भी सक्रिय भूमिका निभा रहा है। मैं आशा करता हूं कि भविष्य में भी भारतीय खान ब्यूरो कार्यालय भारत सरकार की राजभाषा नीतियों को कार्यान्वित करने में प्रयत्नशील रहेगा ।

मेरी यह आशा है कि 'खान भारती' पत्रिका हिंदी के प्रचार - प्रसार का माध्यम बनेगी तथा इसमें प्रकाशित रचनाएं पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध होंगी । मैं पत्रिका के संपादक मंडल और रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा इसके सुखद भविष्य की कामना करता हूँ ।

(सतेन्द्र सिंह)
संयुक्त सचिव एवं
महानियंत्रक (प्रभारी)

संदेश

भारतीय खान ब्यूरो (मुख्यालय), नागपुर की हिंदी गृह - पत्रिका 'खान भारती' का आगामी संस्करण प्रकाशित किए जाने के समाचार से मुझे हार्दिक प्रसन्नता है। यह निश्चय ही राजभाषा हिंदी के प्रति समर्पित कर्तव्य और सेवा भाव तथा कार्यालयमें राजभाषा के प्रयोग में निरंतर अभिवृद्धि का परिचायक है और राजभाषा हिंदी के उत्तरोत्तर विकास की दिशा में एक प्रशंसनीय प्रयास है।

वैश्वीकरण के दौर में, ज्ञान, विज्ञान और प्रौद्योगिकी का अधिक से अधिक प्रसार के लिए हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाना आवश्यक है। संविधान के अनुच्छेद 343 के आधार पर हिंदी को भारत में राजभाषा का दर्जा प्राप्त है जिसकी वज़ह से हिंदी भाषा का प्रयुक्ति क्षेत्र बहुत विस्तृत है। समकालीन समय में सूचना प्रौद्योगिकी जिसकी आत्मा कंप्यूटर है, किसी भी अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी बना हुआ है। यह सर्वज्ञात है कि कंप्यूटर में राजभाषा हिंदी में कार्य करना सुगम है। हिंदी में कंप्यूटर स्थानीयकरण का कार्य काफी पहले प्रारंभ हुआ और अब यह आंदोलन की शक्ल ले चुका है।

हिंदी में उपलब्ध गुणवत्ता पूर्ण सॉफ्टवेयर, फॉन्ट, टंकण टूल आदि की सक्षम तकनीक ने शासकीय कामकाज हिंदी में करना एकदम आसान बना दिया है। अँग्रेजी से हिंदी में अनुवाद किया जा सकता है, हिंदी टंकण के प्रशिक्षण बिना हिंदी टंकण आसानी और पर्याप्त स्पीड से किया जा सकता है। और तो और,अब हिंदी वॉइस टाइपिंग की सुविधा ऑनलाइन तथा ऑफलाइन दोनों पर उपलब्ध है। अतएव हम सरकारी कार्मिकों के लिए हिंदी संबंधी संवैधानिक प्रावधानों को पूरा करना अब कतई कठिन नहीं है।

यूनिकोड सक्रिय कम्प्युटर पर हिंदी में किए गए कार्य को दुनिया के किसी कोने में यूनीकोड सक्रिय कम्प्युटर में अंग्रेजी भाषा की तरह खोला जा सकता है। यही कारण है कि आज देश - विदेश में हम हिंदी में ई-मेल भेज रहे हैं और प्राप्त कर रहे हैं। तथापि, आज सिस्टम जेनरेटेड प्रोग्रामों में हिंदी की स्थिति कुछ खास नही है। अधिकतर सॉफ्टवेयर प्रोग्राम पहले ही तैयार कर लिये जाते हैं, उसके बाद उनमें हिंदी की सुविधा तलाश की जाती है। अतः इस दिशा में विशेष प्रयास किये जाने की आवश्यकता है।

मैं 'खान भारती' पत्रिका से जुड़े सभी अधिकारियों / कर्मचारियों एवं संपादक मंडल को बधाई देता हूँ जिनके अथक परिश्रम एवं प्रयासों से 'खान भारती' का अंक नियमित रूप से प्रकाशित हो रहा है तथा भविष्य में यह निरंतर प्रकाशित होती रहे और युगों - युगों तक जगमगाती रहे, यह मंगल आशा है।

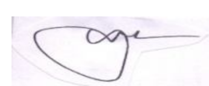

(डॉ. पी. के. जैन)
मुख्य खनिज अर्थशास्त्री
एवं राजभाषा अधिकारी

<u>संपादकीय</u>

सितंबर, 2019 में 'खान भारती के सफल प्रकाशन के पश्चात भारतीय खान ब्यूरो (मुख्यालय) नागपुर की हिन्दी गृह पत्रिका 'खान भारती' का नवीनतम अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है। पत्रिका के लेखकों और पाठकों के सहयोग से ही इसी प्रयास को सार्थक बनाया जा सका।

यह सर्वज्ञात तथ्य है कि किसी भी राष्ट्र के विकास हेतु भाषा शक्ति का काम करती है क्योंकि श्रम शक्ति के साथ बेहतर संचार भाषा के सहारे ही किया जा सकता है। भारतीय खान ब्यूरो द्वारा प्रकाशित 'खान भारती' पत्रिका इन्ही उपरोक्त पंक्तियों की घोतक है। 'खान भारती' पत्रिका भारतीय खान ब्यूरो के कार्मिको को एक ऐसा मंच प्रदान करती है जहां वे अपनी रचनात्मकता को सजीव रुप प्रदान करते हैं हिन्दी भाषा के प्रति अपने राष्ट्रीय और नैतिक कर्तव्य को अभिव्यक्त करते है। उनकी इस अभिव्यक्ति का माध्यम है उनके द्वारा प्रषित कहानी,कविता और लेख आदि। इस प्रकार यह पत्रिका भारतीय खान ब्यूरो की एक सशक्त संचार माध्यम है।

हिन्दी राष्ट्रीय स्वाभिमान की भाषा है। समय की मांग है कि हम हिन्दी को भारतीय संस्कृति के विकास का माध्यम बनाएं और उसके लिए देश के प्रत्येक कोने के पढे लिखे व्यक्ति को अपना कार्य,चिंतन-मनन व आपसी संवाद अपने ही देश की भाषा हिन्दी या अन्य भारतीय भाषाओं में करना आवश्यक है। इस दिशा में सूचना प्रौद्योगिकी ने महती भूमिका अदा की है। विभिन्न संचार माध्यमों से एक देश में हो रहे हिन्दी लेखन को दूसरे देश में रहने वाले पाठक आसानी से पढ पा रहे हैं। हिन्दी का अघोषित वैश्विक भाषा के रुप में लगातार विस्तार हो रहा हैं।

पत्रिका के प्रकाशन के लिए मैं सभी वरिष्ठ अधिकारियों का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ जिनके मार्गदर्शन से यह पत्रिका प्रकाशित हो सकी। साथ ही संपादक मंडल और सभी रचनाकारो के प्रति आभार जिनके कारण यह पत्रिका अपने वास्तविक कलेवर को प्रप्त कर सकी। मुझे विश्वास है कि आप सभी के इसी सहयोग से हम खान भारती के प्रकाशन को भविष्य में और भी अधिक रुचिकर एवं बहुपयोगी बना पाऐंगे।

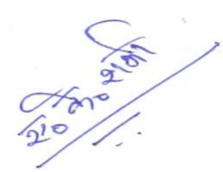

(अभिनय कुमार शर्मा)
सहायक संपादक

अ नु क्र म णि का

क्रमांक	रचना का शीर्षक	लेखक	पृष्ठ संख्या
1	राष्ट्रीय खनिज नीति, 2019 - हितधारक के हितों और चिंताओं का संतुलन	डॉ. प्रदीप कुमार जैन	01-05
2	विस्फोटक प्रदर्शन विस्फोट प्रेरित जमीन - कंपन की पूर्व सूचना का एक महत्वपूर्ण कारक	पी. के. भट्टाचार्जी, क्षेत्रीय खान नियंत्रक	06-12
3	कोरोना - ए जंग -	डॉ. शैलेन्द्र कु. शर्मा	13-16
4	अपनी प्रशंसा (व्यंग्य लेख की तेज धार)	अरूण कुमार राय	17-18
5	कोरोना काल में योग की भूमिका	विनय कुमार सक्सेना	19-23
6	कर्ण और वर्तमान समय की परिस्थितियों में समानताएं	गौरव शर्मा	24-26
7	इस मन की चंचलता	अक्षत यागनिक	27
8	प्रेरणा	पुखराज नेणिवाल	28-29
9	एच.आई.वी. एड्स और पोशाहार	अभिनय कुमार शर्मा	30-32
10	मधुमेह	ललित कुमार नागदा	33-36
11	भारत - भारती	दिलीप पंवार	37-39
12	आत्मनिर्भर	डॉ. प्रदीप कुमार जैन	40-41
13	शिक्षा नीति 2020	बी. एल. यादव	42-44
14	कोरोना एक जंग -	अभिषेक कुमार	45-48
15	**सौर ऊर्जा और इसका उपयोग**	पप्पू गुप्ता	49-50
16	खुश कैसे रहा जाये	एकता गिरी	51-56
17	अनुवाद की भारतीय परंपरा	असीम कुमार	57-59
18	पर्यावरण अनुकूल खनन : चुनौतियां, संसाधन संरक्षण एवं सतत विकास	डॉ. इप्सिता मोहनराम	60-65
19	संविधान हमारा	प्रशांत तिनगुरीया	66
हिंदी प्रगति			
20	वर्ष 2019 - 20 के दौरान राजभाषा हिंदी से संबंधित कार्यों की उपलब्धियाँ		67-72
21	हिंदी पखवाड़ा - 2019 की रिपोर्ट		73-79

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में अभिव्यक्त विचार लेखक के अपने हैं एवं संगठन से उसका कोई संबंध नहीं है।

राष्ट्रीय खनिज नीति, 2019 - हितधारक के हितों और चिंताओं का संतुलन

डॉ. प्रदीप कुमार जैन
मुख्य खनिज अर्थशास्त्री एवं राजभाषा अधिकारी
भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर

पृष्ठभूमि

खनिजों सहित प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग वैश्विक अर्थशास्त्र का मुख्य आधार है जिसमे मानव विकास और कल्याण समाहित है। हालांकि खनिज संपदा लंबी अवधि में परिमित और गैर-नवीकरणीय, विकास का एक प्रमुख संसाधन है खनिज नीतियां महत्वपूर्ण दस्तावेज हैं जिनका उपयोग सरकार स्थायी खनिज कच्चे माल की आपूर्ति और ऐसे लक्ष्यों की पूर्ति की दिशा में कदम बढ़ाने के लिए करती है। भारत में खनिज नीति की यात्रा को अब सात दशक से अधिक हो गए हैं। यह खनिज पदार्थों के कच्चे माल की आपूर्ति से लेकर खनिज विकास तक बदलते परिदृश्यों का एक खाका दिखाती है, जिसमें अंतर-विकास समानता भी शामिल है।

राष्ट्रीय खनिज नीति 2019, मौजूदा राष्ट्रीय खनिज नीति 2008 (NMP 2008) का स्थान लेती है जिसे वर्ष 2008 में घोषित किया गया था। राष्ट्रीय खनिज नीति 2008 की समीक्षा करने का काम सर्वोच्च न्यायालय द्वारा कॉमन कॉज बनाम यूनियन ऑफ़ इंडिया और अन्य के मामले में एक निर्देश के बाद आई। शीर्ष न्यायालय के निर्देशों के अनुपालन में, खान मंत्रालय ने राष्ट्रीय खनिज नीति 2008 की समीक्षा करने के लिये खान मंत्रालय के अपर सचिव डॉ. के. राजेश्वर राव की अध्यक्षता में 14 अगस्त, 2017 को एक समिति गठित की थी। इस समिति में भारतीय खान ब्यूरो ने भी एक सदस्य के रूप में योगदान दिया है। समिति की बैठकों और हितधारकों की टिप्पणियों / सुझावों पर विचार-विमर्श के बाद, समिति ने रिपोर्ट तैयार कर खान मंत्रालय को प्रस्तुत की। खान मंत्रालय ने समिति की रिपोर्ट को स्वीकार कर पूर्व विधायी परामर्श नीति (Pre-legislative Consultation Policy-PLCP) प्रक्रिया के हिस्से के रूप में हितधारकों की टिप्पणियों / सुझावों को आमंत्रित किया। PLCP प्रक्रिया में प्राप्त टिप्पणियों/सुझावों और केंद्रीय मंत्रालयों/विभागों की टिप्पणियों/सुझावों के आधार पर राष्ट्रीय खनिज नीति 2019 को अंतिम रूप

दिया गया। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने राष्ट्रीय खनिज नीति, 2019 (National Mineral Policy 2019) को मंज़ूरी दे दी है।

उद्देश्य

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने हाल ही में राष्ट्रीय खनिज नीति, 2019 (National Mineral Policy-NMP 2019) को मंज़ूरी दी। इस नीति का उद्देश्य खनन क्षेत्र के प्रभावी विनियमन और सतत् विकास को सुनिश्चित करना है। राष्ट्रीय खनिज नीति, 2019 का उद्देश्य प्रभावी, अर्थपूर्ण और कार्यान्वयन-योग्य नीति का निर्माण करना है जो बेहतर पारदर्शिता, विनियमन और प्रवर्तन, संतुलित सामाजिक व आर्थिक विकास के साथ-साथ दीर्घावधिक खनन अभ्यासों को बढ़ावा देने में सक्षम हो।

खनन क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिये राष्ट्रीय खनिज नीति 2019 में शामिल प्रावधान

राष्ट्रीय खनिज नीति 2019 में शामिल प्रावधान और प्रमुख विशेषताएँ नीचे संक्षेप में वर्णित है

- यह नीति खनिजों की निकासी और परिवहन के लिये तटीय जलमार्ग और अंतर्देशीय शिपिंग के उपयोग पर ध्यान केंद्रित करती है और खनिजों के परिवहन को सुविधाजनक बनाने के लिये समर्पित खनिज गलियारों को भी प्रोत्साहित करती है।
- नीति में सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों को दिये गए आरक्षित क्षेत्रों जिनका उपयोग नहीं किया गया है, को युक्तिसंगत बनाने और इन क्षेत्रों को नीलामी हेतु रखे जाने का भी उल्लेख किया गया है, जिससे निजी क्षेत्र को भागीदारी के अधिक अवसर प्राप्त होंगे।
- इस नीति में निजी क्षेत्र की सहायता करने के लिये वैश्विक मानदंड के साथ कर, प्रभार और राजस्व के बीच सामंजस्य बनाने के प्रयासों का भी उल्लेख किया गया है।
- यह निजी क्षेत्र को अन्वेषण (Exploration) हेतु प्रोत्साहित करती है।
- इसमें यह भी उल्लेख किया गया है कि खनिज के लिये दीर्घकालिक आयात नीति से निजी क्षेत्र को बेहतर योजना और व्यापार में स्थिरता लाने में मदद मिलेगी।
- Reconnaissance Permit / Prospecting License धारकों के लिये पहले इनकार करने के अधिकार (Right of First Refusal) को लागू करना।
- राजस्व शेयर आधार पर समग्र RP (Reconnaissance Permit) सह PL (Prospecting License) सह ML (Mining Lease) के लिये नए क्षेत्रों में नीलामी।
- खनन संस्थाओं के विलय और अधिग्रहण को प्रोत्साहन।
- निजी क्षेत्र के खनन क्षेत्रों को बढ़ावा देने के लिये खनन पट्टों का हस्तांतरण और समर्पित खनिज गलियारों का निर्माण।

- राष्ट्रीय खनिज नीति, 2019 में निजी क्षेत्रों में खनन के वित्तपोषण को बढ़ावा देने और निजी क्षेत्रों द्वारा अन्य देशों में खनिज संपत्ति के अधिग्रहण के लिये खनन गतिविधियों को उद्योग का दर्जा देने का प्रस्ताव किया गया है।
- इसमें यह भी उल्लेख किया गया है कि खनिज के लिये दीर्घकालिक आयात नीति से निजी क्षेत्र को व्यापार हेतु बेहतर योजना तैयार करने और व्यापार में स्थिरता लाने में मदद मिलेगी।
- नीति में सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों को दिये गए आरक्षित क्षेत्रों जिनका उपयोग नहीं किया गया है, को युक्तिसंगत बनाने और इन क्षेत्रों को नीलामी हेतु रखे जाने का भी उल्लेख किया गया है, जिससे निजी क्षेत्र को भागीदारी के अधिक अवसर प्राप्त होंगे।
- इस नीति में निजी क्षेत्र की सहायता करने के लिये वैश्विक मानदंड के साथ कर, प्रभार और राजस्व के बीच सामंजस्य बनाने के प्रयासों का भी उल्लेख किया गया है।

अन्य महत्त्वपूर्ण बिंदु

- राष्ट्रीय खनिज नीति, 2019 के तहत शुरू किये जाने वाले बदलावों में '**मेक इन इंडिया**' पहल और लैंगिक संवेदनशीलता (Gender sensitivity) पर ध्यान देना शामिल है।
- खनिजों में विनियमन के लिये ई-गवर्नेंस, सूचना प्रौद्योगिकी (IT) सक्षम प्रणाली, जागरूकता और सूचना अभियान शामिल किये गए हैं।
- निजी निवेश को आकर्षित करना है
- खनिज संसाधनों के डेटाबेस बनाए रखने के लिये प्रयास करना है ।
- नई नीति, खनिजों की निकासी और परिवहन के लिये तटीय जलमार्गों एवं अंतर्देशीय शिपिंग के उपयोग पर ध्यान केंद्रित करती है। साथ ही खनिजों के परिवहन को सुविधाजनक बनाने के लिये समर्पित खनिज गलियारों को प्रोत्साहित करने का भी प्रस्ताव करती है।
- परियोजना प्रभावित व्यक्तियों और क्षेत्रों के समान विकास के लिये ज़िला खनिज निधि का उपयोग किया जाएगा।
- खनिज उत्पादन को बड़े पैमाने पर बढ़ाने हेतु ध्यान देने के साथ, नई नीति को बड़े पैमाने पर कारोबार करने में आसानी 'और निवेश आकर्षित करने के लिए प्रस्ताव है।
- अगले सात वर्षों में खनिजों के उत्पादन को 200 प्रतिशत तक बढ़ाने का प्रस्ताव किया किया है।
- राष्ट्रीय खनिज नीति 2019 नीति पीढ़ीगत समानता (Inter-Generational Equity) की अवधारणा को भी प्रस्तुत करती है जो न केवल वर्तमान पीढ़ी की भलाई के लिये काम करती है

बल्कि आने वाली पीढ़ियों हेतु (खनन क्षेत्र में सतत् विकास सुनिश्चित करने के लिये) तंत्र को संस्थागत बनाने के लिये एक अंतर-मंत्रालयी निकाय का गठन करने का भी प्रस्ताव करती है।

नीति का प्रभाव

- वाटर चैनल के माध्यम से खनिजों का परिवहन पारंपरिक तरीकों की तुलना में बहुत सस्ता और किफायती होता है। साथ ही, अंतर्देशीय जलमार्ग के विकास से खनिजों का उत्पादन करने वाले 12 राज्यों का एकीकरण होगा।
- समर्पित खनिज गलियारे परिवहन की लागत तथा प्रदूषण को कम करने में मदद करेंगे। साथ ही निर्यात द्वारा राजस्व को भी बढ़ावा देंगे।
- भारत में अधिकांश खनिज पहाड़ी क्षेत्रों में या उन स्थानों पर पाए जाते हैं जहाँ जनजातियों की बहुलता होती है या जहाँ विकास नहीं हुआ है तथा उचित भौतिक या सामाजिक बुनियादी ढाँचे का अभाव है। ज़िला खनिज निधि से खनिज समृद्ध हर ज़िले के विकास में मदद मिलेगी।
- ज़िला खनिज निधि का समुचित उपयोग न केवल स्थानीय क्षेत्र में जल, स्वास्थ्य देखभाल और कौशल जैसी बुनियादी सुविधाओं को बेहतर बनाने में किया जाएगा, बल्कि यह सतत् विकास में भी महत्त्वपूर्ण योगदान देगी।
- नई नीति लोगों को शिक्षित करने और अपेक्षित कौशल प्रदान कर पर्यावरण की रक्षा करने में भी मदद करेगी।
- निजी क्षेत्र उन आरक्षित क्षेत्रों में उत्पादन करने में सक्षम होगा, जिनका अभी तक सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों द्वारा उपयोग नहीं किया गया है।
- एक बार खनन उद्योग को औद्योगिक दर्जा मिलने के बाद उद्यमियों के लिये बैंकों और अन्य संस्थानों से वित्त प्राप्त करना आसान हो जाएगा।
- डेटाबेस के रखरखाव से उद्यमियों को उन क्षेत्रों की पहचान करने में मदद मिलेगी जहाँ खनिज पाए जाते हैं और इस प्रकार वे गतिविधियों की योजना बनाने में सक्षम होंगे।

आगे की राह

- ज़िला खनिज निधि के उपयोग में पारदर्शिता होनी चाहिये।
- खनिज गलियारों के सफल संचालन के लिये शिपिंग मंत्रालय, सड़क एवं राजमार्ग मंत्रालय तथा रेलवे मंत्रालय से सहायता की आवश्यकता होती है।
- 'खनिज गलियारों' के संबंध में एक अलग कार्य बल खनिजों के निर्बाध परिवहन में बाधाओं की पहचान करने में मदद करेगा।
- सरकार को भारत में खनन हेतु उपलब्ध उन खनिजों के आयात को रोकने के लिये खनन की लागत पर सब्सिडी देने की आवश्यकता है।

- खनिज मुद्दों पर समर्पित फास्ट ट्रैक अदालतें न केवल निवेश को आकर्षित करेंगी, बल्कि निर्यात को प्रोत्साहन भी देंगी।
- भारत में खनन की लागत को कम करने के लिये 'मेक इन इंडिया' पहल के तहत खनन क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास कार्यों में निवेश किया जाना आवश्यक है, इससे लोगों को रोज़गार के अवसर प्रदान करने के साथ ही विदेशी मुद्रा की बचत होती है।

सारांश

खनन क्षेत्र लंबे समय से वैज्ञानिक खनन विधियों, पर्यावरण और गैरकानूनी गतिविधियों के मुद्दों के खराब रिकॉर्ड और सामाजिक प्रदर्शन पर काम कर रहा है। विनियामक वातावरण, क्षमता और जवाबदेही, ने भी इसे बनाए रखा है। इसे देखते हुए, एक नए राष्ट्रीय खनिज नीति को विकसित करने की आवश्यकता का प्रस्ताव लंबे समय से वांछित था । सरकार के लिए नीतिगत दस्तावेज के साथ आने का यह एक महत्वपूर्ण अवसर था, जो आर्थिक विचार-विमर्श के अलावा खनन क्षेत्र को अत्यधिक पर्यावरणीय और सामाजिक जिम्मेदारी के साथ कार्य करने के लिए मार्गदर्शन करेगा।

नई राष्ट्रीय खनिज नीति अधिक प्रभावी विनियमन सुनिश्चित करेगी। यह परियोजना प्रभावित व्यक्तियों विशेष रूप से आदिवासी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के मुद्दों का समाधान करने के साथ ही भविष्य में सतत् खनन क्षेत्र के विकास को बढ़ावा देगी। खनिज संपन्न राज्यों के साथ पूरे देश की आर्थिक प्रगति के लिये राष्ट्रीय खनिज नीति का उचित कार्यान्वयन आवश्यक है। 'मेक इन इंडिया' पहल के तहत, भारत सरकार का उद्देश्य अर्थव्यवस्था में विनिर्माण क्षेत्र की हिस्सेदारी बढ़ाना है। खनिज/अयस्क आपूर्ति पर निर्भर डाउनस्ट्रीम उद्योगों की मांग को पूरा करने के लिये इस राष्ट्रीय पहल को स्थायी रूप से खनिज क्षेत्र के समग्र विकास पर केंद्रित करने की आवश्यकता है।

नोट : लेख में व्यक्त विचार स्वयं लेखक के हैं और भारतीय खान ब्यूरो के विचार भिन्न हो सकते हैं।

❖ हिन्दी विश्व की महानतम भाषा है - राहुल सांकृत्यायन

विस्फोटन प्रदर्शन - विस्फोट प्रेरित जमीन कंपन की पूर्व सूचना का एक महत्वपूर्ण कारक

पी. के. भट्टाचार्जी
क्षेत्रीय खान नियंत्रक
भारतीय खान ब्यूरो, गुवाहाटी

सारांश

खनिज विकास और संरक्षण नियम (एम.सी.डी.आर) 2017 के नियम 38 में कहा गया है कि 'जब भी खनन पट्टा क्षेत्र से निकटता के कारण सार्वजनिक इमारतों या स्मारकों को कोई नुकसान होता है, खनन पट्टे का धारक एक सुरक्षित सीमा के भीतर ब्लास्टिंग के कारण होने वाले जमीनी कंपन का वैज्ञानिक जांच करेगा'। ओपनकास्ट मेटल खानों में ब्लास्टिंग के क्षेत्र में हाल ही में स्वीकार की गई एक प्रौद्योगिकी में थोक साइट मिश्रित इमल्शन (एस.एम.ई) विस्फोटकों का उपयोग शामिल है। लेकिन, क्या इस तरह के विस्फोटकों का विस्फोट प्रेरित जमीनी कंपन पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है जो खानों के निकट सार्वजनिक इमारतों या स्मारकों को प्रभावित करता है? स्थानीय साइट कारकों पर उचित विचार के साथ साइट-विशिष्ट कंपन कारक समीकरण स्थापित करने के लिए कई कानून बनाए गए हैं। हालांकि उपरोक्त समीकरण स्थापित करते समय विस्फोटकों के प्रदर्शन को कोई महत्व नहीं दिया जाता है।

यह पत्र एक खुले खदान में किए गए परीक्षण की विश्लेषण का परिणाम प्रस्तुत करता है। अध्ययन का उद्देश्य विस्फोट प्रेरित जमीन कंपन पर विस्फोट (वी.ओ.डी) के वेग के संदर्भ में विस्फोटन प्रदर्शन में परिवर्तन के प्रभाव की पहचान करना था। चार महीने की अवधि में इसे निष्पादित करने के लिए एक व्यापक डेटा संग्रह कार्यक्रम तैयार किया गया था। इस विषय पर मौजूदा साहित्य की समीक्षा के बाद ब्लास्टिंग परीक्षणों के लिए दो प्रकार के विस्फोटकों का चयन किया गया, नामत बल्क इमल्शन उत्पाद और अमोनियम नाइट्रेट ईंधन तेल मिश्रण (ए.एन.एफ.ओ.)। उनके प्रदर्शन का आकलन करने के लिए विस्फोटकों के इन-होल डेटोनेशन वेग को मापा गया। इसके बावजूद ट्रायल धमाकों की लोकेशन नहीं बदली गई। विस्फोट प्रेरित जमीन कंपन एक भूकंप-सूचक यंत्र में दर्ज किया गया था। अलग-अलग प्रकार के विस्फोटकों के परीक्षण से

उत्पन्न आंकड़ों के साथ एक विस्तृत सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया। प्रत्येक विस्फोटक के लिए साइट-विशिष्ट कंपन कारक समीकरण स्थापित किया गया था। उपरोक्त समीकरणों के संबंधित साइट कॉन्स्टैंट की तुलना की गई थी। उपरोक्त समीकरणों का उपयोग करके एक सुरक्षित कंपन सीमा के लिए अधिकतम चार्ज वजन की गणना भी की गई थी। इस अध्ययन से यह अनुमान लगाया गया था कि विस्फोट प्रेरित जमीनी कंपन के स्तर में विस्फोटकों के वी.ओ.डी में परिवर्तन के साथ एक महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ है। इसलिए विस्फोटकों के वी.ओ.डी में परिवर्तन के साथ विस्फोट प्रेरित जमीनी कंपन स्तरों में परिवर्तन का पता लगाने के लिए अनुसंधान संस्थानों से व्यापक अध्ययन की आवश्यकता है; ताकि विस्फोटकों का एक उपयुक्त सुधार कांस्टेंट, साइट विशिष्ट कंपन कारक समीकरण में पेश किया जा सके।

<u>प्रस्तावना</u>

डीप-होल ब्लास्टिंग में, विस्फोटक कॉलम एक सिलेंडर के आकार का अनुमान रखता है जिसकी लंबाई व्यास अनुपात, 6: 1 से बहुत अधिक है। शॉट के इस प्रकार के होने से किसी भी बिंदु पर चोटी कण गति (PPV) विस्फोट से दूरी के वर्ग के विपरीत आनुपातिक हो जाएगा। इसलिए, स्केल्ड दूरी $D/(W)^{1/2}$ के रूप में, दूरी (D) पर कंपन के ज्यामितीय फैलाव पर चार्ज वजन (W) के प्रभाव को जोड़ती है। प्रत्येक कंपन घटक,'k' और 'm' के लिए स्थानीय साइट स्थिरांक, PPV पर भूवैज्ञानिक विशेषताओं के प्रभाव के लिए अनुमति देते हैं और PPV बनाम स्केल्ड दूरी के एक logarithmic आंकलन से निर्धारित किया जा सकता है। विलंब डेटोनेटर के उपयोग के साथ विस्फोटों के मामले में इस स्केलिंग संबंध को और संशोधित किया जाता है। ऐसे मामलों में, विस्फोटक वजन प्रति देरी विस्फोटक वजन बन जाता है।

विस्फोटक की प्रदर्शन क्षमता विस्फोट वेग और घनत्व के साथ-साथ मुक्त गैसों की मात्रा और प्रतिक्रिया की गर्मी का एक कार्य है। विस्फोटकों का प्रदर्शन न केवल उसकी कुल ऊर्जा पर निर्भर करता है बल्कि उस दर पर भी निर्भर करता है जिस पर उसे छोड़ा जाता है। ऊर्जा की रिहाई की यह दर विस्फोटक के वी.ओ.डी पर निर्भर करती है, जो अपनी शॉक ऊर्जा और ऊर्जा के विभाजन को प्रभावित करती है। इसलिए, विस्फोटकों का वी.ओ.डी इसके प्रदर्शन का मूल्यांकन करने के लिए महत्वपूर्ण पैरामीटर है। इस संदर्भ में मौजूदा साहित्य की समीक्षा एक बहुत ही सीमित प्रकाशित प्रयोग को इंगित करती है। डॉ एस.एम.एफ हुसैनी (2004) ने एक खुले कोलमाइन में दो प्रकार के विस्फोटकों अर्थात् ए.एन.एफ.ओ. और घोल का उपयोग करके डेटा के 44 सेटों का विश्लेषण किया। उनके अध्ययन का उद्देश्य साइट-विशिष्ट कंपन कारक समीकरण की प्रयोज्यता पर विस्फोटक प्रकार के प्रभाव को समझना था। ए.जे. प्रकाश (2004) ने एक खुली लोह अयस्क खदान में दर्ज जमीन कंपन डेटा का विश्लेषण किया। उन्होंने अन्य साइट मापदंडों को स्थिर रखते हुए विभिन्न प्रकार के विस्फोटकों का उपयोग किया, जिनमें वी.ओ.डी. भिन्न थे। परिणाम से पता

चला है कि एक उच्च वी.ओ.डी. वाले विस्फोटक कम वी.ओ.डी. विस्फोटक की तुलना में अधिक कंपन उत्पन्न करते हैं। निक एलिथ, (2005) ने संकेत दिया कि इस्तेमाल किए गए विस्फोटक के प्रकार में बदलाव के साथ ग्राउंड वाइब्रेशन पैटर्न के स्तर में कोई महत्वपूर्ण बदलाव नहीं आया है। इसलिए, वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य विस्फोटक प्रदर्शन में परिवर्तन के प्रभाव को समझना है, जो चूना पत्थर के खदान में विस्फोट प्रेरित जमीनी कंपन पर अपने वीओडी के संदर्भ में है।

<u>विधियां और सामग्री</u>

परीक्षण उत्पादन विस्फोटों के लिए चयनित डोमेन चूनापत्थर का खदान है। परीक्षण विस्फोटों के लिए अपनाया गया प्रारंभिक विस्फोट डिजाइन एक विविध वी.ओ.डी. होनेवाले विस्फोटकों के प्रकार के बावजूद एक ही रहा। इस परियोजना में अपनाई गई डेटा संग्रह प्रक्रियाएं नीचे दी गई हैं।

- विस्फोट छेद की स्थिति,छेद की लंबाई,विस्फोटक राशि,चार्ज लंबाई और टाई-अप "जैसा कि डिज़ाइन किया गया" और "ड्रिल किए गए" विस्फोट डिजाइन डेटा का संग्रह और प्रलेखन।
- इन-होलवोड मापन के माध्यम से विस्फोटन प्रदर्शन डेटा का संग्रह।
- थोक इमल्शन उत्पाद के लिए गैसिंग लंबाई माप का संग्रह।
- सभी परीक्षण उत्पादन विस्फोटों के लिए विस्फोट प्रेरित जमीन कंपन डेटा का संग्रह।

विस्फोटकों की सीमित वी.ओ.डी को नीचे तय प्रक्रिया के अनुसार मापा गया था। ज्ञात विशिष्ट प्रतिरोध की एक वी.ओ.डी जांच 152 मि.मी. व्यास छेद में उतारा गया था। छेद में जाँच के इस्तेमाल के तार का एक छोर शॉर्ट-सर्किट था और दूसरा अंत उपकरण से जुड़ा हुआ था। यह उपकरण तार के खपत की इस दर को जांच के प्रतिरोध में परिवर्तन के रूप में रिकॉर्ड करता है, जो अप्रत्यक्ष रूप से विस्फोट तरंग के सामने या विस्फोटकों के वी.ओ.डी के प्रचार का वेग है। विस्फोटक का घनत्व महत्वपूर्ण गुणों में से एक है, जो विस्फोट वेग को प्रभावित करता है। पैक किए गए विस्फोटक उत्पादों के घनत्व के विपरीत, थोक इमल्शन उत्पाद के घनत्व में भिन्नता संभव है। थोक इमल्शन का घनत्व साइट पर कप घनत्व द्वारा मापा जाता है। कप घनत्व को मापने के लिए, इमल्शन उत्पाद का एक नमूना ज्ञात मात्रा और वजन के एक कप में बाहर ले जाया जाता है। गैसिंग के कारण कप में इमल्शन की मात्रा बढ़ जाती है। इमल्शन की मात्रा को स्थिर रखने के लिए, कप में विस्फोटक स्तंभ में वृद्धि को ध्यान से काट दिया जाता है और इमल्शन का वजन मापा जाता है। इसकी मात्रा से विभाजित कप में इमल्शन का वजन उत्पाद का घनत्व देता है। प्रधान एम (2005) ने 152 मि.मी. व्यास छेद में थोक इमल्शन उत्पाद के विस्फोट के वेग पर घनत्व में परिवर्तन के प्रभाव का पतालगाने के लिए एक ही स्तर में कई प्रयोग किए। दर्ज की गई टिप्पणियों को नीचे तालिका में दिखाया गया है।

S.N	मैट्रिक्स का तापमान, ^{0}C	प्रारंभिक कप घनत्व, g/cc	Stemming के समय कप घनत्व, g/cc	छेद की गहराई, m	प्रारंभिक चार्ज लंबाई, m	अंतिम चार्जलंबाई, m	इन-होल घनत्व औसत, g/cc	वी.ओ.डी, m/s
1	56	1.32	0.84	9.00	4.70	5.90	1.05	4893
2	60	1.32	0.99	10.00	5.30	6.20	1.12	5063
3	61	1.34	1.06	8.00	4.25	4.90	1.16	5135
4	57	1.33	1.15	9.30	5.30	5.80	1.21	5083

अध्ययन से यह परिलक्षित हुआ कि थोक इमल्शन उत्पाद के सीमित वीओडी में 1.05 से 1.21 ग्राम/सी.सी तक थोक इमल्शन उत्पाद के औसत डाउन होल घनत्व भिन्नता के मुकाबले कोई महत्वपूर्ण भिन्नता नहीं थी। घनत्व की इस सीमा में वी.ओ.डी आंकड़ा 5043 $\pm$ 150 मीटर प्रति सेकंड था। इसलिए, थोक इमल्शन उत्पाद के लिए गैसिंग लंबाई माप इस अध्ययन में उन टिप्पणियों को हल करने के लिए किया गया था, जहां थोक इमल्शन उत्पाद के इन-होल घनत्व में या 1.05 से नीचे या 1.21 ग्राम/सीसी से ऊपर उतार-चढ़ाव होता है। जमीन के कंपन को रिकॉर्ड करने के लिए उपयोग किए जाने वाले भूकंप-सूचक यंत्रको निर्माता की अनुमोदित प्रयोगशाला में कैलिब्रेट किया गया था। एक भूकंपलेख के साथ जमीन कंपन रिकॉर्डिंग के लिए पालन किया जाने वाला मानक कड़ाई से पालन किया गया था। भूकंपलेख में दर्ज डेटा को आगे के विश्लेषण के लिए अपने संबंधित सॉफ्टवेयर का उपयोग करके कंप्यूटर में डाउनलोड किया गया था।

परिणाम

152 मि.मी व्यास छेद में सीमित स्थिति के तहत ए.एन.एफ.ओ और बल्क इमल्शन उत्पाद जैसे विस्फोटकों का मापा गया वी.ओ.डी नीचे दिया गया है।

विस्फोटक का प्रकार	वी.ओ.डी, m/sec	विस्फोटक का इन-होल घनत्व, g/cc
बल्क इमल्शन उत्पाद	5043 $\pm$ 150	1.05 – 1.21
ए.एन.एफ.ओ	3425 $\pm$ 200	0.82

दूरी-समय भूखंडों के रूप में उपकरण द्वारा दर्ज की गई और वी.ओ.डी की गणना करने के लिए सॉफ्टवेयर में विश्लेषण किया गया आंकड़ों को नीचे दिखाया गया है।

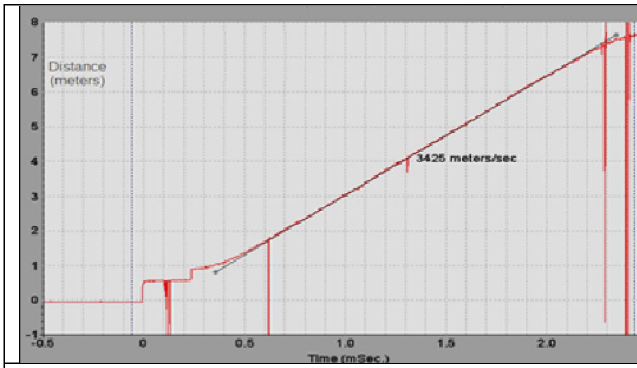

0.82 ग्राम/सीसी के छेद घनत्व के नीचे पर ANFO वी.ओ.डी

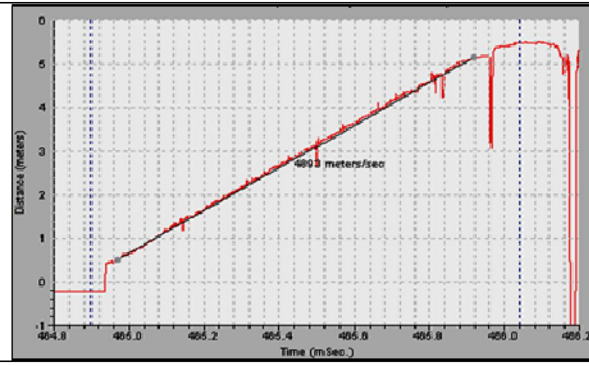

1.05 ग्राम/सीसी के छेद घनत्व के नीचे थोक इमल्शन उत्पाद वी.ओ.डी

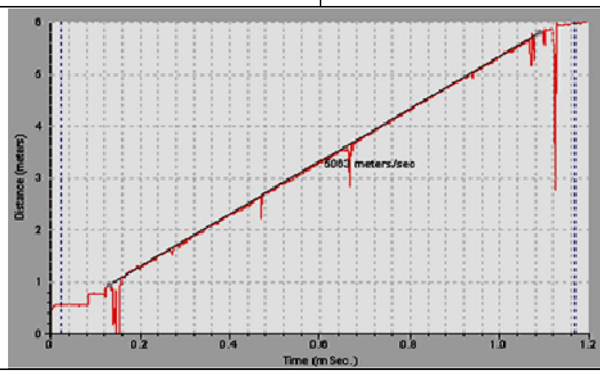

1.12 ग्राम/सीसी के छेद घनत्व के नीचे थोक इमल्शन उत्पाद वी.ओ.डी

नीचे दी गई तालिका में इसकी संबंधित स्केल्ड दूरी और तात्कालिक आवेश भार के खिलाफ जमीनी कंपन के लिए दर्ज टिप्पणियों का सारांश दिखाया गया है।

विस्फोटक का प्रकार	स्केल दूरी	तात्कालिक चार्ज वजन, kgs	PPV, mm/sec	स्केल दूरी	तात्कालिक चार्ज वजन, kgs	PPV, mm/sec
ए.एन.एफ.ओ	6.41	547.0	19.94	17.20	122.0	5.08
ए.एन.एफ.ओ	8.73	295.0	29.97	13.76	233.0	11.43
ए.एन.एफ.ओ	13.25	602.0	12.06	10.00	225.0	13.19
ए.एन.एफ.ओ	4.12	359.0	42.16	11.99	352.0	10.69
ए.एन.एफ.ओ	9.43	288.0	15.11	13.50	672.0	9.72
ए.एन.एफ.ओ	14.45	173.0	6.60	14.99	178.0	8.25
ए.एन.एफ.ओ	21.08	90.0	4.57	16.99	262.0	7.14
ए.एन.एफ.ओ	3.45	303.0	29.72	9.03	276.0	15.11
थोकइमल्शन	8.99	495.0	19.56	10.00	225.0	14.01
थोकइमल्शन	18.87	344.0	6.10	11.99	352.0	12.13
थोकइमल्शन	23.93	135.0	7.75	13.50	672.0	11.05
थोकइमल्शन	9.25	431.0	15.11	14.99	178.0	10.16
थोकइमल्शन	19.58	340.0	9.78	16.99	262.0	9.20

विस्फोटक का प्रकार	स्केल दूरी	तात्कालिक चार्ज वजन, kgs	PPV, mm/sec	स्केल दूरी	तात्कालिक चार्ज वजन, kgs	PPV, mm/sec
थोकइमल्शन	10.92	585.0	11.81	19.00	211.0	8.42
थोकइमल्शन	6.55	325.0	17.78	20.48	183.0	7.93

प्रत्येक प्रकार के विस्फोटकों के लिए साइट-विशिष्ट कंपन कारक समीकरण स्थापित करने के लिए डेटा के पंद्रह सेट एकत्र किए गए थे। विस्फोटक के दो प्रकार के लिए स्थापित समीकरण नीचे दिए गए हैं ।

पी.पी.वी = 189.83 $(D/\sqrt{Q})^{-1.156}$ (ए.एन.एफ.ओ विस्फोटक के लिए, 83.9% के सहसंबंध गुणांक पर)

पी.पी.वी = 87.08 $(D/\sqrt{Q})^{-0.793}$ (थोक इमल्शन विस्फोटक के लिए, 85% के सहसंबंध गुणांक पर)

जहाँ-

D- कंपन रिकॉर्ड करने के बिंदु से चार्ज की रेडियल दूरी, मीटर में

Q - तात्कालिक चार्ज वजन, कि.ग्रा में

दो प्रकार के विस्फोटकों के लिए प्रतिगमन रेखा भूखंड नीचे दिए गए हैं ।

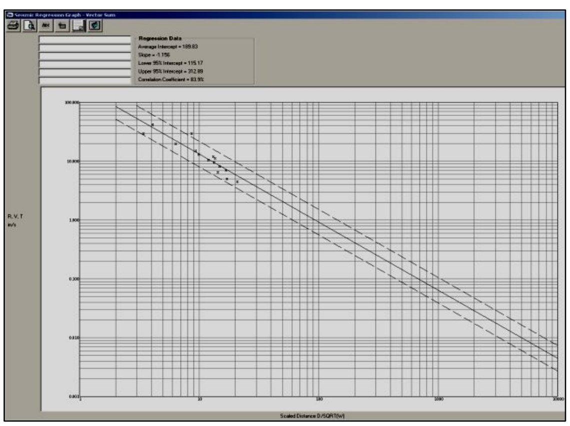

PPV और ए.एन.एफ.ओ के साथ दागे गए शॉट्स के स्केल्ड दूरीके बीच प्रतिगमन

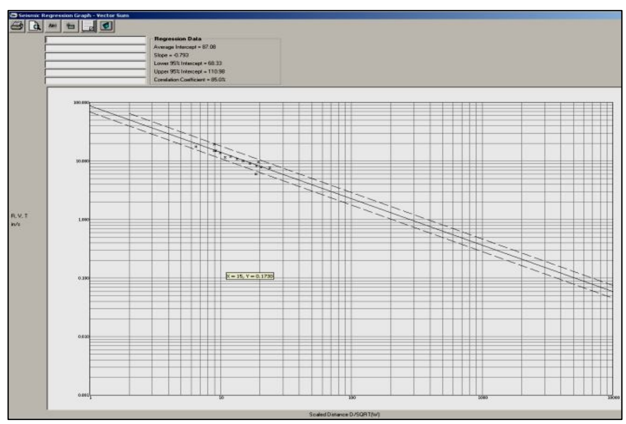

PPV और थोकइमल्शन के साथ दागे गए शॉट्स के स्केल्ड दूरीके बीच प्रतिगमन

चर्चाएं और निष्कर्ष

उपरोक्त दो समीकरणों के साथ स्थापित साइट स्थिरांक नीचे तालिका में दिखाया गया है।

विस्फोटक का प्रकार	स्थिरांक, k	स्थिरांक, m	प्रतिगमन समीकरण के सह संबंध गुणांक
ए.एन.एफ.ओ	189.83	-1.156	83.9 %
थोक इमल्शन	87.08	-0.793	85.0 %

यह उपरोक्त तालिका से पता चला है कि दो प्रकार के विस्फोटकों के लिए स्थापित साइट स्थिरांक के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर मौजूद है। बल्क इमल्शन उत्पाद की तुलना में एएन.एफ.ओ विस्फोटकों के साथ किए गए परीक्षण विस्फोटों के मामले में 'k' और 'm' मूल्य लगभग दोगुने हैं। एक निश्चित दूरी के लिए तात्कालिक शुल्क वजन और दो समीकरणों का उपयोग करके कंपन की एक सुरक्षित सीमा की अलग से गणना की गई थी। परिणाम नीचे तालिका में दिखाए गए हैं।

दूरी, m	तात्कालिक चार्ज वजन, 5 मिमी/सेकंड के पीपीवी स्तर के लिए एएनएफओ विस्फोटक के लिए किलोग्राम में।	तात्कालिक चार्ज वजन, 5 मिमी/सेकंड के पीपीवी स्तर के लिए बल्क इमल्शन उत्पाद के लिए किग्रा में।
50	4.63	1.85
100	18.51	7.42
150	41.65	16.69
200	74.05	29.67
250	115.71	46.36
300	166.62	66.76
350	226.79	90.86
400	296.21	118.68
450	374.89	150.20
500	462.83	185.43
550	560.03	224.37
600	666.48	267.02
650	782.19	313.38

पुन: उपरोक्त तालिका से देखा जाता है कि थोक इमल्शन उत्पाद पर ए.एन.एफ.ओ विस्फोटकों के साथ परीक्षण विस्फोटों के मामले में एक ही कंपन स्तर के लिए तात्कालिक चार्ज वजन लगभग 2 ½ गुना अधिक है। यह संकेत मिलता है कि ए.एन.एफ.ओ. विस्फोटक के उपयोग के साथ विस्फोटों के लिए तात्कालिक चार्ज वजन थोक इमल्शन उत्पाद के उपयोग के साथ विस्फोटों के तात्कालिक चार्ज वजन से 2 ½ गुना अधिक हो सकता है, एक निश्चित दूरी पर कंपन के एक ही स्तर का उत्पादन करने के लिए। यह उपरोक्त अनुमान स्पष्ट रूप से तय करता है कि विस्फोट प्रेरित जमीन कंपन पर वी.ओ.डी का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। इसलिए, विस्फोटकों के वी.ओ.डी. में परिवर्तन के साथ विस्फोट प्रेरित जमीनी कंपन स्तरों में परिवर्तन का पता लगाने के लिए अनुसंधान संस्थानों से व्यापक अध्ययन की आवश्यकता है; ताकि विस्फोटकों का एक उपयुक्त सुधार स्थिरांक, साइट विशिष्ट कंपन कारक समीकरण में पेश किया जा सके।

कोरोना - ए - जंग

डॉ. शैलेन्द्र कु. शर्मा
ख़निज अर्थशास्त्री
भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर

बात सदियों पूरानी भी है और नई भी । मै कौन हूँ? यह प्रश्न सभी के मन मस्तिष्क पर छाया हुआ है। वैसे तो मेरी उत्पत्ति सदियों पुरानी है। पर कबसे है यह कोई नही जानता । यह प्रश्न ऐसा है जिसका जवाब किसी के पास नही है। इस कालखंड का ज्ञान किसी को नही है। मेरी उत्पत्ति तो सारे कालखंडो से भी पूरानी है। मै पृथ्वी पर, पृथ्वी के जन्म चक्र के साथ ही पैदा हुआ हूँ। आप सोच रहे होंगे अपने मुंह मियाँ मिठ्ठू बन रहा है पर ऐसा नही है। जन्म तो मेरा सदियों पूराना ही है पर ताकतवर मै अभी-अभी बना हूँ। पहले सब जानते तो थे पर मानते नहीं थे। मेरा अस्तित्व तो उस समय भी था जब मनुष्य की उत्पत्ति भी नही हुई थी। सारे कालखंडो से भी पूराना हूँ मैं; रामायण, महाभारत आदिकाल से भी पुराना। यह बताना इसलिये जरुरी है क्योंकि कालखंडों का नाम आते ही कुछ महानुभावों को लगता है कि सबसे पुराना कालखंड वो है, जिसे वह जानते हैं या मानते हैं। पर ऐसा नहीं है, समय सत्य है, कार्यशील है। कोई हो या ना हो, जानता हो या ना हो, पर वह अपनी निरंतर गति से चलता रहता है।

मैंने न जाने कितने बदलाव देखे हैं पृथ्वी पर। हर ताकतवर सोचता है कि धरती उसी की है और इसके लिये न जाने कितनी जंग लड़ी है। अभी आप सब सोच रहे होंगे कि यह बताता क्यों नहीं कि ये कब पैदा हुआ है। सच पूछो तो मैं भी नहीं जानता कि मेरा जन्म कब और कहाँ पर हुआ है। अभी कुछ दिनों पहले ही मुझे पता चला कि मैं वुहान राज्य मे जन्मा, जो चीन में है। लेकिन हकीकत यह है कि अभी भी मेरा जन्म स्थान किसी को पता नहीं। कोई कहता है कि पशु-पक्षी से, तो कोई कहता है प्रयोगशाला में पैदा हुआ हूँ अभी भी संसार एकमत नही है कि मै कहा पैदा हुआ हूँ हाँ यह जरूर सिद्ध हो गया है कि मैं वुहान, चीन से ही फैला। फैला का मतलब गलत मत निकालना मेरे कोई पैर या पंख नही हैं जो चलकर, दौड़कर, उडकर, तैरकर या जानवरो की सवारी करके फैला हूँ। मै तो मरा हुआ एक जन्तु हूँ मै तो जीवित भी नही हूँ तब कैसे पहाड़, नदी, समंदर, जंगल, खेत खलियान को पार करके देश-देश, राज्य-राज्य, शहर-शहर, गांव-गांव में फैला सकता हूँ।

हाँ मैं फैला हूँ जैसे सबकी सवारी होती है, मेरी भी सवारी है। मजे की बात है कि मेरी सवारी को भी पता नहीं होता कि मैं उसपर सवार हूँ । मैं इतना हल्का, ताकतवर और असरदार हूँ। मुझे सवार करने के लिये कोई अनुभव की जरुरत नहीं है। मै कितना ताकतवर हूँ ये कहने पर आप विस्मय (आश्चर्य चकित) क्यों हो रहे हो। बताता हूँ कि मैं कैसे ताकतवर हूँ। आपने तो सुना ही होगा कि एक सरदार सवा लाख के बराबर और एक मराठा लाख के बराबर। मैं तो हजारों-लाखों सरदारों-मराठों पर सवार हूँ, इतना हूँ ताकतवर ।

मैं सर्वव्यापी, सर्व गुण सम्पन्न, वुहानी साम्यवादी कहलाया जाता था। वैसे भी मैं आलसी किस्म का जंतु, खुद से सफर नहीं कर सकता, वुहान मे रहकर बहुत खुश था, वैसे भी साम्यवादी हूँ, संसार में ज्यादा पसंद नही किया जाता। पर पुँजीवाद को ये कैसे सहन होता कि एक नायाब चीज सिर्फ साम्यवादी ही बनकर रह जाये। मुझे पाने के लिये पुँजीवाद लालायित हो उठा तथा इसने मुझे संसार भ्रमण कराने की सोची और लाद लिया अपने उपर इस सवार को और बना दिया मुझे विश्वभ्रमण करने वाला पर्यटक। वैसे कुछ बुद्धिजीवियों का मानना है कि मेरा विस्तार साम्यवादी की विस्तारवादी निति के कारण हुआ। मेरा मानना यह है कि साम्यवाद मुझे विश्वभ्रमण कराना भी चाहता था तब भी पुंजीवाद ने मुझे ग्रहन क्यो किया, नकार देता, मना कर देता पूँजीवाद। पर इसने तो मुझे गले लगा लिया और बना दिया पर्यटक विश्वभ्रमणी। पूँजीवाद अपने आप को बहुत ताकतवर समझता है और उड चला मुझे साथ लेकर देशविदेश और मै भी साम्यवादी से पुँजीवाद हो गया। मेरा प्रचार-प्रसार अब सारे विश्व मे हो चुका है जिसे पूँजीवाद ने अपनाया उसे कोई कैसे नकार सकता है। जो देश जितना सम्पन्न, उतना ही मेरा भविष्य उज्ज्वल, उसी मे मैं फल-फूल रहा हूँ, जितना जो देश गरीब उतना ही मेरा फैलाव कम हो रहा है। वैसे भी मैं साम्यवाद से निकला हूँ, मैंने गरीबी देखी है और गरीब से मुझे हमदर्दी है। मैं उन्हें ज्यादा परेशान नहीं करता और क्यो करुं, वे वैसे ही बहुत सारी जंग लड़ रहे हैं अपनी जिंदगी में, और जंग लड़ते-लड़ते उनका इम्युनिटी पावर इतना मजबूत हो गया है कि मुझे उनसे डर लगता है कि कहीं मेरा ही सर्वनाश ना हो जाये उनके सम्पर्क मे आने से। वैसे भी मैं भी अमीरों के साथ रहना ज्यादा पसंद करता हूँ, अच्छी तिमारदारी होती है। एक से बढ कर एक डॉक्टर मेरा परीक्षण करते हैं। वैसे यह बता दू कि इन्हें भी पता नहीं कि मै क्या हूँ। बस हिट एंड ट्रायल करते रहते हैं ये बुद्धिजीवी। मैं भी इनके साथ खेल, खेल रहा हूँ। ये मेरे एक रुप पर परीक्षण करते हैं, तो मैं दूसरा रुप ले लेता हूँ, अब ये मुझे विदुषक भी कहने लगे हैं । इसी भागदौड़ में मैं सारे देशों में फैला जा रहा हूँ और पहूँच गया इंडिया।

आप कहेंगे, यह क्या, इसे भारत नहीं कह सकते। नहीं, मैं इंडिया में विचरन कर रहा हूँ। शुरु में तो इस देश ने मुझे नकारा, मेरा तिरस्कार किया, मैंने तो अपने आने की खबर पहले ही दे दी थी और आगाह भी कर दिया था। अबतक बहुत सारे विद्वान मुझे जानने लगे थे, पर इन्होंने मुझे कम करके आका और मेरी खिल्ली उड़ाई और कहा कि हमें ये हो ही नही सकता, हमने तो टिके लगा रखे हैं। इन्हें पता था कि मेरा विस्तार समूहों में विचरण करने मे जल्दी फैलता है। फिर भी इन्होंने अपने कार्यक्रम चालू रखे। कुछ तो यहां के विद्वान मेरा जीवन चक्र के ज्ञाता बन गये और कहने लगे मेरा जीवन चक्र 8 घंटों का है तो किसी ने कहा 13 घंटों का है। किसी ने कहा 1 दिन के बंद से इसकी इहलीला समाप्त हो जायेगी, पर मैं ठहरा पूँजीवाद, मेरा काल इतनी आसानी से थोड़े ही समाप्त हो सकता था । इस देश मे जिस तरह से पूँजीवाद फलता-फुलता है उसी तरह से मैं भी दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की कर रहा था और वो भी समूहों में ।

जी हाँ आपने सही समझा, यहां आकर मेरा नामकरण होने लगा, जो अब तक मैं बगैर भेदभाव के साम्यवाद और पूँजीवाद मे पाया जाता था, अब मैं धर्म के नाम से जाना जाने लगा। साम्प्रदायिक हो गया था और मुझे एक सम्प्रदाय के साथ जोड़कर देखना शुरु कर दिया गया। पर मेरा गुण तो सब मे समाहित होने का था, मै किसी से भेदभाव नही करता, सर्वव्यापी जो हूँ, धर्म, जाति, अमीर-गरीब, अच्छा-बुरा इन सबसे मुझे क्या लेना-देना। मैं कोई जीवित प्राणी थोड़े ही हूँ जिसे किसी का डर हो। कोई मेरे यहां रेड मारेगा तो और अच्छा, मेरा ही प्रसार होगा। अभी भी मेरा प्रसार इंडिया में ही हो रहा है, जब यहां इतना अच्छा प्रतिसाद मिल रहा है तो मैं और कहीं क्यों जाऊँ। कुछ विद्वानों को लगता है कि मैं आवाज से डर जाता हूँ, तो मुझे भगाने के लिये खूब आवाज की गई, तरह-तरह के वाद्य यंत्रो से। उन्हें लगा मैं मर जाऊँगा, पर उन्हें ये नहीं मालूम था कि वे मेरा स्वागत कर रहे हैं। उसके बाद, बहुतों ने मुझे जला कर मारने कि कोशिश की, पर सब नाकाम रहे। मरा हुआ जीव कभी ढोल-नगाड़ों या आग से मर सकता है, इस तरह का ज्ञान मैंने इंडिया मे आकर ही पाया, जबकि सबको इस समय तक पता चल गया था कि मेरा दोस्ताना समूहों से है और इन्होंने सब कार्य समूहों में किया। तब तो मेरा प्रसार होना स्वाभाविक ही था।

मेरी एक और खासियत है, एक तो मै किसी से भी भेदभाव नही करता, कोई कितना भी प्रसिद्ध हो वो मेरी चाह करेंगा तो मैं उसे जरुर प्राप्त होता हूँ। मैं उन्हें भी नहीं छोड़ता जो प्रसिद्ध ना हो, जो आम कहलाते हैं। अभी मेरा भारत मे प्रसार करने का कोई इरादा नही है क्योंकि भारतवासियों मे जंग का माहौल है। आप ये ना समझे दुसरे देशों से, ये जंग है बेरोजगारी, रोटी, कपडा और मकान, ख़ेतों में उपज, मार्केट मे सही दाम, इत्यदि से। ऐसा नहीं है कि इंडिया में भारत नहीं बसता, यहां भी बसता है और यही जंग यहां भी हो रही है । इस भू-भाग मे समय के साथ मै भी समाजवादी होता जा रहा हूँ या यह कहे कि हो गया हूँ। इंडिया खुश है, भारत परेशान।

इंडिया ने मुझसे बचने के लिये लॉकडाउन किया सम्पूर्ण, खुश हो गया ये देखकर कि मेरा प्रसार रुक गया है। पर उसे क्या मालूम भारत रो रहा है, दु:खी है, रोजगार जाने से, दुकाने बंद होने के कारण रोजी-रोटी के लिये। मुझे पता था वह बाहर निकलेगा, रास्ता नापेगा, मुझे सवार करेगा, मुझे भारत तक लेकर जायेगा ही। यह जंग है जो चल रही है फैलने और न फैलने की, इस जंग मे सफलता उसे ही मिलेगी जो मुझसे दूरी बनाये रखेगा, क्या अब भी नाम बताना पडेगा? अच्छा है, जान गये, मान गये। वर्ना दरवाजे पर मैं खड़ा ही हूँ एक और जंग के इंतजार में।

- हिन्दी भाषी प्रदेश की जनता से वोट लेना और उनकी भाषा तथा साहित्य को गालियाँ देना कुछ नेताओं का दैनिक व्यवसाय है - डॉ. रामविलाश शर्मा

- अंग्रेजी सीखकर जिन्होंने विशिष्टता प्राप्त की है, सर्वसाधारण के साथ उनके मत का मेल नहीं होता। हमारे देश में सबसे बढ़कर भेद वही है - रवीन्द्रनाथ ठाकुर

<u>अपनी प्रशंसा</u>

(व्यंग्य लेख की तेज धार)

अरुण कुमार राय
खनिज अर्थशास्त्री (आ. सू.)
भारतीय खान ब्युरो, नागपुर

मैंने यह तीर मारा, वह तीर मारा। यह रिकॉर्ड तोड़ा, वह कीर्तिमान स्थापित किया बोलते जाओ। चंद असत्यभाषियों को छोड़कर अधिकांश लोग इसे सत्य मान लेंगे और आपके प्रति विनम्र एवं श्रद्धालु बन जायेंगे।

न बनें, न कहें-आपको तो आत्मसंतोष होगा ही। आप कुछ भी सोचें और कुछ भी कहें।

आप मानें या न मानें, मुझे तो अपनी प्रशंसा बहुत प्रिय है। कभी कुछ लिखता हूँ या करता हूँ या कोई पॉस्ट शेयर करता हूँ तो यही लालसा रहती है कि इसे किसको सुनाऊँ और किसको पढ़ाऊँ, कौन इसे पढ़ा। पढ़कर मेरी प्रशंसा किया की नहीं? मेरे लिए वह क्षण सबसे अधिक आनंददायक होता है जब लोग कहते हैं-"'वाह. ! वाह !! क्या बात है! क्या शब्द-विन्यास है! कैसी अनुपम भाव अभिव्यक्ति है ! ऐसा ललित लेखन तो आपके बाद ही समाप्त हो जाएगा।"

जब किसी सभा में भाषण देता हूँ तो मेरी कोशिश यही होती है कि तालियां खूब बजे । सिर्फ तालियों से भी संतोष नहीं होता। जो मिलता है, उससे पूछता हूँ कि भाई, मेरा भाषण कैसा रहा? ठीक था न? बिल्कुल अच्छा था खुद ही बोल उठता हूँ। अगर वह व्यक्ति मेरी मन-प्रसन्न बात कहे तो मेरा प्रिय। चुप रह जाए तो बुद्धू या बेवकूफ। कमियां निकाले तो उसका नाम भी अप्रिय लोगों की सूची में डाल देता हूँ।

ऐसा स्वभाव मेरा ही है, ऐसी बात नहीं। अपनी प्रशंसा सुनकर प्रसन्न न होने वाला व्यक्ति मुझे तो मिला नहीं। अपनी प्रशंसा सुनना किसे अच्छा नहीं लगता है? यह तो मानव मन की कमज़ोरी है। हाँ यह बात दूसरी है कि बहुत से लोग मुझसे भी अधिक गुरूघंटाल हैं और प्रसन्नता के रस को मन ही मन पचा जाते हैं और डकार तक नहीं लेते।

आचार्य चाणक्य ने कहा है कि जो अपने मुंह से अपनी प्रशंसा करता है, व प्रशंसनीय नहीं है। प्रशंसा का पात्र तो वह है जिसकी तारीफ दूसरे लोग करें। आचार्य चाणक्य यदि आज होते तो मैं उनसे कहता कि गुरुवर, प्रशंसा करनेवालों का युग समाप्त हो गया है। आजकल निंदा-युग चल रहा है। अब प्रशंसा की नहीं जाती, कराई जाती है।

मैंने जीवन-भर यह शुभ कार्य किया है। गुरूजी, आपको तो चन्द्रगुप्त मिल गया था, लेकिन मेरी प्रशंसा कराने की कला को सीखने और समझनेवाला अभी तक कोई नहीं आया। आज किसी को किसी की प्रशंसा करने की फुर्सत है ही कहां? कोई हो तो उसे भेजो।

वैसे सत्य कहूं तो यह लेख भी मैंने लोगों से अपनी प्रशंसा कराने के लिए ही लिखी है। यह मेरी कला का प्रशंसनीय उदाहरण है। प्रशंसा हेतु मेरा नंबर संपादक महोदय के पास उपलब्ध है। जो इसे पढ़कर प्रशंसा करने को बाध्य न होंगे या प्रशंसा नहीं करेंगे तो मैं यही मुहावरा याद दिलाऊँगा कि

"..........................क्या जाने अदरक का स्वाद" !

- इस विशाल प्रदेक के हर भाग में शिक्षित - अशिक्षित, नागरिक और ग्रामीण सभी हिन्दी को समझते हैं - राहुल सांकृत्यायन

- समस्त आर्यावर्त या ठेठ हिंदुस्तान की राष्ट्र तथा शिष्ट भाषा हिन्दी या हिन्दुस्तानी है - सर जॉर्ज ग्रियर्सन

<u>कोरोना काल में योग की भूमिका</u>

विनय कुमार सक्सेना
वरिष्ठ पुस्तकालय एवं सूचना सहायक
भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर

वर्तमान में कोरोना वायरस सम्पूर्ण विश्व को आक्रान्त किये हुए है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने कोरोना को महामारी घोषित कर दिया है. कोरोना वायरस बहुत सूक्ष्म लेकिन प्रभावी वायरस है। कोरोना वायरस मानवके बाल की तुलना में नौ सौगुना छोटा है, लेकिन कोरोना का संक्रमण दुनिया भर में तेजी से फ़ैल रहा है। इस वायरस को पहले कभी नहीं देखा गया है, इस वायरस का संक्रमण दिसंबर- 2019 में चीन के वुहान में शुरू हुआ था। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक बुखार, खांसी, सांस लेने में तकलीफ इसके लक्षण हैं। आधुनिक चिकित्सा पद्वति ने कोरोना के समक्ष हथियार डाल दिए हैं अत: अब तक इस वायरस को फैलने से रोकने वाला कोई टीका नहीं बना है। ऐसे कोरोना काल में सम्पूर्ण मानवजाति वैकल्पिक चिकित्साओं की ओरउन्मुख है तथा विशेष कर उन चिकित्सा पद्धतियों की ओर जिनसे शरीर की रोग प्रतिरोधक शक्ति में वृध्दि की जा सके तथा शरीर पर उसका न्यूनतम दुष्प्रभाव पड़े। वैकल्पिक चिकित्सा की यह खोज यात्रा भारत की अत्यंत प्राचीन किन्तु अति प्रभावी यौगिक चिकित्सा पद्धति पर आकर ठहर जाती है जिसे सम्पूर्ण विश्व योग के नाम से जानता है। कोरोना काल में योग तब और भी आवश्यक हो जाता है जब योग के महत्वपूर्ण अंग प्राणायाम का सीधा प्रभाव मानवीय श्वसन तंत्र पर पड़ता है और यही श्वसन तंत्र कोरोना वायरस के आक्रमण के समय सबसे ज्यादा प्रभावित होता है। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस-2020 के अवसर पर सन्देश देते हुए माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने कोरोना से लड़ाई में योग की भूमिका को सबसे अहम बताया। उन्होंने कहा कि - "जहाँ कोरोना श्वसन तंत्र पर हमला करता है, वहीं योग उसी श्वसन तंत्र को मजबूत बनाने का काम करता है। प्राणायाम का अभ्यास करने से हमें कोरोना से लड़ने में मदद मिलती है।"

कोरोना काल में योग का महत्त्व -

योग प्राचीन काल से भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है। महर्षि पतंजलि ने योग को सुव्यवस्थित कर अष्टांग योग के नाम से प्रचलित किया। अष्टांग योग के आठ अंग है - यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि। इस तरह से अष्टांग योग को एक

ऐसी जीवन शैली के रूप में निरूपित किया गया जो शरीर व मन के साथ आत्मा की शुध्दि में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यहाँ योग अर्थात एक सम्पूर्ण स्वस्थ जीवन शैली कोरोना काल में योग के महत्त्व को सम्पूर्ण विश्व ने स्वीकार किया है, यही कारण है कि रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृध्दि हेतु योग सर्व स्वीकार्य है। वर्तमान कोरोना काल के विकराल रूप को देखते हुए योग को जीवन शैली के रूप में अपनाना अति - प्रासंगिक है। आधुनिक चिकित्सा पद्धति जहाँ आज कोरोना से लड़ने में अक्षम नजर आती है वहीं योग रोगों से लड़ने की रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित कर रोग के मूल को ही समाप्त कर देती है।

कोरोना पर नियंत्रण हेतु यौगिक उपाय –

कोरोना वायरस मनुष्य शरीर में मुख व नासामार्ग द्वारा प्रविष्ट होकर श्वसन तंत्र पर हमला करता है, ऐसी अवस्था मनुष्य की रोग प्रतिरोधक शक्ति उसका मुकाबला करती है। सशक्त रोग प्रतिरोधक शक्ति से उस पर विजय पायी जा सकती है, किन्तु कमजोर रोग प्रतिरोधक शक्ति के चलते वायरस हावी होने लगता और अंततः वह रोगी को मौत के मुंह में धकेल देता है। योग के विभिन्न अंग व उपाय शरीर की रोग प्रतिरोधक शक्ति के साथ- साथ श्वसन संस्थान को भी मजबूती प्रदान करते हैं जिससे कोरोना वायरस का मुकाबला पूरी ताकत के साथ किया जा सके। योग की वे महत्वपूर्ण क्रियाएं अथवा यौगिक उपाय जो कोरोना पर नियंत्रण पाने में सहायक हैं, इस प्रकार हैं :-

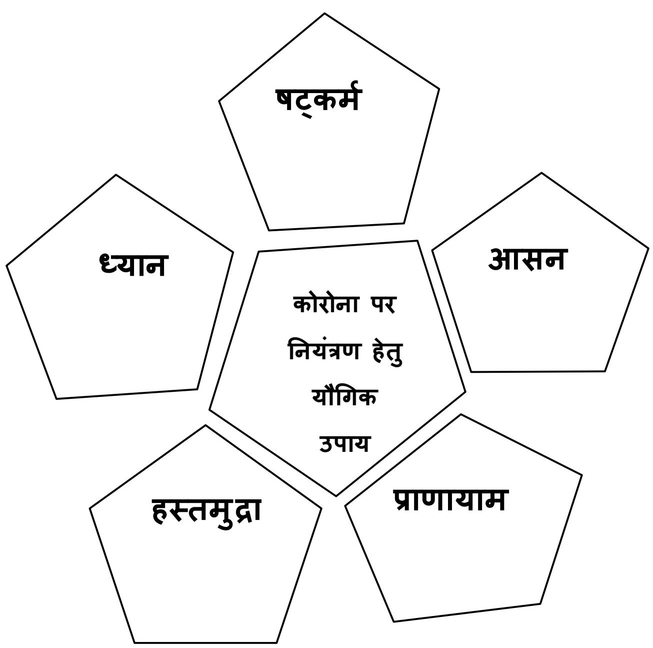

1 . षट्कर्म –

षट्कर्म को योग में शोधन क्रिया कहा जाता है। शरीर को स्वच्छ, सुन्दर एवं स्वस्थ बनाये रखने के लिए षट्कर्म उत्तम साधन है। षट्कर्म के अंतर्गत छह क्रियाएं आती है वे हैं- धौति, वस्ति, नेति, नौलि, त्राटक, कपालभाति कोरोना नियंत्रण में षट्कर्मों के अंतर्गत धौति, नेति तथा कपालभाति क्रियाएं विशेष रूप से प्रभावी है, जो श्वसन तंत्र को प्रभावित करती हैं।

2 . आसन –

आसन शरीर के अंग व अवयवों को प्रभावित करने वाली यौगिक क्रिया है। आसन से शरीर के विभिन्न संस्थान पुष्ट एवं निरोगी होते हैं। आसन से शारीरिक लाभ के अतिरिक्त शरीर के सूक्ष्म तल पर विभिन्न रासायनिक क्रियाएं होती हैं जिससे शरीर की रोग प्रतिरोधक में वृध्दि होती है तथा विभिन्न रोगों से लड़ने की शक्ति प्राप्त होती है कोरोना के नियंत्रण में श्वसन तंत्र को प्रभावित करने वाले आसन विशेष रूप से सहायक हैं, वे हैं - भुजंगासन, हलासन, उष्ट्रासन, सर्वांगासन, मत्स्यासन, सुप्तवज्रासन, शलभासन, मकरासन, योगमुद्रा, तारा आसन, सिंह आसन, सूर्य नमस्कार आदि आसन करते समय दमा तथा श्वास रोगी सांस न रोकें।

3. प्राणायाम –

कोरोना काल में योग के जिस अंग की सबसे अधिक चर्चा है वह है - प्राणायाम प्राणों पर नियंत्रण अथवा प्राणों को नियमन की प्रक्रिया को प्राणायाम कहा जाता है। सामान्यत: प्राणायाम को श्वासों का व्यायाम तक सीमित रखा जाता हैं जो कि गलत अथवा भ्रामक धारणा है जबकि प्राण वह शक्ति है जो विश्व के समस्त सजीव पदार्थों में व्याप्त है। प्राणायाम से समस्त नाड़ियों की शुध्दि होती है जो रोग प्रतिरोधक शक्ति में बेहताशा वृध्दि करती है। प्राणायाम से चूँकि श्वसन तंत्र सबसे अधिक प्रभावित होता है इसीलिए कोरोना के नियंत्रण में प्राणायाम को सबसे अधिक महत्त्व दिया जाता है. कोरोना के नियंत्रण में जो प्राणायाम सहायक हैं, वे हैं - भस्त्रिका, उज्जायी, अनुलोम – विलोम, प्राणाकर्षण प्राणायाम तथा नाड़ी शोधन प्राणायाम उल्लेखनीय हैं।

4. हस्त मुद्रा -

योग का क्षेत्र अत्यंत विस्तारशील एवं गहन है। विगत हजारों वर्षों में योग की परंपरा में नित नवीन अनुसंधान के चलते योग की मुख्य विधाओं के साथ सहायक विधाओं का उदय हुआ। ऐसी ही एक विधा है - हस्त मुद्रा। हस्त मुद्रा पञ्च तत्वों के सिद्धांत पर आधारित है जिसमें हस्त मुद्राओं द्वारा पञ्च तत्वों को संतुलन में लाकर रोग मुक्त जीवन प्राप्त किया जा सकता है। प्राचीन ध्यानस्थ प्रतिमाओं में हमें हस्त मुद्रा देखने को मिलती है, विशेष कर भगवान बुद्ध की प्रतिमाओं में हमें विभिन्न हस्त मुद्राओं के दर्शन होते हैं। योग शास्त्रों में हस्त मुद्राओं की संख्या एक सौ के आस - पास है किन्तु कोरोना नियंत्रण में जो हस्त मुद्राएं सहायक हो सकती हैं वे हैं - प्राण मुद्रा,

लिंग मुद्रा, आकाश मुद्रा, शून्य मुद्रा, शंख मुद्रा, मृत संजीवनी मुद्रा, अस्थमा मुद्रा, श्वसनी मुद्रा, अग्नि मुद्रा, काकी मुद्रा, सूर्य मुद्रा, कुबेर मुद्रा आदि।

5. ध्यान –

वर्तमान में योग का महत्वपूर्ण अंग ध्यान काफी प्रचलित है। ध्यान द्वारा शरीर के साथ-साथ मन पर भी अनेक रूपांतरकारी परिवर्तन होते हैं जिसका प्रतिफल अंतत : सर्वांगीण स्वास्थ्य के रूप में प्राप्त होता है। कोरोना के नियंत्रण में इसका प्राणायाम की तरह सीधा सम्बन्ध तो नहीं किन्तु कोरोना काल के दौरान लॉकडाउन, सामाजिक दूरी के चलते मानव जीवन में एक उदासी, अज्ञात भय तथा अवसाद को दूर करने में इसकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिसे सम्पूर्ण विश्व ने स्वीकारा है। ध्यान के अभ्यास जो मनुष्य को कोरोना से लड़ने में आत्म सम्बल प्रदान करते हैं वे हैं - सोऽहं ध्यान, विपश्यना ध्यान, योग निद्रा, विचार दर्शन ध्यान, विचार विसर्जन ध्यान आदि।

कोरोना पर नियंत्रण हेतु यौगिक उपाय: एक नजर में

षट्कर्म	आसन	प्राणायाम	हस्तमुद्रा	ध्यान
1. धौति 2. नेति 3. कपालभाति	1. भुजंगासन 2.हलासन 3. उष्ट्रासन 4. सर्वांगासन 5. मत्स्यासन 6. सुप्तवज्रासन 7. शलभासन 8. मकरासन 9. योगमुद्रा 10. तारा आसन 11. सिंह आसन 12. सूर्य नमस्कार	1. भस्त्रिका 2. उज्जायी 3. अनुलोम - विलोम 4.प्राणाकर्षण 5. नाड़ी शोधन	1. प्राण मुद्रा 2. लिंग मुद्रा 3. आकाश मुद्रा 4. शून्य मुद्रा 5. शंख मुद्रा 6. मृत संजीवनी मुद्रा 7. अस्थमा मुद्रा 8. श्वसनी मुद्रा 9. अग्नि मुद्रा 10. काकी मुद्रा 11. सूर्य मुद्रा 12. कुबेर मुद्रा	1.सोऽहं ध्यान 2. विपश्यना 3. योग निद्रा 4. विचार दर्शन 5. विचार विसर्जन

निष्कर्ष :-

कोरोना काल में योग द्वारा कोरोना पर नियंत्रण के परिणाम मानव समाज के ऊपर देश, काल, प्रकृति, व्यवसाय के अनुसार भिन्न - भिन्न भले ही हों किन्तु सभी पर परिणाम सकारात्मक ही रहे हैं। योग को जीवन में स्थान देने के पश्चात प्रत्येक व्यक्ति ने स्वयं को पूर्व की अपेक्षा अधिक बेहतर महसूस किया है जो यह सिद्ध करता है कि यौगिक उपाय कोरोना नियंत्रण में श्रेष्ठ परिणाम दे रहे हैं जिस व्यक्ति ने योग को कोरोना से लड़ने में हथियार बनाया उसने एक स्वस्थ , सम्पूर्ण और श्रेष्ठ जीवन की आधार शिला अपने जीवन में स्थापित की। योग द्वारा कोरोना जैसी महामारी ही नहीं अपितु सभी रोगों पर विजय पायी जा सकती है .योग स्वास्थ्य का वह राजमार्ग है जिस पर चलकर हर व्यक्ति स्वास्थ्य के सर्वोच्च शिखर को स्पर्श कर सकता है। योग एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है अत: ऐसे में यह प्रयास करना चाहिए कि उसे सुव्यवस्थित रूप से विधिवत सीखकर किया जाए एवं अधिकाधिक लाभ प्राप्त किया जाए।

***लेखक भारतीय खान ब्यूरो (मुख्यालय) में योग प्रशिक्षक के रूप में अपनीविशेष सेवायें देते हैं .कोरोना नियंत्रण में सहायक यौगिक उपाय हेतु विस्तृत जानकारी हेतु vksaxena@ibm.gov.in पर उनसे संपर्क किया जा सकता है.**

- ❖ देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता स्वयं सिद्ध है - महावीर प्रसाद द्विवेदी
- ❖ हिन्दी विश्व की महानतम भाषा है - राहुल सांकृत्यायन

कर्ण और वर्तमान समय की पारिस्थियों में समानताएं

गौरव शर्मा
उप खनिज अर्थशास्त्री
भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर

महाकाव्य "महाभारत" के बारे में तो हम सब जानते हैं। इस महाकाव्य का एक महत्वपूर्ण चरित्र था कर्ण। कर्ण एक बहुत ही पराक्रमी, दयावान और प्रतापी योद्धा था। माना जाता है कि उसका जन्म एक विशेष कार्य की पूर्ति के लिए हुआ था। वह कुंतीपुत्र था अथवा भगवान सूर्य का अंश था, वही कुंती जो की पाण्डवों की भी माता थी, जो की अपनी माता की भूल का परिणाम था। चूँकि वह अपनी माता की भूल का परिणाम था इसलिए सर्वप्रथम उसकी माँ ने ही उसका तिरस्कार कर दिया था। कहते हैं क्योंकि कर्ण सूर्यपुत्र था इसलिए वह किसी देवता से शक्ति व समर्थ में कम नहीं था। उसका जन्म सोने के कवच और कुण्डलों के साथ हुआ था और वह अजर और अमर था। जब तक ये कुंडल और कवच उसके साथ थे, उसे कोई भी शक्ति पराजित नहीं कर सकती थी।

कर्ण के पालक माता व पिता राधा और अधिरथ थे, जो की एक तुच्छ वर्ण से थे। इस कारण कर्ण को हमेशा नीची नज़रों से देखा जाने लगा पर वह इन सब से कहाँ घबराने वाला था। कर्ण ने परशुराम जैसे महान योद्धा से शिक्षा प्राप्त करने की ठानी और प्राप्त भी की, लेकिन उसने परशुराम को अपना सत्य नहीं बताया। जब उन्हें इस बात का पता चला तो वह बड़े क्रोधित हुए और कर्ण को श्राप दिया की जब उसे इन विद्याओं की सबसे ज्यादा आवश्यकता होगी, तो वह उन्हें भूल जायेगा। निराश होकर कर्ण ने गुरु को प्रणाम किया और वहाँ से चला गया। इस बीच उससे अनजाने में एक और अपराध हो गया कि उसने एक निहत्ती गाय की हत्या कर दी। उसे लगा की वह किसी जंगली जानवर को मार रहा है, जोकि झाड़ियों के पीछे से उस पर घात लगाए बैठा है और प्रहार करने को तैयार है। इस वजह से उसे एक और श्राप मिला कि उसकी मृत्यु भी इसी प्रकार से होगी जब वह निहत्ता होगा।

जैसा कि हम सब जानते हैं कि आगे जाकर दुर्योधन कर्ण का एकमात्र विशेष मित्र बना और उसने अपनी मित्रता के फ़र्ज़ को आजन्म निभाया। एक बार द्वन्द युद्ध में उसको अर्जुन का सामना करने का मौका मिला मगर उसे यह कह कर रोक दिया गया की वह एक शूद्र पुत्र है और क्षत्रिय के साथ नहीं लड़ सकता। उस वक्त दुर्योधन ने उसका साथ दिया व उसको अंग राज्य का राजा घोषित कर दिया व उसका मान भी बढ़ाया। दुर्योधन ने तो किंचित अपना स्वार्थ पूर्ण करने के लिए ऐसा किया था मगर कर्ण बहुत ही निष्ठावान था तथा उसने यह बात कभी नहीं भुलाई की बुरे वक़्त में किस तरह दुर्योधन ने ही उसका साथ दिया था।

अब क्योंकि "विनाशकाले विपरीत बुद्धि" और यही हुआ। परक्रमी, निष्ठावान, दयावान और प्रतापी होते हुए भी, अनजाने में ही उसने अधर्म का साथ दिया और वह बुराईयों के बीच घिरता चला गया। संगत का असर ऐसा हुआ कि न चाहते हुए भी उसने हर गलत बात जानते हुए भी दुर्योधन का साथ दिया। यहाँ तक की जब दुर्योधन द्वारा द्रौपदी का चीरहरण हो रहा था। उस वक़्त कर्ण ही था जिसने दुशाशन को उसके वस्त्र निकालने के लिए उकसाया, परन्तु बाद में उसे भी इस बात की आत्मग्लानि हुई की भरी सभा में एक स्त्री के साथ जो उसने किया और साथ दिया बिल्कुल सही नहीं किया।

कुरुक्षेत्र की लड़ाई के वक़्त भी उसने दुर्योधन का पूरा साथ दिया और पांडवों के खिलाफ डटा रहा। सूर्यपुत्र होने की वजह से वह अमर था इसलिए इन्द्र ने भेष बदलकर छल से उसका सुरक्षा कवच और कुण्डल उससे दान में ले लिया। जब माता कुन्ती को उसके पहले पुत्र के बारे में पता चला तब वह उस से मिलने गयी और उससे पांडवों के साथ देने की भीख मांगी और कहा की ये तुम्हारे छोटे भाई हैं, तुम अपने भाइयों को कैसे मार सकते हो।

उस समय तक कर्ण को अपनी गलतियों का एहसास हो चुका था, परन्तु वह अपने प्रिये मित्र के खिलाफ नहीं जा सकता था। इस समय उसके पास उसका कवच व कुण्डल भी नहीं थे, उसने अपनी माता से कहा आपके पाँच पुत्र ही जीवित रह सकते हैं, या मैं या अर्जुन। कर्ण जानता था की श्री कृष्ण सारथी बनकर अर्जुन का साथ दे रहे हैं, इसलिए परोक्ष रूप से उसने अपनी माँ को यह बता दिया था कि पांडव पुत्रों को कुछ नहीं होगा। अंत समय में कर्ण को मिले श्राप ही उसकी मृत्युं का कारण बने जिस की वजह से वह रणभूमि में अर्जुन के हाथों वीरगति को प्राप्त हुआ। अगर अवलोकन और मंथन किया जाये तो ये लगता है की कर्ण बिल्कुल भी गलत व बुरा व्यक्ति नहीं था। परन्तु उसकी परिस्थितियां अनुकूल नहीं थी। उसने जान-बूझकर कभी कोई

अपराध नहीं किया था, लेकिन इस बात से भी इंकार नहीं किया जा सकता उस से अपराध जरूर हुए थे। वह गलत संगत और गलत प्रभाव मैं विलिप्त हो गया था जिसके कारण उसकी सोचने वह समझने की क्षमता छीन हो गयी थी। यह उसके बिना सोचे व समझे कार्यों का परिणाम ही था कि सूर्य पुत्र होते हुए भी, महापुरषों जैसा तेज, प्रतापी और ज्ञानी प्रवक्ता होते हुए भी वह अपनी तीक्ष्ण बुद्धि से काम नहीं ले पा रहा था।

कहते हैं की "अब पछताये होत क्या जब चिड़ियां चुग गयी खेत", एक बार गलती कर उस पर विचार करने पर उसे समझ जरूर आती थी परन्तु तब तक बहुत देर हो जाती थी। बिना विचार करे गलत लोगों का साथ देने और गलत कार्य करने से उसे अनेकों तरह के कष्ट सहन करने पड़े। उसका कुंती पुत्र होकर भी कुंती पुत्र न कहलाना, वस्तुत: इसमें उसकी गलती नहीं थी, पर उसके ही किसी पूर्वजन्म के परिणामस्वरूप था। ये जीवन भी उसे एक विशेष कार्य के लिए ही मिला था जिसको उसने पूरी निष्ठा से पूरा किया परन्तु साथ ही इस जीवन के अंत से पहले वह बहुत कुछ सीख कर भी गया। इससे ये ज्ञात होता है कि जीवन में सब कुछ हमारे हाथ में नहीं होता। परन्तु हम अपने कर्मों से उन्हें बदल सकते हैं व उनसे सीख ले सकते हैं।

कर्ण की कहानी आज के युग में हर उस व्यक्ति से मिलती-जुलती है जो धर्म और अधर्म के बीच का फर्क नहीं कर पाते। जो सब जानते हुए भी सही की जगह गलत का साथ देने पर मजबूर हो जाते हैं क्योंकि उनकी निष्ठा उनके कर्मों के बीच आ जाती है। हम सभी अपनी रोज़मर्रा की जिंदगी में किसी न किसी ऐसी परिस्थिति से गुजरते हैं जहाँ हमें सही और गलत के बीच में चुनाव करना होता है। लेकिन हम ऐसा नहीं कर पाते क्योंकि या तो हम अपने रिश्ते, नौकरी, आत्म-सम्मान या गरिमा को बचाने की उधेड़-बुन में लगे रहते हैं। हम यह भी भूल जाते हैं की सत्य ही धर्म है।ये जानने के बाद भी हम परिस्थितिवश अधर्म का ही साथ देते हैं, झूठ बोलते हैं, गलत कार्य करते हैं। ये सब शायद हमें क्षणिक सुख तो प्रदान करते हैं मगर दीर्धकाल में हमारे यही कृत्ये हमारे दुखों का कारण बनते हैं। कर्ण की कहानी से हम सभी को यह सीख लेनी चाहिए कि चाहे परिस्थिति हमारे अनुकूल हो या प्रतिकूल, हमें हमेशा सत्य साथ देना चाहिए, अपनी गलतियों से सीख लेनी चाहिए, अच्छे कर्म करने चाहिए और एक अच्छा इंसान बनने की तरफ प्रयत्नरत रहना चाहिए।

इस मन की चंचलता

अक्षत यागनिक
कनिष्ठ सांख्यिकी अधिकारी
भारतीय खान ब्यूरो, उदयपुर

आपमें से कई लोग अपने मन को बार-बार काबू में करने की कोशिश करते हैं। जबकि ये पूरी तरह से गलत है। यह जो मन है यह काबू में आने के लिए बना ही नहीं है। महाभारत में अर्जुन के पात्र से आप सभी परिचित हैं। अर्जुन का मन तो कठोर परिश्रम करके संयमित हो चुका था। उसे तो अपने लक्ष्य के अतिरिक्त और कुछ दिखाई ही नहीं देता था। परंतु फिर भी युद्ध के समय उसके हाथ से उसका धनुष छूटने लगा था और उसका मन अकारण ही भटकने लगा। तब कहीं जब श्री कृष्ण ने गीता से अर्जुन को अवगत कराया, तब उसके मन की भटकन समाप्त हुई। इसलिए जब अर्जुन भी अपने मन को स्थिर नहीं रख पाया तो हमारी बात तो रहने ही दीजिए। तो अब आप सोचेंगे और पूछेंगे की यदि हम मन को काबू ही नहीं कर सकते तो क्या है जो हम कर सकते हैं? तो सुनिए। आप अपने मन को सही दिशा मे सोचना सिखा सकते हैं। हमारा मन भटकता ही इसलिए है कि हमने उसे केवल एक दिशा मे सोचना सिखाया है। हमें बचपन से जो भी सिखाया जाता है और जितना भी ज्ञान हमने अपने अनुभवों से अर्जित किया है, उसके अतिरिक्त हमें कोई नई बात समझने मे समय लगता है और हमारा मन प्रश्न करने लगता है। पर सोचिए यदि हम अपने मन को केवल यह समझा सकें कि इस संसार मे जितना हमें मालुम है उससे भी कहीं अधिक ज्ञान का भंडार है तो इस मन की भटकन समाप्त हो जाएगी। क्योंकि जो ज्ञान का भंडार है वो कभी न खत्म होने वाला एक विशाल सागर है। जब हम अपने अहम को यह समझा देते हैं कि हमारा ज्ञान और हमारी समझ सीमित है, तब वह इस सत्य को समझ लेगा और आपका मन भटकना छोड़ देगा। हाँ, परंतु यह अहम ही हमारा शत्रु है जिससे हमारा मन बार-बार भटकता है। कोई भी भटकेगा तभी जब उसे सही मार्ग नहीं मिलेगा और जीवन की इस भूल भुलैया में मन का भटकना स्वाभाविक बात है। इसलिए अपने मन को शांत रखना सीखिये। आप योग और ध्यान का सहारा भी ले सकते हैं जिनसे की आपको अपने प्रयास मे सफलता मिले।

<u>प्रेरणा</u>

पुखराज नेणिवाल
क्षेत्रीय खान नियंत्रक
भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर

कितनी सूनी व अभावयुक्त लगती है जिंदगी... प्रेरणा के अभाव में! इंसान का सारा जीवन नीरसता से भर जाता है। नीरसता रूपी गठरी का बोझ अपने कंधों पर उठाते - उठाते इंसान थक जाता है। उसको अपनी ही ज़िंदगी बोझ लगने लगती है और उस बोझिल जिंदगी का बोझ ढ़ोने में वह स्वयं को असमर्थ पाता है। जिंदगी की लंबी डगर में इंसान का हर कदम भारी व निराशायुक्त पड़ता है और हर एक कदम बढ़ाते समय जिंदगी के सफर के अनगिनत डगों को गिनने की नाकाम कोशिश करता है और जब गिन नहीं पाता, तब अपने विश्राम के लिए कोई एक जगह ढूंढकर बैठ जाता है। एक ऐसी जगह जिसमें न कोई गति है, न परिवर्तन है, न सत्य है, न शिव है और न ही कोई सुंदरता है। यदि है, तो सिर्फ जड़ता और स्थिरता, जिसका इस गतिमान संसार में कोई महत्व नहीं है।

इसके विरोधाभास में एक अनोखा मोड़ आता है, जब इंसान को अपनी बोझिल जिंदगी में प्रेरणा की लहर अनायास दिखाई पड़ती है, जो कई बार किनारे तक आकर वापस चली जाती है। उसी को पकड़ने की उम्मीद में इंसान के हृदय में आशा का संचार होता है। इंसान अपनी सागर रूपी ज़िंदगी के छोर पर टकटकी बांधे इस आशा में बैठा रहता है कि अबकी बार प्रेरणा की लहर आएगी तो मैं उसको अवश्य पकड़ लूँगा। ऐसा सोचकर वह मन ही मन उत्साहित होता रहता है और तब इंसानी जीवन सरसता से पूर्ण हो जाता है, जब उसके जीवन में कोई प्रेरणा बनकर आ जाता है।

यूं तो इंसान के आदर्शों एवं प्रेरणाओं का कोई मोल - तौल नहीं है। न जाने... कौन, कब, किसकी प्रेरणा बनकर उसके जीवन को उत्साह, उमंग, परिवर्तन और उल्लास से परिपूर्ण कर दे और किसी की ठहरी हुई ज़िंदगी अनायास ही एक खूबसूरत मोड़ ले ले। वैसे तो किसी की प्रेरणा जड़ - चेतन, मूर्त - अमूर्त, पेड़ - पौधा कोई भी हो सकता है परंतु यदि जीवन की लंबी डगर में कोई सच्चा हमराह बनकर साथ हो ले, तो जिंदगी के असीम आकाश पर उमंगों के बादल छा जाते

हैं जो हर पल, हर क्षण मुस्कुराहटों की बरसात करते रहते हैं और एक व्यक्ति का जीवन सफल बनाते हुए उसे सत्यं, शिवं, सुंदरम से परिपूर्ण कर देते हैं, यही जीवन की परिभाषा है।

पूरी धरा भी साथ दे तो और बात है,
पर तू ज़रा भी साथ दे तो और बात है!
चलने को तो एक पाँव से भी चल रहे हैं लोग,
पर दूसरा भी साथ दे तो और बात है!

…………….

- ❖ अंग्रेजी सीखकर जिन्होंने विशिष्टता प्राप्त की है, सर्वसाधारण के साथ उनके मत का मेल नहीं होता। हमारे देश में सबसे बढ़कर भेद वही है - रवीन्द्रनाथ ठाकुर

- ❖ मेरा आग्रहपूर्वक कथन है कि अपनी सारी मानसिक शक्ति हिन्दी के अध्ययन में लगावें - विनोबा भावे

- ❖ हिन्दी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है - स्वामी दयानंद

एच. आई. वी., एड्स और पोशाहार

अभिनय कुमार शर्मा
सहायक संपादक
भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर

एच. आई. वी., का मतलब है ह्यूमन इम्यूनोडेफिसिएंसी वायरस जो आगे चलकर एड्स पैदा कर देता है। यह वायरस निरोधक प्रणाली (Immune System) की कोशिकाओं पर असर डालता है। धीरे-धीरे उनकी मौजूदगी घटती जाती है, और इसके शिकार व्यक्ति की निरोधक प्रणाली पूरी तरह से प्रभावित हो जाती है। उस व्यक्ति को बुखार, फ्लू, डायरिया जैसी बीमारियों पर काबू पाने के लिए संघर्ष करना पड़ता है, जबकि किसी सामान्य व्यक्ति की निरोधक प्रणाली इनसे आसानी से निपट लेती है। एच.आई.वी. को एड्स में विकसित होने के लिए 5 से 15 वर्ष लगते हैं।

जब एच. आई. वी. शरीर में प्रवेश करता है, तो वह टी-कोशिका नामक सफेद रक्त कोशिकाओं पर हमला बोल देता है। ये कोशिकाएं संदूषणों से शरीर की रक्षा करती है। वायरस जब किसी एक टी- कोशिका पर काबू पा लेता है, तो वह कोशिका मर जाती है और वायरस उसी समय अपने प्रतिरूप करोड़ों-अरबों की संख्या में रक्तधारा के अन्दर छोड़ देता है। ये नए वायरस अन्य टी-कोशिकाओं से संपर्क साधते हैं। टी-कोशिकाओं का स्थान लेने के लिए पर्याप्त संख्या में टी-कोशिकाएं उत्पन्न नहीं कर सकता।

संदूषित यानी प्रभावित व्यक्ति जब सैक्स के जरिए अन्य सामान्य व्यक्ति से संपर्क करता है, तो सामान्य व्यक्ति में भी यह वायरस प्रवेश कर जाता है। एच. आई. वी. संदूषित रक्त चढ़ाने से भी यह रोग फैलता है। एक संदूषित मां के गर्भ में मौजूद शिशु को भी यह वायरस अपना शिकार बनाता है। इसके अलावा कई व्यक्तियों के लिए इस्तेमाल किए जा चुके सर्जरी के औजारों या इंजेक्शन की सुइयों को ही पुनः इस्तेमाल करने से या संदूषित मां का दूध पीने से भी यह वायरस फैलता है। संदूषित अंगारोपण भी एक कारण है। इतरलिंगी सैक्स (Heterosexuality) लगभग 90 प्रतिशत मामलों के लिए जिम्मेदार होता है।

शरीर के जिन तरल पदार्थों के जरिए एच. आई. वी. फैलता है, वे हैं- रक्त, वीर्यत्र योनि का रिसाव और माँ का दूध। अगर मुंह या मसूढ़ों में छाले, खराश आदि हैं या जननेंन्द्रियों में खुले जख्म वगैरह हैं, तो मौखिक सैक्स से भी संक्रमण हो सकता है। एच.आई.वी. गर्भवती महिला से उसके शिशु को यह रोग मिल सकता है। ऐसे सभी शिशुओं के खून में एच. आई. वी. प्रतिरक्षी (Antibodies) होते हैं, लेकिन अधिकांश में यह वायरस नहीं होता और वे 18 महीनों की उम्र तक पहुंचते-पहुंचते इन प्रतिरक्षियों को खो देते हैं। एच. आई. वी. पाजिटिव माताओं को चाहिए कि शिशु को अपना दूध न देकर बोतल का दूध पिलाएं।

एच. आई. वी. आंसू या थूक के जरिए संक्रमित नहीं होता। यह कफ-खांसी, एक ही ग्लास या कप के इस्तेमाल या हवा और पानी के जरिए भी नहीं फैलता। यह वायरस आसानी से संक्रमित नहीं होता क्योंकि अपने मेजबान के जिस्म से बाहर आते ही यह फौरन मर जाता है। संक्रमित व्यक्ति के साथ हर दिन उठने-बैठने से भी यह नहीं फैलता। स्पर्श, हाथ मिलाने, छींक आदि से भी इसके संक्रमण का जोखिम नहीं है।

संदूषण के बाद शुरूवाती कुछ दिनों में फ्लू, बुखार, जिस्म पर ददोरे-चकत्ते (Rashes), डायरिया आदि लक्षण नजर आते हैं, मगर इन्हें मामूली संदूषण समझकर अनदेखा कर दिया जाता है। कुछ समय बाद शरीर इस वायरस के प्रतिरोध में प्रतिरक्षियां (Antibodies) उत्पन्न करना शुरू कर देता है। जिन लोगों के खून में ये प्रतिरक्षी पाए जाते हैं, उन्हें एच. आई. वी. पॉजिटिव माना जाता है। एच. आई. वी. की प्रगति सीडी-4 कोशिकाओं के स्तर से नापी जाती है। ये कोशिकाएं रक्त में एक प्रकार की टी-कोशिकाएं होती हैं। सामान्यतया इनकी संख्या प्रति माइक्रोलीटर रक्त में 500 से 1500 सीडी-4 कोशिकाएं होती हैं। जब यह सीडी-4 संख्या 200 से नीचे गिर जाती है और साथ में वजन की गिरावट, बुखार, डायरिया (दस्त), निमोनिया, त्वचा कैंसर आदि होने लगते हैं, तो एड्स से ग्रस्त हो जाता है। एड्स के ज्यादातर मरीजों का अन्त इन संदूषणों के कारण होता है न कि वायरस की वजह से।

पोषक पूरक एच. आई. वी. / एड्स के प्रबन्धन में, रोगी की निरोधक प्रणाली को प्रोत्साहित करके, खासी भूमिका निभा सकते हैं। माना जाता है कि एलोवेरा और लाइसियम + लिकोरिस पूरकों में सफेद रक्त कोशिकाओं के उत्पादन को प्रोत्साहित करने की योग्यता है। हम जानते हैं कि एलोवेरा पौष्टिक है, आत्मसात्करण को सुधारता है और इसमें कोशिकाओं को नवजीवन प्रदान करने की क्षमता है। शोध से पता चलता है कि अनार, मैंगोस्टीन, स्ट्रोवेरी, ब्लूबेरी, ब्लैकबेरी जैसे कुछ

फलों में एच.आई.वी. वायरस की वृद्धि और उसे कोशिकाओं के साथ जुड़ने से रोकने की क्षमता है। इनकी मदद से दस्त और अन्य बीमारियों से लड़ा जा सकता है। इसके अलावा इन फलों से ऊर्जा भी मिलती है। एंटीऑक्सीडेंट होने के कारण ये स्वतंत्र कोशिकाओं (free Radicals) द्वारा की गई क्षति को काफी हद तक कम कर सकते है। इनसे निरोधक प्रणाली (Immune System) को प्रोत्साहन मिलता है, जिसके फलस्वरूप रोगी के सामान्य स्वास्थ्य में सुधार आ सकता है। कंडोम का इस्तेमाल और साथ में दोनों पार्टनरों की जननेंद्रियों में एलो जैली लगा लेने से इसके संक्रमण के मौके कम किये जा सकते हैं।

इसके रोगियों अपने आवश्यक पोषाहार के लिए पूरकों का इस्तेमाल करना लाभकारी होगा। बी पालेन और न्यूट्रीशिनल शेक जैसे ऊर्जाकारी पूरक लिए जा सकते है, क्योंकि यूं भी संदूषित व्यक्ति कई बीमारियों और हताशा के कारण ठीक से खाना नहीं खाते।

यह तथ्य ध्यान में रखना होगा कि एच. आई. वी. या एड्स के इलाज के लिए अब तक कोई दवा या टीका (वैक्सीन) नहीं ढूंढ़ा जा सका है। कुछ एच. आई. वी. वायरस एंटी-एचआईवी दवाओं के बारे में प्रतिरोध पैदा कर लेते हैं। इससे रोगी की दशा में कई जटिलताएं पैदा हो सकती हैं। अध्ययनों से पता लगा है कि अगर वायरस की तीव्र वृद्धि को धीमा किया जा सके तो उसके एड्स में तब्दील होने के समय को बढ़ाया जा सकता है। पोषक पूरक जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने और रोगी का जीवनकाल बढ़ाने में अहम भूमिका अदा कर सकते हैं। इस हत्यारी बीमारी का इलाज ढूंढने के लिए आजकल बड़ा व्यापक शोधकार्य चल रहा है। इसलिए रोगी अगर थोड़े लम्बे अरसे तक जीवित रह सकें और इस शोध के सकारात्मक नतीजे आएं, तो उन्हें उसका लाभ मिल सकेगा।

- “भारतवर्ष में सभी विद्याएँ सम्मिलित परिवार के समन पारस्परिक सद्भाव लेकर रहती आई हैं” - राविन्द्रनाथ ठाकुर

मधुमेह

ललित कुमार नागदा
भंडारपाल (तकनीकी)
भारतीय खान ब्यूरो, उदयपुर

अनुवांशिकता :- मधुमेह की सम्भावना उन लोगों को भविष्य मे अधिक होगी जिनके माता-पिता में से किसी में भी एक को भी यह रोग होगा। उसका कारण है कि रक्त में जब बिना इन्सुलिन के ग्लूकोज बढ़ता जाता है उससे प्रजनन शक्ति की कमी हो जाती है। पुरुषों में वीर्य कमजोर हो जाता है। क्योंकि वीर्य का निर्माण रक्त से ही होना होता है।

इसी कारण स्त्रियों के रक्त में ग्जूकोज बढ़ने से उनके रज निर्माण में कमी या कमजोरी उत्पन्न हो जाती है। ऐसे वीर्य और रज मिलकर जिस बच्चे का निर्माण करते हैं उसे जन्म से ही यह रोग मिल जाता है। जो भविष्य में कभी भी अपने लक्षण दिखा सकता है। परन्तु घबराइए नहीं, आपका अपना संकल्प, घोर तपस्या और ईश्वर का आशीर्वाद आपके इस आनुवांशिक कारण को अवश्य ही समाप्त कर सकता है।

आहार दोष :- हमारे शरीर में कार्बोहाइडेªट, प्रोटीन और वसा के साथ-साथ अच्छी खासी मात्रा में विटामिन, मिनरल और जल शामिल रहना चाहिए। लेकिन आजकल की जीवन शैली में हम अच्छे से अच्छे पौष्टिक पदार्थों को भी पका-पका कर उनके विटामिन, मिनरल तथा अन्य तत्वों को पूरा नष्ट सा ही कर देते हैं। हमारा भोजन पूरी तरह एसिडिक अर्थात् एसिड उत्पन्न करने वाला बन जाता है। ऐसा भोजन रक्त में एसिड की मात्रा को बढ़ाता है। रक्त में एसिड बढ़ना विभिन्न प्रकार की बीमारियों को जन्म देता है और एसिड के जमाव विभिन्न अंगों को खराब करते हैं। पनीर, टमाटर, हरी सब्जियाँ, दालें आदि पौष्टिक तत्वों से भरपूर रहती हैं परन्तु पका-पका कर और दो-दो, तीन-तीन दिन फ्रिज में रखकर बार-बार गर्म करके खाने से इनकी पौष्टिकता पूरी नष्ट हो जाती है और हम पूरी तरह मृत भोजन करते हैं जो हमारे शरीर की पाचन क्रिया पर बोझ बनकर हमारा मोटापा बढ़ाने, गैस, एसिडिटी पैदा करने, कभी कब्ज और कभी दस्त के अलावा हमें कोई लाभ नहीं देता। हम ऐसे भोजन पर घर में और विवाह शादियों में सारे समाज का सत्यानाश करने

के लिए लाखों रुपये खर्च करते हैं। केवल झूठी शान बढ़ाने के अतिरिक्त हम न अपना भला करते हैं न सारे समाज का।

इस आधुनिक युग में एक अत्यन्त हानिकारक पदार्थ ''दानेदार चीनी'' के रूप में सामान्य जीवन का दैनिक अंग बन गया है। इस चीनी की निर्माण प्रक्रिया को समझ लेना चाहिए। परमपिता परमात्मा के भण्डार से निकली कोई भी वस्तु व्यक्ति के लिए हानिकारक नहीं होती। प्रकृति ने गन्ना पैदा किया। आपको पता होना चाहिए कि गन्ना स्वाद में मीठा होने के बावजूद भी लौहतत्व का भण्डार है। शुगर रूपी बीमारी में शरीर के अन्दर ग्लूकोज स्तर को कम करने में आयरन की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। गन्ने का रस निकला तो भी आयरन में कमी नहीं आती। इससे गुड़ का निर्माण होता है तो भी आयरन तत्व कम नहीं होता है। परन्तु व्यापारीकरण की तकनीकें सुन्दरता पैदा करने के लिए उसमें कुछ कृत्रिम कैमिकल्स मिला देते हैं जिससे उसका रंग सुन्दर पीले रंग का हो जाए और काले रंग की मैल साफ हो जाए। इसे मसालों वाला गुड़ कहा जाता है जो हानिकारक बन जाता है। परन्तु आगे देखिए, व्यापारिक प्रवृति किस तरह व्यक्ति का नाश करने के लिए तैयार हो जाती है। ब्रिटिश राज के दौरान भारत में चीनी बनाने की मिलें स्थापित की गईं। चीनी बनाने के लिए गन्ने के रस को इतनी जबरदस्त प्रक्रिया से गुजारा जाता है कि सर्वप्रथम उसके अन्दर शामिल सभी लाभदायक धातुएँ जैसे आयरन आदि पूरी तरह से नष्ट हो जाते हैं। फिर उसके अन्दर सल्फर, जैसे हानिकारक कैमिकल्स तथा बोनचारकोल मिलाए जाते हैं। ये दोनों तत्व दो कार्य करते हैं -

1. रस को दानों के रूप में परिवर्तित करना।
2. रस के अन्दर शामिल सभी गैर-सफेद कणों को बाहर करके चीनी के दानों को पूरे सफेद रंग रूप में तैयार करना। बस इस सफेदी और एक रूप दानों में प्रस्तुत करके अपने उत्पादन को देखने में सुन्दर बनाना ही चीनी उत्पादकों का कार्य है। परन्तु अंग्रेज कौम इतने दूषित मन की कौम थी कि इनके प्रत्येक कार्य पर हमारे पूर्वज देशभक्त ऋषि मुनि संदेह की दृष्टि ही रखते थे चाहे वह कार्य देखने में कितना ही कल्याणकारी लगे। चीनी के रूप में अब एक ऐसा पदार्थ तैयार हो गया जो उन व्यापारी अंग्रेजों की तिजोरियाँ भरने के लिए पर्याप्त था। इनका व्यापारिक लक्ष्य पूरा हो गया। लेकिन इन मूर्ख अंग्रेजों, उनके वैज्ञानिकों और व्यापारियों को इस अलौकिक सिद्धान्त का अहसास तक भी नहीं था कि जो दूसरों के लिए गड्ढा खोदता है वही गड्ढा उसकी क्रब भी बन सकता है। आज यही हो रहा है। हमारे मन की वस्तु स्थिति यह है कि शुगर जैसी भयंकर बीमारी

से ग्रस्त केवल भारतवासियों की ही चिन्ता हमें नहीं सता रही। हमारा मन इस बात से दुःखी रहता है कि सारे संसार के लोग इन मूर्ख सफेद चमडी वालों के कुकृत्यों से परेशान हो रहे है।सबसे अधिक शुगर बीमारों की प्रतिशत संख्या तो पश्चिमी देशों जैसे इंग्लैण्ड, अमेरिका में ही है। इसीलिए विश्व स्वास्थ्य संगठन (World Health Organization) ने यह अनुमान जारी किया है कि वर्ष 2025 तक विश्व की लगभग 80 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या डायबिटीज रोग से ग्रस्त हो जायेगी। अब निर्णय आपको करना है कि आप वर्ष 2025 में 80 प्रतिशत लोगों में शामिल रहने के लिए तैयार हैं या 20 प्रतिशत स्वस्थ लोगों में रहना चाहते हैं। चीनी न खुद खाओ न किसी अन्य को खाने दो। यही सबसे बड़ा परोपकार होगा। जरा, चीनी में मिले उस बोनचारकोल कैमिकल की वास्तविकता भी समझ लो कि ये क्या बला है। बोन का अर्थ है हड्डी। हड्डियों के चूरे को ही बोन चारकोल कहा जाता है। अब आप स्वयं अनुमान लगाइए कि आप कितने शाकाहारी हैं जो मांस तो नहीं खाते परन्तु अज्ञानता वश हड्डियों के चूरे से साफ हुई सफेदसफेद चीनी से बनी मिठाइयाँ, बिस्कुट, चॉकलेट, कैम्पाकोला आदि कैसे एक दूसरे को बधाईयाँ देते-देते चट कर जाते हैं। क्या लाभ होगा आपकी बधाईयों का, कितनी चिर स्थाई होगी आपकी खुशियाँ जिनमें मांसाहार का आधार होगा और क्या हालत होगी आपके शरीरों की जब ग्लूकोज स्तर शरीर में बढ़ने से किडनियाँ खराब होगी, ब्लड प्रेशर बढ़ेगा, हड्डियों में दर्द होगा, पाँवों से चला नहीं जायेगा, आँखें अंधी हो जायेंगी? क्या तब तक माँसाहारी चीनी मिठाईयों से बधाइयाँ चलती ही रहेंगी?आज के आधुनिक युग का यही एक यक्ष प्रश्न है। आधुनिक युग में शराब का बढ़ता प्रचलन मधुमेह के साथसाथ कई अन्य रोगों का भी कारण बन जाता है। शराब एक ऐसे तरल पदार्थ का नाम है जो इथेनॉल नामक रसायन से बनती है। यह कार्बनिक तरल होता है। सेवन के बाद यह तरल पदार्थ सीधा और तुरन्त रक्त में अवशोषित हो जाता है।

सर्वप्रथम इसका प्रभाव सेवन के एक मिनट बाद ही मस्तिष्क में पहुँच जाता है मस्तिष्क से यह प्रभाव तंत्रिका तंत्र में संचारित होता है। तंत्रिका तंत्र के असंतुलन से व्यक्ति का व्यवहार भी असंतुलित और हिंसक होने की सम्भावनाएँ अधिक हो जाती हैं। शराबयुक्त रक्त जब लिवर में पहुँचता है तो लिवर का कार्य भी भयंकर रूप से प्रभावित हो जाता है। लिवर का काम है भोजन के रस में शामिल विषैले तत्त्वों के प्रभाव को समाप्त करना। भोजन के विषैले तत्त्व भी रक्त के माध्यम से ही लिवर में पहुँचते हैं। इन विषैले तत्त्वों में पोषक तत्व भी अधिक मात्रा में होते हैं जबकि शराब के इथेनॉल रसायन में पोषक तत्व होते ही नहीं। शराब के सेवन से लिवर के सेल पहले शराब के विषैले तत्त्वों को नष्ट करने लग जाते हैं। इस कार्य में सामान्य से अधिक समय

भी लगता है। इस प्रकार लिवर का कार्यभार बढ़ जाता है। लिवर को भोजन के विषैले तत्त्वों को नष्ट करने का समय ही नहीं मिलता। इससे लिवर में ये विषैले तत्त्व जमा होने से कुछ दिनों के बाद लिवर में मोटापा आ जाता है। लीवर के सेल अधिक कार्य करते-करते थककर स्वयं नष्ट हो जाते हैं। विषैले तत्त्वों से युक्त रक्त सारे शरीर में ऐसे ही घूमता रहता है। इससे शरीर के किसी भी अंग के रोगग्रस्त होने की सम्भावना बनी रहती है। इसी प्रकार तम्बाकू तथा उससे बने समस्त उत्पादों के सेवन से रक्त में विषैले तत्त्वों की मात्रा तथा उनका प्रभाव बढ़ जाता है। चाय के सेवन से भी विषैली रासायनिक क्रिया के अतिरिक्त पाचन क्रिया भी बाधित होती है। इस प्रकार के विषैले रक्त में ग्लूकोज का बढ़ा हुआ स्तर और अधिक खतरनाक हो जाता है।

- हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में सभासीन हो सकती है - मैथिलीशरण गुप्त

- हमारी नागरी दुनिया की सबसे अधिक वैज्ञानिक लिपि है - राहुल सांकृत्यायन

भारत - भारती

दिलीप पंवार
आशुलिपिक
भारतीय खान ब्यूरो, उदयपुर

भारत भारतीय अर्थात् भारत के जन जन की वाणी। भारत की भाषा जो पूरे देश में बोली और समझी जाती है। किसी सम्पूर्ण राष्ट्र की एक भाषा उसकी पहचान एवं उसके दृढ़ संगठन की आधार होती है। भारत जैसे विविधता पूर्ण देश में अनेक भाषाओं का होना स्वाभाविक है। यह हमारी विविधता में एकतामयी संस्कृति की विशेषता है। प्राचीन भारत में एक प्रमुख भाषा संस्कृत थी। कश्मीर से दक्षिण भारत तक तथा पश्चिम के मरू प्रदेश से पूर्व में बंगाल तक संस्कृत भाषा का प्रचलन था। सम्पूर्ण भारत में इस भाषा, व्याकरण, साहित्य दर्शन, काव्य-नाटक आदि की रचनाओं ने देश का गौरव बढ़ाया है। ज्ञान विज्ञान के ये ग्रन्थ आज भी विश्व वाड्.मय में शिरोमणि हैं।

वर्तमान समय में हिन्दी हमारे राष्ट्र की प्रमुख भाषा है। इसे ही मातृभाषा का गौरव प्राप्त होना चाहिए। किन्तु जिस गौरव में प्राचीन भारत में संस्कृत भाषा की प्रतिष्ठा थी, वह गौरव आज सर्वसम्मति से हिन्दी को प्राप्त नहीं है। बंगाल में बंगला भाषा सर्वोपरि है तो दक्षिण में दक्षिण की भाषायें। अन्यत्र भी कुछ इसी प्रकार की स्थिति है। इससे भी विकट स्थिति यह है कि अंग्रेजी सभ्य समाज की पहचान बनती जा रही है। अंग्रेजी में बात करना सुशिक्षित और संभ्रान्त होने का परिचायक बन रहा है। जो हिन्दी भाषी राज्य हैं उनमें भी स्वयं को सुशिक्षित एवं परिष्कृत समझने वाले महानुभाव हिन्दी का प्रयोग नहीं करने, अभिमान के साथ अंग्रेजी में वार्तालाप करते हैं। घरों में जनसाधारण द्वारा जो हिन्दी बोली जाती है, उसमें अंग्रेजी शब्दों का अधिक प्रयोग होता है। जैसे 'हैण्ड वॉश कर लो' टीथ क्लीन करो, वाटर वेस्ट कर दिया आदि में केवल क्रियापद हिन्दी में होता है। आशा की एक विशेष किरण यह है कि वर्तमान समय में बालकों के नाम अर्ध्य, अस्मि, श्रुति, स्वस्ति आदि हिन्दी भाषा विशेषकर संस्कृतमयी हिन्दी भाषा के हैं। विद्यार्थियों को सौ तक गिनती हिन्दी में नहीं सिखाई जाती है। अंग्रेजी के माध्यम से अध्ययनरत होने के कारण

विद्यार्थियों को हिन्दी बहुत कठिन लगती है। परीक्षाओं में हिन्दी भाषा में उनके अंक भी कम आते हैं। इस कारण हिन्दी सीखने और पढ़ने का उनका उत्साह नहीं रहता। कोई भी भाषा वास्तव में प्रयोग और व्यवहार तथा भाषण की सरलता से सीखी जा सकती है। इसलिए हम सबका कर्तव्य है कि हम व्यवहार और भाषण में शुद्ध हिन्दी का प्रयोग करें। यदि हम अंग्रेजी बोलेने में हिन्दी के शब्द बीच बीच में अनावश्यक रूप से नहीं बोलते हैं तो हिन्दी को भी इतने ही सम्मान के साथ शुद्ध रूप में अपने बोलचाल में प्रयोग में लायें। हिन्दी के पास विपुल शब्द भण्डार और समृद्ध साहित्य है। संस्कृत से इसकी समीपता है। इसे ही हमारी 'भारत-भारती' होने का अधिकार है। वर्तमान समय में हमारे देश की अस्मिता इसी भाषा में है।

मध्यकाल में भारत की स्वाधीनता के पुरोधा, देश के नवनिर्माण के स्वप्नदृष्टा, सामाजिक समरसता तथा धार्मिक सुधारों के अग्रदूत महर्षि दयानन्द सरस्वती की मातृभाषा गुजराती थी। संस्कृत भाषा के वे प्रकाण्ड पंडित थे,लेकिन सम्पूर्ण राष्ट्र के हित एवं संगठन के लिए उन्होंने हिन्दी भाषा को महत्व दिया। अपने महान् ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की हिन्दी भाषा में रचना की। इतना ही नहीं वेदों का ज्ञान जन जन तक प्रसारित करने के लिए वेद मंत्रों के शब्दार्थ सहित अर्थ और भावार्थ लिखते हुए भाष्य लिखे।

एक समय था जब हमारे देशवासी अंग्रेजों की दासता से भारत के मुक्त कराने के लिए अपने पद प्रतिष्ठा और तन-मन-धन को न्यौछावर कर रहे थे। धर्म, जाति, क्षेत्रीयता और भाषा आदि के भेदभाव मिटाकर एक साथ स्वाधीनता आन्दोलन में विदेशी शासकों के क्रूर अत्याचारों को दृढ़ता से सहन करते हुए स्वाधीन भारत के सपने देखते थे। सबमें सामूहिक उत्साह जगाने वाले नारे जय हिन्द, भारत माता की जय, जय भारत, वन्दे मातरम् आदि अपनी भारत भारती में होते थे। अण्डमान-निकोबार के टापू पोर्ट ब्लेयर में बनी सेल्यूलर जेल उन स्वाधीनता के दीवानों की कठोरतम यातनाओं की केन्द्र थी। इसे काले पानी की सजा कहा जाता था। काला अर्थात् काल मृत्यु, जिसका साखी चारों ओर समुद्र का पानी था। इस जेल में अपनी मातृभूमि से दूर समुद्र के बीच में भूमि पर मृत्यु से भी भयानक यातनाओं और अत्याचारों की व्यवस्था थी। यह जेल देशप्रेमियों के होंसले और उन पर हो रहे अमानवीय अत्याचारों की कथा व्यथा है। जेल सप्तकोणीय है जिनमें कैदियों के रहने के कक्ष हैं। बीच में केवल एक आने - जाने का रास्ता है। छोटे छोटे कक्षों में सामने लोहे की जाली का दरवाजा है। दूसरी ओर दीवार पर छोटा सा रोशनदान है। कक्ष में कोई खिड़की नहीं है। यदि कोई कैदी मर गया तो उसे पत्थर बांधकर समुद्र में फेंक दिया जाता

था। कोल्हू में बेल की तरह जोतकर एक दिन में नारियल का एक मण तेल निकालना पड़ता था, जो बैल के लिए भी संभव नहीं था। तेल में कमी होने पर या विरोध करने पर पीठ पर कोड़ों की मार और खाना बंद। फांसी देने की भी व्यवस्था थी। वर्तमान समय में ध्वनि एवं प्रकाश कार्य क्रम में उन कैदियों पर पड़ने वाले कोडों की ध्वनि तथा दकनी चीख पुकार सुनना भी असहनीय लगता है। जिन देशभक्तों से यातना सहन नहीं होती थी, वे आत्महत्या की बात करते थे। धैर्यवान साथी समझाते हमारा जीवन देश की स्वाधीनता के लिए है। हम इसे नष्ट नहीं कर सकते। वे वन्दे मातरम और जय हिन्द के नारों से एक महान उद्‌देश्य के लिए इस कठोर यातनापूर्ण जीवन को जीने का उत्साह जगाते थे।

वर्तमान समय में संभवतः उन शहीदों के बलिदानों का यह प्रभाव है कि राष्ट्र के इन सुदूरवर्ती टापुओं में हमें राष्ट्रीय एकता, प्रेम संगठन और अतिथियों के प्रति स्नेहभाव और मान सम्मान के दर्शन होते हैं। सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि यहां हमारी भारत भारती हिन्दी भाषा का बोलचाल ओर व्यवहार में सुन्दर प्रयोग दिखाई देता है। यहां के निवासियों को इस बात का दुःख है कि भारत के नक्शे में इस भारत प्रेमी भूभाग को प्रायः दिखाया ही नहीं जाता। इस ओर सरकार का ध्यान आकर्षित करना आवश्यक है। यहां के अधिकतर निवासी दक्षिण भारत तथा बंगाल के हैं। वे अपने घरों मं अपनी प्रादेशिक भाषा बोलते हैं लेकिन घर से बाहर सब लोग शुद्‌ध हिन्दी भाषा का प्रयोग करते हैं। यहां के संग्रहालयों के नाम समुद्रिका, सागरिका आदि हैं। हम सब इसी तरह हिन्दी भाषा को अपना लें तो हमारी राष्ट्रीय एकता सुदृढ़ होगी।

- ❖ मेरा आग्रहपूर्वक कथन है कि अपनी सारी मानसिक शक्ति हिन्दी के अध्ययन में लगावें - विनोबा भावे

- ❖ हिन्दी द्‌वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है - स्वामी दयानंद

आत्मनिर्भर

डॉ. प्रदीप कुमार जैन
मुख्य खनिज अर्थशास्त्री एवं राजभाषा अधिकारी
भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर

दिल्ली से गोवा की उड़ान में एक सज्जन मिले।
साथ में उनकी पत्नी भी थीं।

सज्जन की उम्र करीब 80 साल रही होगी। मैंने पूछा नहीं लेकिन उनकी पत्नी भी 75 पार ही रही होंगी। उम्र के सहज प्रभाव को छोड़ दें, तो दोनों करीब करीब फिट थे। पत्नी खिड़की की ओर बैठी थीं। सज्जन बीच में और मैं सबसे किनारे वाली सीट पर था। उड़ान भरने के साथ ही पत्नी ने कुछ खाने का सामान निकाला और पति की ओर किया। पति कांपते हाथों से धीरे-धीरे खाने लगे। फिर फ्लाइट में जब भोजन सर्व होना शुरू हुआ तो उन लोगों ने राजमा-चावल का ऑर्डर किया। दोनों बहुत आराम से राजमा-चावल खाते रहे। कोल्ड ड्रिंक में उन सज्जन ने कोई जूस लिया था। खाना खाने के बाद जब उन्होंने जूस की बोतल के ढक्कन को खोलना शुरू किया तो ढक्कन खुले ही नहीं। सज्जन कांपते हाथों से उसे खोलने की कोशिश कर रहे थे। मैं लगातार उनकी ओर देख रहा था। मुझे लगा कि ढक्कन खोलने में उन्हें मुश्किल आ रही है तो मैंने शिष्टाचार हेतु कहा कि लाइए...
"मैं खोल देता हूं।"सज्जन ने मेरी ओर देखा, फिर मुस्कुराते हुए कहने लगे कि..
"बेटा ढक्कन तो मुझे ही खोलना होगा।
मैंने कुछ पूछा नहीं, लेकिन सवाल भरी निगाहों से उनकी ओर देखा।

यह देख, सज्जन ने आगे कहा बेटाजी, आज तो आप खोल देंगे। लेकिन अगली बार..? कौन खोलेगा.? इसलिए मुझे खुद खोलना आना चाहिए।

पत्नी भी पति की ओर देख रही थीं। जूस की बोतल का ढक्कन उनसे अभी भी नहीं खुला था। पर पति लगे रहे और बहुत बार कोशिश कर के उन्होंने ढक्कन खोल ही दिया।

दोनों आराम से जूस पी रहे थे। मुझे दिल्ली से गोवा की इस उड़ान में ज़िंदगी का एक सबक मिला। सज्जन ने मुझे बताया कि उन्होंने ये नियम बना रखा है, कि अपना हर काम वो खुद करेंगे। घर में बच्चे हैं, भरा पूरा परिवार है।

सब साथ ही रहते हैं। पर अपनी रोज़ की ज़रूरत के लिय वे सिर्फ पत्नी की मदद ही लेते हैं, बाकी किसी की नहीं। वो दोनों एक दूसरे की ज़रूरतों को समझते हैं
सज्जन ने मुझसे कहा कि जितना संभव हो, अपना काम खुद करना चाहिए। एक बार अगर काम करना छोड़ दूंगा, दूसरों पर निर्भर हुआ तो समझो बेटा कि बिस्तर पर ही पड़ जाऊंगा। फिर मन हमेशा यही कहेगा कि ये काम इससे करा लूं, वो काम उससे। फिर तो चलने के लिए भी दूसरों का सहारा लेना पड़ेगा। अभी चलने में पांव कांपते हैं, खाने में भी हाथ कांपते हैं, पर जब तक आत्मनिर्भर रह सको, रहना चाहिए। हम गोवा जा रहे हैं, दो दिन वहीं रहेंगे। हम महीने में एक दो बार ऐसे ही घूमने निकल जाते हैं। बेटे-बहू कहते हैं कि अकेले मुश्किल होगी, पर उन्हें कौन समझाए कि मुश्किल तो तब होगी। जब हम घूमना-फिरना बंद करके खुद को घर में कैद कर लेंगे। पूरी ज़िंदगी खूब काम किया। अब सब बेटों को दे कर अपने लिए महीने के पैसे तय कर रखे हैं। और हम दोनों उसी में आराम से घूमते हैं।

जहाँ जाना होता है एजेंट टिकट बुक करा देते हैं। घर पर टैक्सी आ जाती है। वापिसी में एयरपोर्ट पर भी टैक्सी ही आ जाती है। होटल में कोई तकलीफ होनी नहीं है। स्वास्थ्य, उम्रनुसार, एकदम ठीक है। कभी-कभी जूस की बोतल ही नहीं खुलती। पर थोड़ा दम लगाओ, तो वो भी खुल ही जाती है।

मेरी तो आखेँ ही खुल की खुली रह गई। मैंने तय किया था कि इस बार की उड़ान में लैपटॉप पर एक पूरी फिल्म देख लूंगा। पर यहां तो मैंने जीवन की फिल्म ही देख ली।
एक वो फिल्म जिसमें जीवन जीने का संदेश छिपा था।

"जब तक हो सके आत्मनिर्भर रहो।"
अपना काम जहाँ तक संभव हो स्वयं ही करो।"

- ❖ राष्ट्रीयता का भाषा और साहित्य के साथ बहुत ही घनिष्ट और गहरा संबंध है - डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

शिक्षा नीति 2020

बी. एल. यादव
सहायक संपादक
भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने आखिरकार नई शिक्षा नीति को मंजूरी देकर शिक्षा व्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन की प्रक्रिया शुरु कर दी। अभी देश में 34 साल पहले बनी शिक्षा नीति लागू थी। इस बीच देश, दुनिया और समाज का पूरा ताना-बाना बदल गया, जीवन व्यवहार बदल गया, बहुत सी जरूरतें बदल गईं। जाहिर है इन तमाम बदलावों के अनुरूप शिक्षा व्यवस्था में भी सुधार की जरूरत थी। इसे देखते हुए नई नीति में व्यापक स्तर पर बदलाव की घोषणा की गई है। चाहे शिक्षा व्यवस्था का दायरा बढ़ाते हुए उसमें तीन साल के प्री-स्कूलिंग पीरियड को शामिल करने की बात हो, या कम से कम पांचवीं तक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा या स्थानीय अथवा क्षेत्रीय भाषा को बनाने की, ऐसे तमाम बड़े-बड़े फैसले इसमें शामिल हैं जिन पर समाज में तीखी बहस होती रही है। आईए निम्नलिखित बिंदुओं के सहारे नई शिक्षा नीति को समझने की कोशिश करते हैं।

5+3+3+4 क्या है?

देश की नई शिक्षा नीति में आम जनता ऐसे ही सवालों के जवाब ढूँढ रही है। सबसे पहले शुरुआत स्कूली शिक्षा से करते हैं। नई शिक्षा नीति में पहले जो 10+2 की बात होती थी, अब उसकी जगह सरकार 5+3+3+4 की बात कर रही है। 5+3+3+4 में 5 का मतलब है - तीन साल प्री-स्कूल के और क्लास 1 और 2 उसके बाद के 3 का मतलब है क्लास 3, 4 और 5 उसके बाद के 3 का मतलब है क्लास 6, 7 और 8 और आख़िर के 4 का मतलब है क्लास 9, 10, 11 और 12 यानी अब बच्चे 6 साल की जगह 3 साल की उम्र में फ़ॉर्मल स्कूल में जाने लगेंगे. अब तक बच्चे 6 साल में पहली क्लास मे जाते थे, तो नई शिक्षा नीति लागू होने पर भी 6 साल में बच्चा

पहली क्लास में ही होगा, लेकिन पहले के 3 साल भी फ़ॉर्मल एजुकेशन वाले ही होंगे। प्ले-स्कूल के शुरुआती साल भी अब स्कूली शिक्षा में जुड़ेंगे।

3 लैंग्वेज फ़ॉर्मूला

इसके अलावा स्कूली शिक्षा में एक और महत्वपूर्ण बदलाव है भाषा के स्तर पर. नई शिक्षा नीति में 3 लैंग्वेज फ़ॉर्मूले की बात की गई है, जिसमें कक्षा पाँच तक मातृ भाषा/ लोकल भाषा में पढ़ाई की बात की गई है। साथ ही ये भी कहा गया है कि जहाँ संभव हो, वहाँ कक्षा 8 तक इसी प्रक्रिया को अपनाया जाए। संस्कृत भाषा के साथ तमिल, तेलुगू और कन्नड़ भाषा में पढ़ाई पर भी ज़ोर दिया गया है। सेकेंड्री सेक्शन में स्कूल चाहे तो विदेशी भाषा भी विकल्प के तौर पर दे सकेंगे।

बोर्ड एक्ज़ाम

स्कूली शिक्षा में तीसरी बार बोर्ड परीक्षा में बदलाव किया है। पिछले 10 सालों में बोर्ड एग्ज़ाम में कई बदलाव किए गए। कभी 10वीं की परीक्षा को वैकल्पिक किया गया, कभी नबंर के बजाए ग्रेड्स की बात की गई। लेकिन अब परीक्षा के तरीक़े में बदलाव की बात नई शिक्षा नीति में की गई है। बोर्ड एग्जाम होंगे, और अब दो बार होंगे. लेकिन इनको पास करने के लिए कोचिंग की ज़रूरत नहीं होगी। परीक्षा का स्वरूप बदल कर अब छात्रों की 'क्षमताओं का आकलन' किया जाएगा, ना कि उनके यादाश्त का। केंद्र की दलील है कि नंबरों का दवाब इससे ख़त्म होगा. 2022-23 वाले सत्र से इस बदलाव को लागू करने की मंशा है।

इन बोर्ड परीक्षाओं के अतिरिक्त राज्य सरकारें कक्षा 3, 5 और 8 में भी परीक्षाएँ लेंगी। इन परीक्षाओं को करवाने के लिए गाइड-लाइन बनाने का काम नई एजेंसी को सौंपा जाएगा, जो शिक्षा मंत्रालय के अंतर्गत ही काम करेगी।

अंडर ग्रेजुएट और पोस्ट ग्रेजुएट में क्या बदला

इसी तरह के बदलाव उच्च शिक्षा में भी किए गए हैं। अब ग्रेजुएशन (अंडर ग्रेजुएट) में छात्र चार साल का कोर्स पढ़ेगें, जिसमें बीच में कोर्स को छोड़ने की गुंजाइश भी दी गई है। पहले साल में कोर्स छोड़ने पर सर्टिफ़िकेट मिलेगा, दूसरे साल के बाद एडवांस सर्टिफ़िकेट मिलेगा और तीसरे साल

के बाद डिग्री, और चार साल बाद की डिग्री होगी शोध के साथ. उसी तरह से पोस्ट ग्रेजुएट में तीन तरह के विकल्प होंगे।

पहला होगा दो साल का मास्टर्स, उनके लिए, जिन्होंने तीन साल का डिग्री कोर्स किया है। दूसरा विकल्प होगा चार साल के डिग्री कोर्स शोध के साथ करने वालों के लिए. ये छात्र एक साल का मास्टर्स अलग से कर सकते है। और तीसरा विकल्प होगा, 5 साल का इंटिग्रेटेड प्रोग्राम, जिसमें ग्रेजुएशन और पोस्ट ग्रेजुएशन दोनों एक साथ ही हो जाए। अब पीएचडी के लिए अनिवार्यता होगी चार साल की डिग्री शोध के साथ. एमफिल को नई शिक्षा नीति में बंद करने का प्रावधान है।

उच्च शिक्षा में स्कॉलरशिप के लिए नई शिक्षा नीति में प्रस्ताव है। इसके लिए नेशनल स्कॉलरशिप पोर्टल के दायरे को और अधिक व्यापक बनाने की बात है। प्राइवेट संस्थाएँ, जो उच्च शिक्षा देंगी उनको 25 फ़ीसदी से लेकर 100 फ़ीसदी तक स्कॉलरशिप अपने 50 फ़ीसदी छात्रों को देना होगा - ऐसा प्रावधान इस शिक्षा नीति में किया गया है। उच्च शिक्षा संस्थानों को ग्रांट देने का काम हायर एजुकेशन ग्रांट्स कमिशन करेगा। इसके अलावा इन संस्थाओं के अलग-अलग विभागों के लिए नियम, क़ानून और गाइड लाइन तैयार करने की ज़िम्मेदारी होगी।

- ❖ आप जिस तरह बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए। - महावीर प्रसाद द्विवेदी

- ❖ हिंदुस्तान के लिए देवनागरी लिपि का ही व्यवहार होना चाहिए, रोमन लिपि का व्यवहार यहाँ हो ही नहीं सकता - महात्मा गाँधी

कोरोना - एक जंग

अभिषेक कुमार
एम.टी.एस.
भारतीय खान ब्यूरो, कोलकाता

कोरोना वायरस साल 2019 के अंतिम माह में चीन के वुहान शहर के मछली बाजार से समूचे चीन फिर उसके बाद पूरे संसार में फैल गया। कोरोना वायरस कई प्रकार के वायरस का एक समूह है, जो स्तनधारियों और पंछियों में रोग उत्पन्न करता है। ये एक प्रकार के आरएएन वायरस होते हैं, जो मानवों के श्वांसतंत्र मे संक्रमण पैदा करते हैं जिससे सर्दी जुकाम से लेकर अति गंभीर बीमारी या मृत्यु भी हो सकती है।

कोरोना का लैटिन भाषा में अर्थ होता है मुकुट और इस वायरस के कणों के चारों तरफ उभरे हुए काँटे जैसे ढाचों से इलेक्ट्रान सूक्ष्मदर्शी में उसका आकार एक मुकुट जैसा ही दिखता है इसलिए इसका नाम कोरोना रखा गया है। यह बड़े गोलाकार कणों के रूप में होते हैं और इस वायरस के कणों का व्यास लगभग 120 नैनोमीटर का होता है। कोरोना की पहचान। अगर किसी व्यक्ति को तेज बुखार लगभग 99.0 डिग्री फारेनहाइट या 99.5 हो तो इसे बुखार नही मानेंगे परंतु अगर किसी व्यक्ति को 100 डिग्री से ज्यादा बुखार है तब ही चिंता की बात है। कोरोना वायरस से संक्रमित व्यक्ति को कफ होता है, परंतु उसे खांसी सूखी होती है। किसी व्यक्ति को 24 घंटे में तीन या चार बार 15 मिनट या उससे ज्यादा समय तक खांसी हो सकती है। कोरोना से संक्रमित लोगों में डायरिया और उल्टी के भी लक्ष्ण देखे गए और करीब 30 प्रतिशत लोगों मे यह लक्षण पाये गये हैं। कोरोना वायरस होने पर बहुत से मामलो में सूंघने और स्वाद की क्षमता में भी कमी पायी जाती है। कोरोना वायरस होने और उसके लक्षण दिखने में लगभग 14 दिन का समय लगता है।

कोरोना वायरस के संक्रमण की जांच एक जटिल प्रक्रिया है, उसके लिए हर देश के पास संसाधन मौजूद नहीं हैं। इसके जांच के लिए लैब मे तजुर्बेकार तकनीशियन के साथ नए कंप्यूटर और नई प्रशासनिक व्यवस्था भी करनी पर रही है और उससे भी ज्यादा समस्या है टेस्ट किट। क्योंकि हर कंपनी के पास टेस्ट किट तैयार करने का अपना फार्मूला है और हर टेस्ट किट मे 20 तरह के केमिकल का उपयोग होता है और सभी का उचित मात्रा में होना चाहिए। और जब नाक से नमूने लिए जाते हैं तो उसके लिए किसी साधारण रूई का उपयोग नहीं होता, बल्कि नायलान की पतली व लचीली छड़ से लिया जाता है। भारत सरकार ने देश में बहुत सारी लैब का चुनाव किया जहाँ कोरोना वायरस का टेस्ट करवाया जा सकता है। भारत मे कोरोना के जांच के पीसीआर यानि पालीमरेज चेन रिएक्शन। यह पीसीआर टेस्ट गले, श्वांस नली के लिक्विड और मुंह की लार की सैंपल को रसायनों से भरी टेस्ट टयूब में रखा जाता है। जहां वायरस पर जमा परत को हटाया जाता है और फिर वायरस के राइबो न्यूक्लिक एसिड आरएनए को हटाकर एक दूसरे डिस्क में रखा जाता है। उसके बाद कई तरह के केमिकल पर काम करके इसके जीनोम की पहचान करते हैं इस प्रक्रिया के बाद आरएनए वाली डिस्क को मशीन में डाल करके उसके जीनोम को लाखों टुकडों में तोड़ा जाता है और उसके बाद कोरोना वायरस के जेनेटिक कोड से मिलान की जाती है तब जाकर इस वायरस की पहचान हो पाती है। पीसीआर टेस्ट मुख्यत एच1 एन1 वायरस, इंफलूएंजा बी और इंफलूएंजा ए आदि वायरस के जांच के लिए उपयोग की जाती है। अमेरिकी जैव रसायन वै३ कैरी मुलिस ने पीसीआर तकनीक का आविष्कार किया था और उनको 1993 में रसायन विज्ञान के लिए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। भारत में कुल लैब की संख्या 1206 है जिनमें 853 लैब सरकारी है और 353 गैर सरकारी लैब है। भारत के उत्तर प्रदेश राज्य में सबसे ज्यादा लैब हैं जिनकी संख्या 138 है। भारत में सबसे ज्यादा टेस्ट तमिलनाडु राज्य कर रहा है जो दिनांक 15.07.2020 तक 10 लाख टेस्ट कर चुका है। सबसे कम टेस्ट बिहार राज्य ने किया है और सबसे ज्यादा उसका रेश्यो है जो लगभग हर 1714 से लेकर 2573 टेस्ट पर 7.3 प्रतिशत से लेकर 10 प्रतिशत है जो समूचे देश में सबसे ज्यदा है। टेस्ट और संपर्क करने मे सबसे अव्वल नंबर पर सिंगापुर और जर्मनी का नाम आता है। सबसे पहले न्यूजीलैंड ने मई माह में अपने देश को कोरोना मुक्त किया। मई माह में चीन के वुहान शहर में फिर से कोरोना का फैलाव हुआ था पंरतु चीन ने पूरे वुहान शहर का दो दिन में टेस्ट कर के वुहान शहर को कोरोना मुक्त कर दिया। वुहान शहर की आबादी लगभग 2 करोड़ 10 लाख है और 2 दिन में पूरे शहर का कोरोना टेस्ट करना यह एक रिकार्ड है।

कोरोना वायरस होने से कुछ इंफेक्शन भी होता है।
कोरोना वायरस का प्रमुख साइड इफेक्टस नाक में इंफेक्शन होना है। यह इंफेक्शन लंबे समय तक रहने से सिर्फ नाक सर्जरी ही एक मात्र विकल्प बचता है।
गले में इफेंक्शन होना भी कोरोना वायरस के प्रमुख लक्षण हैं।
सांस लेने में तकलीफ होना।
कोरोना वायरस के बहुत सारे मामलों में देखा गया है कि यह बीमारी साइनस का कारण बन जाती है।
कोरोना वायरस का सबसे गंभीर साइड इफेक्टस मौत का होना है।

दुनिया भर में 15.07.2020 तक कुल 13465187 लोग कोराना से संक्रमित हो चुके हैं, जिनमें मरने वाले की संख्या 581405 है और 7855937 लोग कोरोना से ठीक भी हो चुके हैं। अभी कुल 5027945 केस एक्टिव हैं। विश्व की सबसे भयानक स्थिति 5 देश की है जिसमें अमेरिका, ब्राजिल, भारत, रूस और पेरू है। अमेरिका में अभी तक कुल केस 13,465,187 है और मरने वालों की संख्या 748275 है और कुल एक्टिव केस 7855837 है जिसमे 5,027,945 लोगों की हालात गंभीर है। अमेरिका में हर 10 लाख लोग पर 420 लोग का टेस्ट किया जा रहा है। ब्राजील में अभी तक कुल केस 3545254 है और मरने वालों की संख्या है 139145 है और कुल एक्टिव केस 1600321 है जिसमें 1805788 लोगों की हालात गंभीर है। ब्राजील में हर 10 लाख लोग पर 349 लोग का टेस्ट किया जा रहा है। यह पहला ऐसा देश है जहाँ लागो को दफन करने के लिए एनजीओ को आना पड़ा।

उसके बाद अपना प्यारा देश भारत जो एक सप्ताह के अंदर 4 नबंर से 3 नंबर पर आ गया। भारत में अभी तक कुल केस 937844 है और मरने वालों की संख्या है 24327 है और कुल एक्टिव केस 593,178 है जिसमे 320,339 लोगों की हालात गंभीर है। भारत में हर 10 लाख लोग पर 18 लोग का टेस्ट किया जा रहा है। रूस में अभी तक कुल केस 739,947 है और मरने वालों की संख्या 11614 है और कुल एक्टिव केस 512,825 है जिसमे 215,508 लोगों की हालात गंभीर है। रूस में हर 10 लाख लोगों पर 80 लोगों का टेस्ट किया जा रहा है। पेरू में अभी तक कुल केस 333,867 है और मरने वालों की संख्या है 12,229 है और कुल एक्टिव केस 223,261 है जिसमे 98,377 लोगों की हालात गंभीर है। पेरू में हर 10 लाख लोग पर 3 लोग का टेस्ट किया जा रहा है।

क्यों जरूरी है सोशल डिस्टेंसिंग

जब कोरोना वायरस से संक्रमित कोई व्यक्ति खांसता या छींकता है तो उसके बारीक कण हवा में फैलते हैं और इन कणों में कोरोना वायरस के विषाणु होते हैं। जब कोई व्यक्ति एक बार छींकता है तो उससे कम से कम 3,000 बूदें तक पैदा होते हैं और यह उनके कपड़ों या उसके इर्द-गिर्द सतह पर फैल या कुछ हवा में भी रह सकते हैं। किसी संक्रमित व्यक्ति के नजदीक जाने से यह विषाणु कण सांस के रास्ते आपके शरीर में प्रवेश कर सकते है। अगर आप किसी ऐसी जगह को छूते हैं जहाँ से कण गिरे हैं और फिर उसी हाथ से नाक, आँख या मुंह को छूते हैं तो यह कण आपके शरीर में पहुँचते हैं। ऐसे में खांसते या छींकते समय टिश्यू का इस्तेमाल करना, बिना हाथ धोए अपने चेहरे को ना छूना और संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में आने से बचना इस वायरस को फैलने से रोकने के लिए बेहद महत्वपूर्ण है।

कोरोना वायरस के इस संकट से हमे तीन ही चीजें बचा सकती हैं -

1. टीका
2. लोगों में संक्रमण से बचने के लिए प्रतिरोधक क्षमता का विकास
3. या हमारे समाज या व्यवहार को स्थाई रूप से बदलना।

मुश्किल बड़ी घड़ी है, संयम बनाये रखना, एक फासला बनाकर खुद को बचाये रखना, बहुत मुश्किल घड़ी है।

- "भारत के विभिन्न प्रदेशों के बीच हिंदी प्रचार द्वारा एकता स्थापित करने वाले सच्चे भारत बंधु हैं' - अरविंद
- "राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूँगा है'' – महात्मा गाँधी

<u>सौर ऊर्जा और इसका उपयोग</u>

पप्पू गुप्ता
कनिष्ठ सांख्यिकी अधिकारी
भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर

हमारी पूरी पृथ्वी सूर्य के चारों तरफ घुमती है। यह सूर्य से रोशनी और गर्मी प्राप्त करती है। सूर्य से प्राप्त होने वाली ऊर्जा को सौर ऊर्जा कहा जाता है। विशेष रूप से सौर ऊर्जा सूर्य की वह ऊर्जा है जिसे हम विद्युत में परिवर्तित करते हैं। सूर्य के पास बहुत सा प्रकाश और गर्मी है अगर सूर्य से प्राप्त होने वाली सारी रोशनी को विद्युत में बदल दिया जाए तो पूरे साल की बिजली की खपत की आपूर्ति हो सकती है। सौर ऊर्जा फोटॉन के रूप में सूर्य के प्रकाश में निहित ऊर्जा है। पौधे शुरू से ही सौर ऊर्जा का उपयोग करते रहे हैं। पत्तियां सौर ऊर्जा को फंसाती हैं और भोजन तैयार करने के लिए प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया में इसका उपयोग करती हैं। इस तरह, खाद्य पिरामिड के कामकाज में सौर ऊर्जा एक आवश्यक भूमिका निभाती है।

सौर ऊर्जा का उपयोग सभी जीवों द्वारा किया जाता है, जिसमें पौधे और जानवर दोनों शामिल हैं। सौर ऊर्जा भी नमी को कम करने और हानिकारक कीटाणुओं को मारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सुबह की धूप हमारी हड्डियों को मजबूत करने हमारी प्रतिरक्षा में सुधार और त्वचा की कई बीमारियों को नियंत्रित करने में मदद करने के लिए जानी जाती है।

सौर ऊर्जा ऊर्जा का एक नवीकरणीय रूप है जो पुनः प्राप्त होता रहता है। इसलिए, यह कहना सुरक्षित है कि सौर ऊर्जा के आधार पर, अपने प्राकृतिक संसाधनों की पृथ्वी को नष्ट नहीं किया जाएगा। इसके अलावा, सौर ऊर्जा का उपयोग हम सभी के लिए एक पर्यावरण के अनुकूल विकल्प है, क्योंकि यह किसी भी प्रकार के प्रदूषण का कारण नहीं है।

सौर ऊर्जा अन्य गैर - नवीकरणीय संसाधनों - जैसे कोयला, लकड़ी, खनिज तेल, जीवाश्म ईंधन, आदि के लिए एक बेहतरीन विकल्प के रूप में प्रदान करता है। यह विभिन्न तरीकों से ग्रह पृथ्वी पर कम भार डालता है। गैर - नवीकरणीय स्रोत पहले से ही तीव्र दर से समाप्त हो रहे हैं। वे प्रदूषण का कारण भी बनते हैं और सभी जीवों के जीवन में बाधा डालते हैं।सबसे अधिक, सौर ऊर्जा के साथ जरूरतों को पूरा करने में भी कम खर्च होता है। ऊर्जा के अन्य पारंपरिक रूपों की तुलना में यह ऊर्जा का एक सस्ता और किफायती स्रोत है।

सौर ऊर्जा का उपयोग करने के तरीके :

सौर ऊर्जा को कई तरह से संग्रह किया जा सकता है। सबसे प्रभावी प्रौद्योगिकी में से एक सौर ऊर्जा संयंत्रों का उपयोग है। ये बिजली संयंत्र विशेष रूप से बड़े स्तर पर बिजली उत्पादन के उद्देश्य से तैयार किए गए हैं। सौर ऊर्जा पर काम करने वाले अन्य उपकरण और प्रौद्योगिकियां सौर कुकर, सौर हीटर और सौर सेल हैं।

सोलर कुकर, ये आजकल खाना पकाने के सबसे क्रांतिकारी तरीके हैं। गैस, मिट्टी के तेल, या लकड़ी जैसे पारंपरिक ईंधन का उपयोग करने के बजाय, सोलर कुकर सीधे धूप की मदद से काम करते हैं। इन कुकरों में एक कांच का ढक्कन होता है जो गर्मी और खाना बनाने के लिए सूर्य की सभी किरणों को पकड़ता है और उन्हें केंद्रित करता है। सोलर कुकर खाना पकाने के पर्यावरण के अनुकूल और किफायती साधन हैं।

सोलर हीटर वे उपकरण हैं जो सौर ऊर्जा से पानी को गर्म करने में मदद करते हैं। ये उपकरण द्रव आधारित तकनीकी पर काम करते हैं। इसका मतलब है, या तो हवा या एक एंटी - फ्रीजिंग तरल पदार्थ को कलेक्टर में डाला जाता है ताकि पानी को बिना बिजली के गर्म किया जा सके।

तीसरा रूप सौर सेल है। ये सौर सेल सीधे सौर प्रकाश को बिजली में परिवर्तित करते हैं। सौर सेल उन क्षेत्रों में विशेष रूप से लोकप्रिय हैं, जहां पावर ग्रिड से आपूर्ति कम उपलब्ध है। कई कैलकुलेटर, कलाई घड़ी और इसी तरह की प्रणाली इस तकनीक के साथ काम करती हैं। इतना ही नहीं, बल्कि सौर पैनलों द्वारा उत्पादित बिजली को रिचार्जेबल सौर बैटरी में भी संग्रहीत किया जा सकता है।

सौर ऊर्जा अगली पीढ़ी का भविष्य है। यह एक सुरक्षित, हरियाली और जीवन जीने का किफायती तरीका है। इसकी भरपाई की जा सकती है और यह ऊर्जा का एक अक्षय स्रोत है जो वायुमंडल में प्रदूषण का कारण नहीं है। सौर ऊर्जा गैर - नवीकरणीय संसाधनों के अन्य रूपों पर भी कम बोझ डालती है और पृथ्वी को विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों से बचाती है जितना संभव हो, हम सभी को सौर ऊर्जा पर आधारित उपकरणों का उपयोग करने के लिए स्विच करना चाहिए हमारी पृथ्वी को बचाना चाहिए।

<u>खुश कैसे रहा जाये</u>

एकता गिरि
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
भारतीय खान ब्यूरो, कोलकाता

खुश कैसे रहा जाये, यह प्रश्न जितना जटिल है, इसका उत्तर उतना ही सहज है। यकीन मानिये, खुश रहने के लिये किसी वजह की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि यदि आप किसी वजह से खुश होंगे तो उस वजह के समाप्त होते ही आप दुःखी भी हो जायेंगे और वजह का समाप्त होना तय है क्योंकि ये हम भलीभांति जानते हैं कि कोई भी स्थिति सदैव रहने वाली नहीं है।

यदि आपकी आत्मा प्रफुल्लित है, आनंदित है तो हर क्षण ही आप खुश रहेंगे। अब प्रश्न यह उठता है कि आत्मा आनंदित कैसे होती है ! क्या आपको पता है, हमारी आत्मा की मूल प्रकृति अर्थात् उसका 'बेसिक नेचर' ही आनंद है। जब आत्मा अपनी मूल प्रकृति से हटती है तो यह दुःखी हो जाती है। अब इसे मूल प्रकृति से हटाता कौन है ! हम। जी हाँ हम और पूर्णतः हम। किसी और के कारण, किसी वजह के कारण हम दुःखी नहीं होते, बल्कि हम दुःखी तब होते हैं जब हम अपने अंदर दुःख के भाव पैदा करते हैं। जैसे, किसी ने हमें कुछ कहा। चलिये मान लिया, किसी ने हमें गाली दी। अब उसके पास जो था, उसने हमें दे दिया, लेकिन हमें उसकी दी हुई गाली पसंद नहीं है तो हम उसे क्यों लेंगे। जब हम लेंगे ही नहीं तो दुःख किस बात का !

खुश कैसे रहा जाये, इस पर विचार करने के साथ ही आईये उन क्षणों पर भी विचार करते हैं, जब हम दुःखी होते हैं :-

1. हम तब बहुत ज्यादा दुःखी हो जाते हैं जब सामने वाला हमारे अनुसार व्यवहार नहीं करता है।

लेकिन, सामने वाला आपके अनुसार व्यवहार भला कैसे कर सकता है ! आप के और उसके रूप, रंग, लम्बाई, चौड़ाई, कद - काठी जब एक दूसरे से नहीं मिलते तो आप कैसे उम्मीद करते हैं कि आपके और उसके विचार एक दूसरे से मिल जायेंगे ! उसकी सोच और विचार आपसे अलग होंगे और आपके उससे अलग। ध्यान दीजिये, यहाँ अलग शब्द का प्रयोग हुआ है, गलत का नहीं क्योंकि हम में से अधिकांश लोग यह मान लेते हैं कि यदि सामने वाला हमारे अनुसार नहीं सोचता या व्यवहार करता है तो वह गलत है और फिर हम उसकी गलत सोच को सही करने का जिम्मा खुद -ब- खुद अपने ऊपर ले लेते हैं और जब वह फिर भी गलत से हमारे अनुसार सही नहीं होता तो हम स्वयं दुःखी हो जाते हैं। हो सकता है कि सामने वाला व्यक्ति अपनी किसी आदत, संस्कार, शिक्षा के कारण कुछ आपसे अलग कर रहा हो। यदि आप सच में यह मानते हैं कि वह जो कुछ कर रहा है वह अनुचित है तो उसे सही मार्ग दिखाइये। एक बार नहीं, पचास बार दिखाइये, सौ बार दिखाईये लेकिन अपना संयम खोये बिना ही। क्योंकि जैसे ही आपने अपना संयम खोया, उस व्यक्ति के साथ - साथ आप भी अनुचित व्यवहार करने लगे, आप भी कुछ वैसा ही व्यवहार करने लगे, जिसे आप बदलना चाहते थे। इसलिये सबसे पहले अपने मनःस्थिति की जांच कीजिये, उसे सुदृढ़ कीजिये और फिर किसी को मार्ग दिखाना प्रारम्भ कीजिये।

2. हम तब बहुत ज्यादा दुःखी हो जाते हैं जब हमें अपने कर्म के अनुसार फल नहीं मिलता है।

भगवान कृष्ण ने गीता में कहा है कि कर्म करते जाओ, फल की चिन्ता मत करो। इस बात को यदि विस्तृत ढंग से सोचा जाये तो इसका सार यही है कि आपके कर्म जैसे होंगे उसका फल आपको देर - सवेर अवश्य मिलेगा। यदि आपने बुरे कर्म किये तो उसका बुरा फल और अच्छे कर्म किये तो उसका अच्छा फल भी जरूर मिलेगा, लेकिन यह फल कब और किस रूप में होगा, यह पूर्णतः ईश्वर के ऊपर निर्भर करेगा। जैसे आपने एक आम का पेड़ लगाया। खूब खाद - पानी दिया, लेकिन समय आने पर आपको आम नहीं मिले क्योंकि पेड़ ठूंठ निकल गया। अब आप ये कह सकते हैं कि आपकी सारी मेहनत बर्बाद चली गई। लेकिन ऐसा नहीं है। आपने पेड़ लगाया, उस पर मेहनत की तो प्रकृति ने उसके बदले में आपको पेड़ की छाया दी। आपको प्राण - वायु दी। हाँ आपकी इच्छा के अनुरूप उसने आप को आम नहीं दिये। कहने का तात्पर्य यह है कि कोई भी कर्म बिना फल के, बिना परिणाम के नहीं होता और साथ ही उसका फल, उसका परिणाम हमारे

क्षेत्राधिकार के बाहर की वस्तु है। कर्म करना ही केवल हमारे हाथ में है और बाकी कुछ नहीं। तो जो अपने हाथ में है ही नहीं, उस के लिये दुःखी क्यों हुआ जाये।

अब एक दूसरा प्रश्न यह है कि कर्म किस प्रकार का किया जाये। किस कर्म को सही माना जाये क्योंकि हर व्यक्ति की नजर में ही उसके कर्म सही हैं। लेकिन ऐसा है नहीं क्योंकि यदि हर व्यक्ति की नजर में उसके कर्म ही सही हैं तब तो संपूर्ण शास्त्र, कानून की सब किताबें, न्यायालय सब बेकार हो गये ! क्योंकि उनमें एक ही पंक्ति में लिख दिया जाता कि सब अपनी - अपनी दृष्टि से जो सही लगे, वह कर लो। फिर तो सारे झमेले ही खत्म हो जाते। अगर, सब अपनी - अपनी दृष्टि में जो सही कर्म करते हैं, वे अगर सच में सही कर्म होते तो यह समाज जंगल राज हो जाता। किसी पर भी कोई अंकुश ही नहीं होता। सब अपनी - अपनी जगह पर सही लेकिन, ऐसा है नहीं। हमारे धर्म ने, शास्त्रों ने, कानुन ने कुछ विधान बनाये हैं जिनका पालन करते हुए हमें अपना जीवन जीना होता है। इन विधानों का विधिवत् पालन ही सत्कर्म और इनका पालन न करना ही बुरा कर्म है, जिसके लिये दंड का प्रावधान भी रखा गया है।

गीता में, हर वह क्रिया, जो केवल और केवल अपने स्वार्थ के लिये की जाती है, उसे कर्म कहा गया है। इसी कर्म का फल हमें मिलता है। अर्थात सकाम भाव से की गई शास्त्र सम्मत क्रिया ही कर्म है। ध्यान रहे, शास्त्र सम्मत क्रिया। अर्थात् जो शास्त्रों के अनुसार करने योग्य कर्म बताये गये हैं।

हर वह कर्म जो फलेच्छा, आसक्ति, ममता से रहित होकर परोपकार के लिये किया जाता है, वह कर्म, अकर्म बन जाता है। अकर्म करने वाला व्यक्ति कभी भी कर्म के फलों में आसक्ति नहीं रखता और न ही वह अपने कर्म का श्रेय ही लेता है। वह सब कुछ करते हुए भी कुछ नहीं करता। ऐसे व्यक्ति हमेशा संतुष्ट रहते हैं।

गीता में एक और तत्व है, विकर्म। विकर्म वह कर्म है जो शास्त्र सम्मत न हो। अर्थात् कामना की इच्छा से की गई क्रिया कर्म है और यही कामना जब इतनी बढ़ जाये कि धर्म - अधर्म का ध्यान न रहे तो यही क्रिया विकर्म (पाप कर्म, बुरा कर्म) बन जाती है।

गीता में अकर्म को ही श्रेष्ठ कहा गया है, अर्थात् बिना किसी आसक्ति, स्वार्थ के, परोपकार के हित में की गई क्रिया ही श्रेष्ठ है। जिसमें न क्रिया का श्रेय खुद को और न उसका फल खुद को। सब कुछ ईश्वर को समर्पित। हर कुछ करते हुए भी करने का कोई भाव ही नहीं। यही वे लोग होते हैं जो कहते हैं कि मैंने कुछ नहीं किया, सब कुछ ईश्वर करता है। जो लोग इस गूढ़ रहस्य को नहीं जानते, वे अपने कर्म के प्रति भी आसक्त रहते हैं और उसके फल के प्रति भी और उन्हें उनकी क्रियाओं के अनुरूप फल मिलता भी है। शास्त्र सम्मत क्रिया होगी तो उसका अच्छा फल और शास्त्र सम्मत न होकर की गई क्रिया होगी तो उसका बुरा फल।

3. हम तब बहुत ज्यादा दुःखी हो जाते हैं जब परिस्थितियाँ हमारे अनुसार नहीं होती हैं।

यह स्थिति भी तभी होती है जब हम अपने कर्म पर ध्यान न देकर फल की चिन्ता करने लगते हैं। जब हम बहुत ज्यादा भविष्य की योजनायें बना कर रख लेते हैं। यदि खुश रहना है तो भविष्य की चिन्ता नहीं करनी चाहिये क्योंकि जो है वह आज है। इस वाक्य का अर्थ यह बिल्कुल भी नहीं है कि आज ही खा-पीकर सब उड़ा दिया जाये क्योंकि कल किसी ने नहीं देखा है। एक बात सदैव याद रखनी चाहिये कि आज जिस चीज का दुरूपयोग किया जायेगा, कल वही चीज अपनी औकात दिखायेगी। चाहे वह आपका शरीर हो या फिर आपका धन। इसलिये आज जो जीना है वह भी संयम से जीना है, ताकि कल यदि जीवन रहे तो किसी बात की कोई तकलीफ न हो। यदि आज आपका संयमित होगा तो भविष्य भी संयमित ही रहेगा और यदि आज आप उचित कर्म नहीं कर रहे हैं तो उसके परिणाम आपको भविष्य में मिलने ही वाले हैं। इसलिये जो है, वह आज है, आज के सही कर्म ही आपको सुखद भविष्य दे सकते हैं। इसलिये चिन्ता हमेशा आज की होनी चाहिये, आज के कर्म सही होने चाहिये, भविष्य तो आपका आपके कर्मानुसार निर्धारित हो ही जायेगा।

4. यह तय न कर पाना कि हमारे जीवन का उद्देश्य क्या है, हमें क्या चाहिये ! यह भी हमारे दुःखों का कारण है। लोग दौड़ रहे हैं, इसलिये दौड़ना है। यह सही नहीं है। हर व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकता एक ही है। उसे पूरा करने के पश्चात् यदि वह आगे के लिये प्रयासरत् है तो यह अच्छी बात है लेकिन यह प्रयास अपनी आज की स्थिति में खुश रहकर होना चाहिये न कि नाखुश होकर। आप आज जहाँ, जिस स्थिति में हैं अगर उस स्थिति में खुश नहीं हैं तो फिर किसी भी स्थिति में आप पहुँच जाईये, आप खुश नहीं हो सकते। स्वयं से, स्थिति से अप्रसन्न होकर आप आगे जो भी प्रयास करेंगे वह आपकी कार्यक्षमता को घटायेगा ही, बढ़ायेगा कतई नहीं। इसलिये आगे बढ़ने के लिये जो भी प्रयास करने हैं वह आज में खुश रहकर करने हैं। दुःखी होकर कदापि

नहीं। हमें अपने जीवन में क्या चाहिये, यह केवल और केवल हम ही तय कर सकते हैं दूसरा कोई नहीं। इस संबंध में मैं एक लघु कथा का जिक्र करना चाहूँगी-

एक मछुआरा अपनी आवश्यकतानुसार मछलियाँ पकड़ कर समुद्र किनारे आराम से लेटा था। तभी वहाँ एक बड़ा व्यापारी आया। उसने मछुआरे को आराम से लेटा हुआ देखकर उससे पूछा 'क्या हुआ, मछलियाँ क्यों नहीं पकड़ते?' मछुआरे ने जवाब दिया, 'जितनी जरूरत थी, उतनी तो पकड़ ली। और ज्यादा पकड़ कर क्या करूंगा !' मछुआरे का जवाब सुनकर व्यापारी आश्चर्य से बोला, 'क्या करोगे मतलब! अरे, यहाँ बहुत मछली है। उन्हें पकड़ो। बाजार में बेचो। उनका व्यापार करो.....!'

'अच्छा......!' मछुआरे ने व्यापारी को टोकते हुए पूछा, 'उससे क्या फायदा होगा?'

'तुम अमीर बन जाओगे। तुम्हारे पास धन - दौलत, नौकर - चाकर सब होंगे।'

'अच्छा......! मगर उससे क्या फायदा होगा?' मछुआरे ने फिर पूछा।

'तुम अमीर बन जाओगे तो तुम्हारे सारे काम तुम्हारे नौकर किया करेंगे। तुम आराम से लेटे रहना।"

आराम से तो मैं अभी भी लेटा हूँ। मछुआरे ने बड़ी ही सहजता से कहा, 'फिर इस आराम के लिये इतनी माथापच्ची करने की जरूरत क्या है!'

इस बार व्यापारी के पास मछुआरे के प्रश्न का कोई उत्तर नहीं था।

हम में से अधिकांश लोग भी इसी व्यापारी की तरह हैं जिन्हें यह ज्ञात नहीं है कि उन्हें चाहिये क्या। इसलिये हमें जीवन से चाहिये क्या, यह निर्धारित करना बहुत ही आवश्यक है। दूसरों की देखादेखी बस दौड़ते जाना, किसी भी दृष्टि से समझदारी नहीं कही जा सकती।

5. अब कुछ और ऐसी हमारी आदतें, जो हमें दुःखी करती हैं - मसलन, कमाई से अधिक खर्च करना, बचत न करना, जिन बातों से मतलब नहीं है, उनमें जबरदस्ती टांग अड़ाना, 'न' नहीं कह पाना, अपनी इच्छाओं को अपने वश में न रख पाना, लोगों को माफ न कर पाना, बुरे व्यवहार को भूल न पाना आदि, इत्यादि। ये सभी आदतें हमारी बनाई हुई हैं तो इन्हें सुधारने की भी जिम्मेदारी हमारी ही है। इन वजहों से भी यदि हम दुःखी होते हैं तो हम किसी और को दोषारोपण नहीं कर सकते। हम स्वयं इन आदतों को बनाने और बिगाड़ने की क्षमता रखते हैं।

उक्त सभी बिन्दुओं का तात्पर्य यही है कि हमारे दुःखों की वजह हम और केवल हम ही हैं। अब प्रश्न यह है कि अपने दुःख को सुख में कैसे परिवर्तित किया जाये ! इसका सीधा और सबसे सरल तरीका यह है कि जब भी आपको लगे कि आप दुःखी हैं तो आप अपने आप से बात कीजिये। अपने मन से बात कीजिये। आज हम सभी दूसरों से जाने कितनी - कितनी देर बात कर लेते हैं लेकिन स्वयं से, अपने मन से बात किये हमें एक अरसा हो गया है। हमें स्वयं से ही बात करने का समय नहीं है। लेकिन जब आप दुःखी हों तो यह बहुत जरूरी है कि आप एकान्त में बैठें, स्वयं से बात करें। अपने मन से पूछें कि उसके दुःखी रहने की वजह क्या है और यदि उस वजह को दूर करने की क्षमता आप में है तो उस वजह को दूर कर, अपने दुःख को दूर करें और अगर वजह को समाप्त करने की क्षमता आप में नहीं है तो मन को समझायें और अपने ईश्वर से बात करके अपने दुःख का निवारण करने के लिये उनसे कहें। जब आपको यह लगने लगेगा कि आपकी हर जटिल समस्या का समाधान आपका ईश्वर कर रहा है तो आपका मन स्वयं ही शक्तिशाली होता जायेगा। आपकी आत्मा प्रफुल्लित रहने लगेगी। उस दिन से आप हमेशा और हमेशा खुश रहने लगेंगे। तब आप किसी खुशी की तलाश में कोई कर्म नहीं करेंगे, बल्कि हर कर्म ही खुश होकर करेंगे और तब आप केवल और केवल अपने कर्म करते जायेंगे और आपका ईश्वर आपको अपने अनुसार फल देता जायेगा।

यह यकीन मान कर चलिये कि यदि आपने किसी का कुछ नहीं बिगाड़ा है तो आपका भी कभी कुछ नहीं बिगड़ेगा, लेकिन याद रहे यह खाता केवल इस जन्म का नहीं, बल्कि आपके पूर्व के कई जन्मों से भी चला आ रहा है। पिछले जन्म में आप क्या गड़बड़ कर के आये हैं, उसे ठीक करना तो अब आपके वश में नहीं है, लेकिन इस जन्म में सब अच्छा करना है, इतना संकल्प लेकर, आप अच्छा तो कर ही सकते हैं और अच्छा करते हुये खुश रह सकते हैं।

- "जीवन के छोटे से छोटे क्षेत्र में हिंदी अपना दायित्व निभाने में समर्थ है'' - पुरूषोत्तम दास टंडन

अनुवाद की भारतीय परंपरा

असीम कुमार
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर

भारत में पश्चिमी अनुवाद जैसी परंपरा नहीं क्योंकि यहां की सामाजिक, सांस्कृति, भौगोलिक स्थितियां भिन्न थी। संस्कृत और पाली भाषाओं का प्रचुर साहित्य दुनिया की दूसरी भाषाओं में अनूदित होकर पहुंचा, लेकिन संस्कृत ग्रंथों का पाली, प्राकृत, अपभ्रंश आदि भाषाओं में अनुवाद नहीं हुआ। इन भाषाओं के अनेक ग्रंथों में काफी पंक्तियां संस्कृत का छायानुवाद प्रतीत होती है। प्राकृतिक ग्रंथों के कुछ स्थलों का संस्कृत में यदा-कदा भाषांतरण मिलता है या फिर संस्कृत रचनाओं में प्रयुक्त प्राकृत संवादों का संस्कृत रूपांतरण मिलता है। पर समग्र ग्रंथों का अनुवाद करने का प्रचलन नहीं दिखाई देता है।

प्राचीन भारतीय परंपरा में आंतरभाषायी अनुवाद प्रचुर मात्रा में मिलता है जो एक भाषा के भीतर ही अनुवाद की प्रक्रिया है। प्राचीन भारत मे भाष्य तथा टीका प्रचलित थे । वेदों की व्याख्या भाष्य कहलाती थी और लौकिक संस्कृत ग्रंथों की व्याख्या टीका। दोनों का मूल स्रोत पद-पाठ और निरूक्ति पद्धति थे। पद-पाठ से तात्पर्य है संहिताबद्ध वेद मंत्रों के पदों को पृथक-पृथक करना, जिसके अंतर्गत संधि-विच्छेद, उपसर्ग तथा उदात्तादी स्वरों पर भी प्रकाश डाला जाता है । निरूक्ति से तात्पर्य है किसी शब्द का एक धातु अथवा अनेक धातुओं के साथ संबंध स्थापित करके उसका अर्थ निर्धारित करना। वेदों का सर्वप्रथम भाष्य ब्राहमण ग्रंथों में मिलता है जिनमें वेद मंत्रों की व्याख्या मूलत: यज्ञ संबंधी विभिन्न विधियों को लक्ष्य में रखकर की गई है।वेदों के व्याख्याकारों में स्कंदस्वामी, माधवभट्ट तथा श्रीमददयानंद सरस्वती का नाम उल्लेखनीय है। संस्कृत ग्रंथों के टीका कार में मल्लीनाथ प्रमुख है।

भारत में अंतर्भाषायी अनुवाद की परंपरा छठी शताब्दी में प्रारंभ हुई। इस दौरान संस्कृत, प्राकृत, पाली तथा उभरती हुई क्षेत्रीय भाषाओं के मध्य, उन्हीं भाषाओं में परस्पर उनसे अरबी और फारसी के बीच अनुवाद हुआ। भारतीय परंपरा में अंतर्भाषायी अनुवाद पर दृष्टि डालने पर हम पाते हैं कि सर्वप्रथम पंचतंत्र का अनुवाद हकीम बोरजोई द्वारा पहलवी भाषा में छठी शताब्दी में किया गया। 8वीं से 9वीं शताब्दी के बीच भारतीय कथ्य और ज्ञानाधारित पाठों जैसे 'पंचतंत्र', 'अर्थशास्त्र',

'हितोपदेश', 'योगसूत्र', 'रामायण', 'महाभारत' और भगवद्गीता का अनुवाद अरबी में हुआ। भक्तिकाल के दौरान संस्कृत पाठ विशेष रुप से भगवद्गीता और उपनिषद अन्य भारतीय भाषाओं के संपर्क में आए। इसके फलस्वरूप महत्वपूर्ण भाष्यों की रचना हुई। मराठी संत कवि ज्ञानेश्वर द्वारा गीता का अनुवाद, ज्ञानेश्वरी तथा महाकाव्यों के विभिन्न अनुवाद और विशेष रूप से विभिन्न भाषाओं के संत कवियों द्वारा रामायण और महाभारत के अनुवाद किए गए।

मुगल काल में अनुवाद के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य हुए। अकबर ने अलग से अनुवाद विभाग की स्थापना की थी। इस विभाग में संस्कृत, अरबी, तुर्की एवं ग्रीक भाषाओं की अनेक कृतियों का अनुवाद फारसी भाषा में किया गया। महाभारत का अनुवाद बदायुनी, नकीब खान एवं अब्दुल कादिर ने किया। इस दौरान रामायण, अथर्ववेद, पंचतंत्र, राजतरंगिणी ,लीलावती, भागवतपुराण, नल-दमयंती, सिहासन-बत्तीसी, योगवशिष्ठ, तुजुक-ए-बाबरी आदि का अनुवाद भी फारसी भाषा में किया गया। इसके अतिरिक्त दारा शिकोह द्वारा भी श्रीमद्भागवतगीता तथा उपनिषदों का फारसी भाषा में अनुवाद कराया गया।

उपनिवेशकाल में अनुवाद के क्षेत्र में दो धाराएं देखने को मिलती हैं। जहां एक ओर उपनिवेशवादियों द्वारा अनुवाद को भारतीय परंपरा और मानस पर कब्जा करने का साधन बनाया गया था, वहीं दूसरी ओर राष्ट्र-प्रेम की भावना से ओत-प्रोत हमारे भारतीय मनीषियों ने अनुवाद को स्वत्व की पहचान का माध्यम बनाया। वे आधुनिक चिंतन और ज्ञान विज्ञान से भारतीय समाज को परिचित कराने के लिए भी अनुवाद का कार्य कर रहे थे। हिंदी नवजागरण के लेखक भारतेंदु हरिश्चंद्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी और रामचंद्र शुक्ल के अनुवाद विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने संस्कृत के पांच, बांग्ला के एक और अंग्रेजी के एक नाटक का अनुवाद किया था। रामचंद्र शुक्ल ने जर्मन वैज्ञानिक अन्र्स्र्ट हैकल की पुस्तक 'रिडल ऑफ यूनिवर्स' का 'विश्व प्रपंच' नाम से अनुवाद किया। प्रेमचंद ने भी अनुवाद के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किए। हिंदी नवजागरण के दौरान हिंदी में सबसे अधिक अनुवाद रचनात्मक साहित्य और राजनीतिक - सामाजिक चिंतन के पुस्तकों का बांग्ला से हुआ।

विलियम जोंस द्वारा कालिदास के अभिज्ञान शाकुंतलम के अनुवाद के साथ अंग्रेजी अनुवाद का ब्रिटिश काल चरमोत्कर्ष पर पहुंचा। उपनिवेश काल में ऋग्वेद का एच. एच. विल्सन, शुक्ल यजुर्वेद का टी. एच. ग्रिफिथ, कृष्ण यजुर्वेद का कीथ, सामवेद का जे. स्टीवेंसन तथा अथर्ववेद का लैनमैन के द्वारा अंग्रेजी अनुवाद किया गया। शतपथ ब्राह्मण का जे. ईलिंग तथा 11 उपनिषदों का जी. ए. जैकब ने अंग्रेजी अनुवाद किया। उपनिषदों में इशोपनिषद का अनुवाद सर्वाधिक हुआ है ।

रामायण का पदबद्ध अनुवाद आर. टी. एच. ग्रिफिथ तथा गद्यानुवाद मन्मथनाथ ने किया है। महाभारत का अंग्रेजी गद्य में अनुवाद प्रतापचन्द्र राय ने 11 भागों में प्रस्तुत किया है। भारतीय विद्वानों द्वारा भारतीय मूल पाठों के अंग्रेजी अनुवाद के क्षेत्र में राजा राम मोहन राय द्वारा अनूदित शंकर का वेदांत, केन और ईशावास्योपनिषद पहला भारतीय हस्तक्षेप था। इसके बाद आर.सी.दत्त, दीनबंधुमित्र, अरविंद, रविंद्रनाथ टैगोर आदि ने यथेष्ट अनुवाद किए। श्रीमद्भागवत गीता का अनुवाद तो विश्व की प्रायः सभी प्रमुख भाषाओं में किया जा चुका है। इसके अलावा मेघदूत, अभिज्ञानशाकुंतलम, हितोपदेश, ऋतुसंहार, किरातार्जुनीय, बुद्धचरित, सेतुबंध, साहित्य-दर्पण आदि संस्कृत रचनाओं के भी अनुवाद अंग्रेजी तथा अन्य विदेशी भाषाओं में हो चुके हैं। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अनुवाद कार्य के राजनीतिक उद्देश्य भी अत्यंत प्रमुख और प्रखर हो गए। वैचारिक आदान-प्रदान, राष्ट्रीय सीमा की संवेदनशीलता, वैश्विक मैत्री की संविदाओं के मामले इतने महत्वपूर्ण हो गए कि व्यापारिक संवाद - संप्रेषण और सामाजिक सौहार्द की सीमा पार कर अनुवाद कार्य की भूमिका अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को रेखांकित करने लगी।

भारत की स्वतंत्रता के पश्चात दुनियाभर के देशों का जिस तरह आपसी संबंध बना, उसमें अनुवाद की महत्ता विराट हो गई। आज यहां अनुवाद के क्षेत्र में काफी विकास हुआ है। एक तरह से पेशे के रूप में भी और मुहिम के रूप में भी इस दिशा में काफी लोग आगे आए हैं और काफी निष्ठा और प्रतिबद्धता से इस दिशा में काम कर रहे हैं। अनुवाद साहित्य की हैसियत बढ़ी है। सरकार द्वारा अनुवाद कार्य पर पुरस्कार, जगह-जगह अनुवाद- कार्य में डिप्लोमा पाठ्यक्रम, तुलनात्मक साहित्य पर शोध और विशेष अध्ययन - ये सारी चीजें भारतीय अनुवाद परंपरा के बढ़ते हुए कदम है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भारतीय अनुवाद परंपरा में वैदिक संस्कृत, संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश ग्रंथों का विभिन्न दृष्टियों से अनुवाद हुआ, जो पद - पाठ , निरूक्ति - पद्धति, भाष्य और टीका से होता हुआ अपने उस रूप तक आ पहुंचा जिसे आज हम अनुवाद कहते हैं। अनेक विदेशी और भारतीय भाषाओं में इन ग्रंथों का अनुवाद हुआ है। इसके अतिरिक्त भावानुवाद, प्रेरणानुवाद, मुक्तानुवाद, छायानुवाद आदि अनुवाद के विभिन्न रूपों में भी भारतीय भाषाओं में कार्य संपन्न हुआ है।

❖ हिंदी साहित्य की नकल पर कोई और साहित्य तैयार नहीं होता - सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

पर्यावरण अनुकूल खनन : चुनौतियां, संसाधन संरक्षण एवं सतत विकास

डॉ. इप्सिता मोहनराम
सहायक अयस्क प्रसाधन अधिकारी,
भारतीय खान ब्यूरो, हिंगणा, नागपुर

"हर एक प्रमुख एवं लघु खनिज मूल्यवान और समान रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि सभी खनिजों का दैनिक जीवन में कुछ न कुछ महत्व है।"

प्रकृति का संतुलन बनाए रखने के लिए हर क्षेत्र में पर्यावरणीय संबंधी कार्यों का महत्व बढ़ता जा रहा है। उद्योग हो या व्यष्टिक कारोबार, समान रूप से हर जगह प्रदूषण रहित जीवन शैली के लाभों की प्रशंसा हो रही है। स्थिरता, संरक्षण एवं पर्यावरण की दृष्टि से सौम्य प्रथाओं की ओर झुकाव बढ़ता जा रहा है। लगभग सभी उद्योगों में हरित प्रौद्योगिकी नवीनतम प्रवृत्ति बन गई है, हालांकि खनन ने स्थायी और पर्यावरणीय प्रथाओं को पहले से ही प्राथमिकता दी है। यह एक उच्च पहल है क्योंकि पृथ्वी से संसाधन सीमित है और उच्च श्रेणी के अयस्कों की मात्रा एवं प्रतिशत निरंतर घटती जा रही है। राष्ट्रीय विकास और सुधार के लिए खनिज संरक्षण के दृष्टिकोण से निम्न श्रेणी के अयस्कों एवं अपशिष्टों का सज्जीकरण अधिक महत्वपूर्ण हो गया है, जिसकी सुरक्षा और संधारण प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। हरित प्रौद्योगिकी का जिम्मेदारी और कुशलता से पालन करना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना औद्योगिक परियोजनाओं का प्रबंधन। पारिस्थितिक रूप से खनन को प्रौद्योगिकियों की सर्वोत्तम प्रथाओं और खदान प्रक्रियाओं के रूप में परिभाषित किया गया है जो धातुओं और खनिजों के निष्कर्षण और प्रसंस्करण से जुड़े पर्यावरणीय प्रभावों को कम करने के लिए एक साधन के रूप में कार्यान्वित किया जाता है। खनन उद्योग रोजमर्रा की ज़िन्दगी की उपयोगिताओं में योगदान देता है और आनेवाले दशकों के लिए अभियांत्रिकी उपलब्धियों की नींव भी प्रदान करता है।

प्रौद्योगिकी के इस आधुनिक युग में, ऊर्जा और जल आपूर्ति, परिवहन, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य, कृषि और संचार, सड़कों के निर्माण आदि को सक्षम करनेवाले जीवन के लगभग सभी पहलुओं में धातु और खनिज आवश्यक हैं। धातुओं और खनिजों के बिना कोई

मोबाइल फोन, कंप्यूटर, इलेक्ट्रिकल वायरिंग या पेंट, टूथपेस्ट, कारें, जहाज, विमान, उत्खनन, क्रेन, पुल, बिजली संयंत्र, अंतरिक्ष स्टेशन और बहुत सी चीजें नहीं होंगी जो हमारे रोजमर्रा के जीवन का हिस्सा हैं। लगभग हर खनिज और धातु आज किसी न किसी रूप में खनन का उत्पाद है, जिसका उपयोग अंतहीन है।

राष्ट्र के विकास में निर्माण से लेकर तकनीकी नवाचारों तक, खनन हमारे जीवन के लगभग हर पहलू की कुंजी है। परंतु खनन कार्यो को प्रबंधित किए जाने के लिए लाभ और संघातों के बीच उचित संतुलन बनाए रखना आवयशक है। मानव, पशु और पर्यावरण का ध्यान रखते हुए, खनन कार्यों में सतत विकास का कार्यान्वयन किए जाने पर संतुलन प्राप्त किया जा सकता है। प्रमुख महत्व यह नहीं है कि खनन कैसे धारणीय हो सकता है, बल्कि खनन, खनिज और धातु कैसे सतत विकास में योगदान कर सकते हैं।

खनन गतिविधियाँ, जिसमें खदान के पूर्वेक्षण, अन्वेषण, निर्माण, संचालन, रख-रखाव, विस्तार, परित्यजन, विघटन और पुनरुत्पादन शामिल हैं, सामाजिक और पर्यावरणीय प्रणालियों को सकारात्मक और नकारात्मक एवं प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष तरीकों से प्रभावित कर सकते हैं। यह पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभावों के साथ जुड़े हैं, जिसमें निर्वनीकरण, अपक्षरण, मृदा में परिवर्तन और संदूषण, स्थानीय धाराओं और आर्द्र भूमि के संदूषण, ध्वनि स्तर में वृद्धि और धूल उत्सर्जन शामिल हैं। खानों से परे, खनन गतिविधियों का समर्थन करने के लिए बनाया गया बुनियादी ढांचा, जैसे कि सड़क, बंदरगाह, रेलमार्ग एवं बिजली लाइनें, पशुओं के प्रवासी मार्गों को प्रभावित कर निवास स्थान के विखंडन को बढ़ा सकते हैं। खनन को आसपास के समुदायों में रहने वाले स्वदेशी लोगों की पारंपरिक प्रथाओं और भूमि उपयोग, सार्वजनिक स्वास्थ्य और मानव भलाई में संघर्ष को प्रभावित करने के लिए भी जाना जाता है। सकारात्मक प्रभावों के संदर्भ में, खनन अक्सर स्थानीय रोजगार का एक स्रोत होता है और स्थानीय और क्षेत्रीय अर्थव्यवस्थाओं में योगदान प्रदान सकता है। पर्यावरणीय प्रणालियों पर सकारात्मक शुद्ध प्रभाव जल उपचार एवं पारिस्थितिक बहाली के माध्यम से संभावित पर्यावरणीय प्रभावों का निवारण किया जा सकता है।

कभी कभी नदियों को फिर से कराई करने की आवयशकता होती है कई खनन गतिविधियों से एक महत्वपूर्ण प्रभाव जल की गुणवत्ता एवं उपलब्धता पर पड़ता है। ताकि वें खदानों में बाढ़ की स्थिति उत्पन्न न करें। इसी समय, भूजल को भी खदान में नहीं भरने के लिए पंप करने की आवश्यकता होती है। परिदृश्य को बाधित करने और संभवतः बांध या फिर से नदियों और भूजल की कराई से, खदान से लंबी दूरी के जल के बहाव की उपलब्धता पर संघात पड़ सकता है। यह वनस्पतियों, जीवों, स्थानीय समुदायों और अन्य उद्योगों को प्रभावित करने में भी सक्षम है। जल

की गुणवत्ता का प्रभाव संभावित स्थानीय समुदायों के स्वास्थ्य पर हो सकता है एवं पर्यावरण, वनस्पतियों और जीवों को भी प्रभावित करने की आशंका होती है। खदान में बड़ी मात्रा में जल का उपयोग होता है जो कुछ समय के लिए पर्यावरण को साभिप्राय या अनभिप्रेत रूप में जारी किया जाता है, और इसकी संरचना के आधार पर यह पर्यावरण को संभावित रूप से नुकसान पहुंचा सकता है। जल द्वारा खनिजों को रिसने की प्रक्रिया की संभावना अपशिष्ट पत्थरों के संपर्क में आने से हो सकती है जिसकी वजह से धातुओं और अन्य हानिकारक तत्वों का पर्यावरण में विमोचन होना संभव है। खदानों में इस्तेमाल हुए जल एवं खान अपशिष्ट पर नियंत्रण रखने से जल की गुणवत्ता पर पड़ रहे प्रभाव को कम किया जा सकता है। अधिकांश खानों पर इसका महत्वपूर्ण पर्यावरणीय प्रभाव होता है।

वायु की गुणवत्ता पर प्रभाव उस तरीके से नियंत्रित किया जाता है जिस तरह से खदान का प्रबंधन किया जाता है क्यूंकि खनन कार्यों से धूल में हानिकारक तत्व हो सकते है। धूल की एक बड़ी मात्रा, भले ही महत्वपूर्ण मात्रा में विषैले तत्वों से युक्त न हो, हानिकारक भी हो सकती है जो सांस लेने पर या धूल से दूषित जल स्रोत, स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते है। धूल को अक्सर ढलती सड़कें, खुले गड्ढों की दीवारों और अपशिष्ट पत्थरों के ढेर पर जल के छिड़काव से नियंत्रित किया जाता है। वायु गुणवत्ता पर नकारात्मक प्रभाव प्रगालकों, प्रसंस्करण संयंत्रों, यंत्रों या बिजली संयंत्रों से गैस उत्सर्जन से होने की सम्भावना होती है। इनमें भारी धातु या तेजाब के धुएं हो सकते हैं जो पर्यावरण के लिए हानिकारक सिद्ध होते है। इन उत्सर्जन को अक्सर छननी और ग्रिप गैस स्वच्छक को स्थापित करके नियंत्रित किया जाता है।

ध्वनि प्रदूषण भी खनन के प्रभाव में से एक है, जिसमें वाहन के इंजनों से शोर, पत्थरों को इस्पात के डंपर पर लादना और उतारना, च्यूट, बिजली उत्पादन इत्यादि शामिल हैं। खुदाई, ड्रिलिंग, ब्लास्टिंग, परिवहन, पेराई, पिसाई एवं माल संचयन के संचयी प्रभाव वन्य जीव और आसपास के निवासियों को काफी प्रभावित कर सकते हैं। वन्यजीवों पर खनन का प्रभाव स्थान और खदान का आकार, जल की उपलब्धता और सुरक्षा उपायों जैसे कारकों के आधार पर अधिक हो सकता है। आधारभूत अध्ययन में वन्यजीव प्रलेखन महत्वपूर्ण है, और कुछ प्रजातियों की निरंतर जांच इस बात की अधिक जानकारी दे सकती है कि पर्यावरण का खदान से क्या प्रभाव है। पशुओं को खनन प्रक्रिया से बचाने के लिए बाड़ जैसे सुरक्षा उपाय स्थापित किए जा सकते हैं।

चूंकि खनन उद्योग में बड़ी मात्रा में ऊर्जा की खपत होती है, इसलिए खनन परियोजना का जलवायु प्रभाव महत्वपूर्ण कहलाता है। ग्रीनहाउस गैसों की निर्मुति, अयस्क प्रसंस्करण और ऊर्जा की खपत खनन प्रक्रिया से जलवायु के प्रभाव हैं जो खोए हुए जंगलों और वनस्पतियों में कार्बन के

अपक्षय से प्रभावित होते हैं। खनन से बड़ी मात्रा में अपशिष्ट का उत्पादन होता है, हालांकि हर अपशिष्ट को पर्यावरण के लिए हानिकारक नहीं माना गया है। कुछ अपशिष्ट उनकी रासायनिक एवं कुछ उनकी खनिज संरचना के आधार पर आवश्यक उपचार के बाद अन्य अनुप्रयोगों के उपयोग में लाने के लिए सुरक्षित होते हैं। हांलाकि अपशिष्ट पत्थरों का अनुचित प्रबंधन जिसमें पर्याप्त मात्रा के खनिज उपस्थित हों, स्थानीय समुदायों के स्वास्थ्य और पर्यावरण के लिए एक बड़ा संकट बन सकता है। खदान के पूर्ण जीवन काल में अपशिष्ट एवं अवशेष की उत्पन्नति खनन प्रक्रिया के कई चरणों से होती है, जैसेकी पहले अन्वेषण के ड्रिलिंग परियोजना से उत्पन्न, खदान बंद होने के पूर्व का अंतिम संसाधित पदार्थ तक। खनन संचालन से बड़ी मात्रा में अपशिष्ट पत्थरों, अवशेष एवं अपशिष्ट जल का उत्पादन होता है जो आनेवाले समय में बड़ी समस्या का विषय बन सकता है।

जल मूल्यवान है, और अक्सर पुनर्नवीनीकरण कर विभिन्न प्रक्रियाओं में इसका उपयोग किया जाता है। खदान एवं प्रसंस्करण संयंत्र के भीतर कई प्रक्रियाओं में जल का उपयोग होता है। कुछ प्रक्रियाएं, जैसे पिसाई, जिसमे बड़ी मात्रा में जल की आवश्यकता होती है, धातु एवं अन्य हानिकारक तत्व संभावित रूप से जल को दूषित कर सकते हैं। अंत में जल को एकत्र कर पर्यावरण को जारी किया जाता है। कभी-कभी जल को बहाने या मिलाने से पहले अलग-अलग तरीकों से शुद्ध करना अनिवार्य होता है। खदान के जल के उपचार में अक्सर चूना पत्थर या कास्टिक सोडा के साथ जल के पीएच को ऊपर उठाना शामिल होता है, जिसके कारण धातुएं प्रबल होकर सतह में बैठ जाते हैं। कुछ स्थिति में जल को भौतिक, रासायनिक या जैविक प्रक्रियाओं का उपयोग कर शुद्ध किया जा सकता है।

प्रसंस्करण में उपयोग किए जाने वाले रसायनों की मात्रा बहुत कम होती है, परन्तु निम्न संकेंद्रण में भी उच्च विषाक्तता की वजह से खतरे की सम्भावना बढ़ जाती है। सोने के निष्कर्षण में इस्तेमाल होने वाला एक आम रसायन साइनाइड है जो सोने के अयस्क का विलयन जलीय घोल में करता है, जिससे यह एक सरल और लागत प्रभावी तकनीक बन जाती है। साइनाइड अत्यधिक जहरीला तत्व है, लेकिन जलीय साइनाइड सूरज की पराबैंगनी किरणों के संपर्क में आने से आसानी से विभाजित हो कर कम विषाक्त में परिवर्तित हो जाते हैं। आमतौर पर इसे रसायनों द्वारा निष्क्रिय कर कम विषाक्त बनाकर इसका निपटान करने की कार्यप्रणाली है जिसका और सोने के अयस्क के प्रसंस्करण की प्रयोगशाला एवं प्रायोगिक संयंत्र में पालन किया जाना अनिवार्य है।

मूल्यवर्धन के अलावा संसाधन संरक्षण में भी खनिज प्रसंस्करण की महत्वपूर्ण भूमिका है। हालांकि, खनिज प्रसंस्करण आर्थिक रूप से महंगी प्रक्रिया है, परन्तु यह खनिजों का श्रेणीकरण उनके बहुमुखी अनुप्रयोगों अथवा बाजार मूल्य के अनुसार करने में अत्यधिक लाभकारी है जिससे

देश की अर्थव्यवस्था के साथ-साथ खनिज के मूल्यवर्धन में भी वृद्धि होती है। अयस्कों के प्रसंस्करण में पहचान तथा अयस्क खनिजों के लक्षणों के वर्णन की जानकारी आवश्यक है। खनिज संरचना के आधार पर मूल्यवान खनिजों एवं संबंधित अपशिष्ट खनिजों के अध्ययन से खनिजों के निष्कर्षण करने की प्रक्रिया का चयन आसानी से किया जा सकता है। अमेनाबिलिटी अध्ययन द्वारा धातुओं एवं खनिजों के उपयुक्त ग्रेड को प्राप्त करने की संभावनाओं का पता लगाया जा सकता है। यह परीक्षण मूल रूप से प्रारंभिक होता है जो अयस्कों की लाभकारी विशेषताओं का आकलन करने के लिए एक उचित हैं जिससे खनन अथवा अयस्कों के प्रसंस्करण के किफायती होने की जानकारी प्राप्त होती है। यह विभिन्न अयस्कों और खनिजों की तकनीकी-आर्थिक व्यवहार्यता के मूल्यांकन में भी उपयोगी है। गहन अनुसंधान और विकास के अध्ययन द्वारा, स्वदेशी और समकालीन तकनीकों के संयोजन से खनिज के लक्षण वर्णन में अपशिष्ट के उत्पादन को निम्न करने के विश्लेषण में यह मूल्यवान उपकरण है। इसके विपरीत, खनिज प्रसंस्करण के अध्ययन से अवशेष खनिजों का निष्कर्षण अथवा खनिज लक्षण वर्णन के आधार पर अवशेषों और अपशिष्टों को पुनःउपयोग में लाए जाने एवं दुर्लभ मृदा तत्व के अन्वेषण की विधि को प्राप्त करने में भी प्रभावी है।

आधुनिक जीवन शैली और सतत विकास लक्ष्यों की उपलब्धि के लिए धातुओं एवं खनिजों के मूलभूत महत्व को तेजी से पहचाना जाता है, जैसा कि जरूरी है कि वे जिम्मेदारी से निर्मित हों। खनन में हरित प्रौद्योगिकी ऊर्जा दक्षता, ग्रीनहाउस गैसों की कमी, पारिस्थितिक पदचिह्न को कम करने और रासायनिक उपयोग में कमी के लिए बेहतर प्रदर्शन प्रदान करती है। यह खनन उद्योग के लिए परिचालन लागत को कम करने और इसकी प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार करने में भी मदद करता है। धातुओं के व्यावहारिक उपयोग के अलावा, धातुओं के गुणों और उनके जीवन चक्र प्रभावों को समझने के लिए अनुसंधान में निवेश करना सार्थक है। स्क्रैप धातु के पुनर्चक्रण के कई लाभ हैं विशेष रूप से पर्यावरण, सामाजिक और सामुदायिक प्रभाव। पुनर्चक्रण धातु उत्पादन में प्रयुक्त ऊर्जा की पर्याप्त मात्रा को उत्सर्जन द्वारा कम कर विभिन्न गलाने और प्रसंस्करण कार्यों के विस्तार में वृद्धि की जा सकती है। दिशा निर्देशों के अनुसार उचित तरीके से अपशिष्ट निपटान खानों के पर्यावरणीय प्रभाव को रोकने के लिए महत्वपूर्ण है, जो अवशेषों को पुन: योग्य सामग्री में बदलने में मदद करते हैं, साथ ही ऐसी नीतियों को भी पालन किया जाता है जो अधिक पर्यावरण के अनुकूल अपशिष्ट निपटान के लिए अनुमति प्रदान करते हैं।

जल को पुन:चक्रित एवं पुन:उपयोग में लाया जा सकता है ताकि संरक्षण के लिए इसका उपयोग किया जा सके। यह जल की अभाव के क्षेत्रों में अधिक फायदेमंद साबित हो सकता है। सामग्री प्रवाह विश्लेषण का संचालन निष्कर्षण, उत्पादन, निर्माण, उपयोग एवं पुनर्चक्रण और

अंतिम निपटान के माध्यम से प्राकृतिक संसाधनों के भौतिक प्रवाह पर नज़र रखा जा सकता है। यह आँकड़े नई प्रक्रियाओं को विकसित करने के लिए प्रेरित करेंगे जो पहले की तुलना में अधिक कुशल और टिकाऊ साबित होंगे।

सतत् विकास एक ऐसा विकास है जो भविष्य की पीढ़ियों की अपनी जरूरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान की जरूरतों को पूरा करता है। यह पर्यावरण की अखंडता, सामाजिक चिंताओं और प्रभावी शासन के साथ आर्थिक गतिविधि को एकीकृत करता है। परन्तु आज भी खनन के कारण पर्यावरणीय समस्याओं को कम करने के लिए एक लंबा रास्ता तय किया जाना है। हालांकि, प्रौद्योगिकी और नवाचार का लाभ उठाने के लिए पहले से ही पहल की गई है, जो हमें एक कदम हरियाली की ओर ले जाती है जिससे स्थायी कल का निर्माण निश्चित है।

- ❖ आज का लेखक विचारों और भावों के इतिहास की वह कड़ी है जिसके पीछे शताब्दियों की कड़ियाँ जुड़ी है - माखनलाल चतुर्वेदी

- ❖ संस्कृत माँ, हिंदी गृहिणी और अंग्रेजी नौकरानी है - डॉ. फादर कामिल बुल्के
- ❖ हिंदी और नागरी का प्रचार तथा विकास कोई भी रोक नहीं सकता - गोविन्द वल्लभ पंत

<u>संविधान हमारा</u>

प्रशांत तिनगुरीया
आशुलिपिक
भारतीय खान ब्युरो, नागपुर

सबसे है प्यारा, सबसे है न्यारा,

ये है संविधान हमारा।

'भारतरत्न' डॉ. अम्बेडकर है इसके प्रणेता,

मानते हैं इनका लोहा, देश के बड़े-बड़े नेता।

इसको पाकर हमें है गर्व भारी,

करते हैं सभी देश इसकी प्रशंसा भुरि-भुरि।

भगवान बुद्धा के हैं पाँच तत्व,

कहते हैं हम जिसे पंचशील,

दया, प्रज्ञा, शील, करुणा, और प्रेम, निश्छल।

देता हमें समान न्याय एवं स्वतंत्रता का अधिकार,

पर साथ में देता है कर्तव्य का भार।

धर्म निरपेक्षता से इसे है प्यार,

हिंदु, मुस्लिम, सिख, ईसाई से करता समान व्यवहार,

जैसे एक पिता के बेटे हो चार।

कश्मीर से कन्याकुमारी तक है इसका राज,

जैसे हो ये हमारे देश का ताज।

<u>हिंदी अनुभाग</u>

<u>अप्रैल, 2019 से मार्च, 2020 तक हिंदी संबंधी कार्यों का विवरण ।</u>

भारतीय खान ब्यूरो अपने मुख्यालय तथा सभी अधीनस्थ कार्यालयों में भारत सरकार की राजभाषा नीति को प्रभावी ढंग से कार्यान्वित कर रहा है । भारतीय खान ब्यूरो का मुख्यालय नागपुर, महाराष्ट्र में है जो 'ख' क्षेत्र में स्थित है। 07 अधीनस्थ कार्यालय 'क' क्षेत्र में, 02 अधीनस्थ कार्यालय 'ख' क्षेत्र में तथा शेष 08 अधीनस्थ कार्यालय 'ग' क्षेत्र में स्थित है। भारतीय खान ब्यूरो के सभी अधीनस्थ कार्यालयों ने राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम उल्लिखित लक्ष्यों को प्राप्त कर लिया है। वर्ष 2019-20 के दौरान हिंदी कार्यान्वयन से संबंधित प्रगति का विवरण निम्न प्रकार है :-

1. मुख्यालय में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक : विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 110 वीं बैठक दिनांक 14/06/2019 , 30/09/2019 को 111 वीं बैठक, दिनांक 11/12/2019 को 112वीं बैठक तथा दिनांक 23/03/2020 को 113 वीं बैठक का आयोजन किया गया । इन बैठकों में भाषा एवं टंकण प्रशिक्षण, हिंदी के रिक्त पदों को भरा जाना, नियम 10(4) एवं 8(4) के तहत अधिसूचना जारी करना, धारा 3(3) का उल्लंघन, हिंदी कार्यशाला आयोजित करना, अधीनस्थ कार्यालयों का राजभाषा निरीक्षण आदि अनेक विषयों पर विस्तृत चर्चा की गई। साथ ही सभी क्षेत्रीय कार्यालयों में भी राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का नियमित आयोजन किया जाता है और रिपोर्ट मुख्यालय को भेजी जाती है।

दिनांक 14/06/2019 को विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 110 वीं बैठक की अध्यक्षता करते हुए श्रीमती इंदिरा रविन्द्रन, निदेशक (अयस्क प्रसाधन), भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर।

दिनांक 30/09/2019 को विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 111 वीं बैठक की अध्यक्षता करते हुए श्रीमती इंदिरा रविन्द्रन, निदेशक (अयस्क प्रसाधन), भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर।

2. हिंदी पखवाड़ा - 2019 का आयोजन :- भारतीय खान ब्यूरो (मुख्यालय) नागपुर में दिनांक 03/09/2019 से दिनांक 17/09/2019 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। श्री पी. एन. शर्मा, मुख्य खान नियंत्रक (प्रभारी) भारतीय खान ब्यूरो एवं डॉ. रंजीत रथ, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, एम.ई.सी.एल., नागपुर ने दिनांक 03/09/2019 को दीप प्रज्ज्वलित कर हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन किया।

डॉ. रंजीत रथ, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, एम.ई.सी.एल., नागपुर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस अवसर पर डॉ. पी. के. जैन, मुख्य खनिज अर्थशास्त्री एवं राजभाषा अधिकारी तथा श्री एस. के. अधिकारी, मुख्य खनन भूविज्ञानी भी उपस्थित थे।

अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री पी. एन. शर्मा, मुख्य खान नियंत्रक (प्रभारी) ने दैनंदिन कार्यालयीन कार्य अधिकाधिक हिंदी में ही करने पर बल दिया। साथ ही उन्होंने कहा कि हिंदी हमारी निज भाषा है तथा यह भाषा अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम है। हमें अपनी भाषा के प्रति आदर और सम्मान होना चाहिए तथा हिंदी को हमें प्राकृतिक एवं स्वाभाविक रूप में ही अपनानी चाहिए। उन्होंने भारतीय खान ब्यूरो मुख्यालय में हिंदी संबंधित कार्यों में हो रही प्रगति की सराहना की तथा इसमें और वृद्धि की आशा जताई।

समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. रंजीत रथ ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि राजभाषा हिंदी का विकास सिर्फ सीमित दायरे में ही रहकर नहीं हो सकता है । हमें हिंदी के विकास के लिए अपने सीमित दायरे से बाहर निकलकर कार्य करना होगा।

इसके पूर्व श्री एस. के. अधिकारी ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि हिंदी पखवाड़े के दौरान अंतरविभागीय प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाना चाहिए ताकि विभिन्न विभागों के कार्मिक समान रूप से प्रतियोगिता में भाग ले सकें।

राजभाषा अधिकारी डॉ. पी. के. जैन ने स्वागत भाषण दिया तथा भारतीय खान ब्यूरो कार्यालय की हिंदी प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसके अंतर्गत वर्षभर का लेखा - जोखा प्रस्तुत किया गया। तत्पश्चात उन्होंने हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित होने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं की जानकारी दी।

हिंदी पखवाड़ा के उद्घाटन समारोह का संचालन कु. प्रतिभा शर्मा, भंडार लिपिक ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन श्री अभिनय कुमार शर्मा, सहायक संपादक द्वारा दिया गया। उद्घाटन समारोह की सफलता हेतु हिंदी अनुभाग के श्रीमती मिताली चटर्ली वरिष्ठ हिंदी अनुवादक, श्री असीम कुमार, हिंदी अनुवादक, श्री किशोर डी. पारधी, हिंदी अनुवादक, श्री श्रीनाथ, हिंदी अनुवादक, श्री प्रदीप कुमार सिन्हा, अवर श्रेणी लिपिक, श्री एन. एम. मोरे, प्रेसमैन तथा श्री ए. के. नाल्हे, एम.टी.एस. ने अपना पूर्ण योगदान दिया।

हिंदी पखवाड़ा के अवसर पर केंद्रीय पुस्तकालय, भारतीय खान ब्यूरो के सहयोग से आयोजित 'राजभाषा पुस्तक प्रदर्शनी' का भी उद्घाटन श्री पी. एन. शर्मा, मुख्य खान नियंत्रक (प्रभारी) एवं डॉ. रंजीत रथ, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, एम.ई.सी.एल. द्वारा किया गया। यह पुस्तक प्रदर्शनी दिनांक 03/09/2019 से 13/09/2019 तक प्रतिदिन आयोजित की गई जिनमें राजभाषा, अनुवाद, कम्प्यूटर, तकनीकी, स्वास्थ्य, व्यक्तित्व विकास, पर्यटन, महान व्यक्तित्व, खेल - कूद साहित्य, धर्म, दर्शन, अध्यात्म, काव्य, नाटक, उपन्यास एवं कहानियां विषयक पुस्तकें प्रदर्शित की गई। उक्त प्रदर्शनी में करीब 500 पुस्तकों का प्रदर्शन किया गया तथा करीब 80 कार्मिकों ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

हिंदी का आयोजन दिनांक 03/09/2019 से 17/09/2019 तक किया जाएगा, जिसके दौरान हिंदी निबंध, टिप्पण आलेखन, हिंदी अनुवाद, तात्कालिक वाक, हिंदी टंकण, हिंदी शुद्धलेखन एवं हिंदी प्रश्न मंच प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। अधिक से अधिक कार्मिकों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से ये प्रतियोगिताएं हिंदी एवं हिंदीत्तर भाषी वर्गों के लिए अलग - अलग आयोजित की गईं। उक्त सभी प्रतियोगिताओं में अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़ - चढ़कर हिस्सा लिया। पखवाड़े के दौरान कुल - 13 प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं जिनमें करीब 60 कार्मिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। साथ ही वर्ष के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु तीन प्रभागों / अनुभागों यथा खनिज अर्थशास्त्र प्रभाग, मुख्य खान नियंत्रक

कार्यालय एवं खान नियंत्रक (मध्य) कार्यालय को क्रमश: प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया।

दिनांक 17/09/2019 को निदेशक (अयस्क प्रसाधन), श्रीमती इन्दिरा रविन्द्रन की अध्यक्षता में हिंदी दिवस, हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर वी. एन. आई. टी., नागपुर के निदेशक, डॉ. प्रमोद पडोले मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। साथ ही श्री पी. एन. शर्मा, मुख्य खान नियंत्रक (प्रभारी), श्री एस. के. अधिकारी, मुख्य खनन भूविज्ञानी एवं डॉ. पी. के. जैन, मुख्य खनिज अर्थशास्त्री एवं राजभाषा अधिकारी भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

कार्यक्रम के आरंभ में डॉ. पी. के. जैन, राजभाषा अधिकारी द्वारा माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार श्री अमित शाह जी का संदेश वाचन किया गया। श्री पी. एन. शर्मा द्वारा माननीय संसदीय कार्य, कोयला तथा खान मंत्री, भारत सरकार श्री प्रल्हाद जोशी जी का संदेश पढ़ा गया।

हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह के अवसर पर भारतीय खान ब्यूरो नागपुर की हिंदी गृह पत्रिका 'खान भारती' - 2019 का विमोचन भी किया गया।

सभा को संबोधित करते हुए श्रीमती इन्दिरा रविन्द्रन ने राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग पर बल दिया और कहा कि संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का अत्यंत ही महत्वपूर्ण स्थान है। इसके पूर्व सभा को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि डॉ. प्रमोद पडोले ने कहा कि सभी सरकारी कर्मचारियों को अपना दैनंदिन कार्य हिंदी में करना चाहिए। इसके पूर्व सभा को संबोधित करते हुए श्री पी. एन. शर्मा, मुख्य खान नियंत्रक (प्रभारी) ने कहा कि हिंदी भाषा का विकास अवश्य होना चाहिए परंतु साथ ही अन्य भाषाओं का निरादर भी नहीं होना चाहिए। राजभाषा अधिकारी डॉ. पी. के. जैन ने हिंदी पखवाड़े के दौरान की गई गतिविधियों और विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन की जानकारी सभा के समक्ष रखी।

हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित की गई विभिन्न हिंदी विषयक प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों को अध्यक्ष, मुख्य खान नियंत्रक (प्रभारी), मुख्य अतिथि महोदय एवं राजभाषा अधिकारी द्वारा पुरस्कार वितरित किए गए।

3. हिन्दी पारंगत परीक्षा :- हिन्दी शिक्षण योजना, नागपुर के अंतर्गत दिनांक 22 मई, 2019 को आयोजित हिन्दी पारंगत परीक्षा में भारतीय खान ब्यूरो के 25 प्रशिक्षणार्थी सम्मिलित हुए एवं परीक्षा पास की।

4. **खान मंत्रालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के निर्णयों पर अनुवर्ती कार्रवाई :-** खान मंत्रालय, नई दिल्ली के दिनांक 29/03/2019 को हुई राजभाषा कार्यान्व्यन समिति की बैठक के निर्णयों पर अनुवर्ती कार्रवाई की गई एवं मंत्रालय को प्रेषित की गई ।

5. **संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, भूवनेश्वर का राजभाषा निरीक्षण :-** संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, भूवनेश्वर का दिनांक 20/02/2020 को राजभाषा निरीक्षण किया गया। इस संबंध में निरीक्षण प्रश्नावली से संबंधित जानकारी के 03 पृष्ठ तैयार किए गए एवं उक्त निरीक्षण से संबंधित अन्य आवश्यक कार्य किए गए। उक्त निरीक्षण के दौरान भारतीय खान ब्यूरो (मुख्यालय), नागपुर से डॉ. पी. के. जैन, मुख्य खनिज अर्थशास्त्री एवं राजभाषा अधिकारी उपस्थित हुए।

6. **हिंदी अनुभाग द्वारा लॉकडाउन अवधि के दौरान हिंदी संबंधी कार्यों का विवरण एवं उपलब्धि -:** खान मंत्रालय, नई दिल्ली को भेजे जाने हेतु भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर के हिंदी अनुभाग द्वारा लॉक डाउन अवधि (जनवरी - मार्च, 2020) के दौरान हिंदी संबंधी किए गए कार्यों का विवरण तैयार किया गया एवं प्रेषित किया गया।

7. **डिस्प्ले बोर्ड हेतु पावर प्वाईंट में हिंदी और अंग्रेजी के संशोधित शब्दावली का निर्माण :-** भारतीय खान ब्यूरो (मुख्यालय), नागपुर के डिस्प्ले बोर्ड हेतु निदेशानुसार हिंदी और अंग्रेजी के संशोधित शब्दावली का निर्माण पावर प्वाईंट में किया गया एवं डिस्प्ले हेतु भंडार अनुभाग को प्रेषित किया गया।

8. **राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी निरीक्षण :-** भारतीय खान ब्यूरो, मुख्यालय के प्रकाशन अनुभाग, केंद्रीय पुस्तकालय, स्थापना अनुभाग, आधुनिक खनिज प्रसंस्करण प्रयोगशाला एवं प्रायोगिक संयंत्र, हिंगणा, बजट अनुभाग, टी.एम.पी. प्रभाग, सतर्कता अनुभाग, भंडार अनुभाग, प्रशिक्षण केंद्र, जी. एम. सेल, एम. एम. एस. प्रभाग, तकनीकी सचिव, खनिज अर्थशास्त्र प्रभाग, नागपुर क्षेत्रीय कार्यालय तथा मुख्य खान नियंत्रक कार्यालय, भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर भारतीय खान ब्यूरो का राजभाषा संबंधी निरीक्षण रिपोर्ट भेज दी गई है। इसी तरह क्रमश: भूवनेश्वर क्षेत्रीय कार्यालय एवं रायपुर क्षेत्रीय कार्यालय का राजभाषा निरीक्षण क्रमश: डॉजैन .के .पी ., राजभाषा अधिकारी एवं अभिनय कुमार शर्मा सहायक संपादक अधिकारी द्वारा किया गया।

9. हिंदी कार्यशाला का आयोजन :- भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन एवं हिंदी के प्रचार - प्रसार व प्रगति के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए भारतीय खान ब्यूरो, मुख्यालय, नागपुर में दिनांक 11 जून, 2019 को अधिकारियों एवं कर्मचारियों हेतु एक पूर्ण दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस हिंदी कार्यशाला में कुल 20 अधिकारी एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिय। इसी तरह दिनांक 16/09/2019 को अधिकारियों एवं कर्मचारियों हेतु एक विशेष अर्द्ध दिवसीय दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें कुल 43 अधिकारी एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। तत्पश्चात दिनांक 10/12/2019 एवं 17 मार्च 2020 को भी भारतीय खान ब्यूरो मुख्यालय में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिनमें क्रमश: 20 तथा 26 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

उक्त कार्यशालाओं में सभी प्रतिभागियों ने अपनी विशेष रूचि दिखाते हुए व्याख्याताओं से अपनी समस्याओं का निवारण किया साथ ही ऐसी कार्यशाला समय - समय पर नियमित रूप से आयोजित किए जाने की इच्छा व्यक्त की। कार्यशाला के पश्चात सभी प्रतिभागियों से कार्यशाला के विषय में उनकी प्रतिक्रियाएं भी प्राप्त की गई। सभी प्रतिभागियों ने सकारात्मक प्रतिक्रियाएं व्यक्त की तथा अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सुझाव दिया कि इस प्रकार की हिंदी कार्यशाला समय - समय पर होनी चाहिए तथा तकनीकी विषयों पर भी कार्यशाला आयोजित करने के सुझाव दिए।

10. तकनीकी एवं प्रशासनिक पत्रों का अनुवाद कार्य :- वर्ष के दौरान महत्वपूर्ण तकनीकी एवं प्रशासनिक दस्तावेजों का अनुवाद हिंदी में किया गया। वर्ष 2019 -20 हेतु बजट निष्कर्ष का करीब 50 पृष्ठ और वर्ष 2018-19 का खान मंत्रालय के वार्षिक रिपोर्ट के करीब 100 पृष्ठों का हिंदी में अनुवाद किया गया। इसी प्रकार कोयला एवं इस्पात पर स्थायी समिति से संबंधित 25 पृष्ठों का अनुवाद किया गया। साथ ही प्रशासन अनुभाग से प्राप्त भर्ती नियमावली के करीब 200 पृष्ठों का भी हिन्दी अनुवाद किया गया। तदुपरांत खान मंत्रालय के वार्षिक रिपोर्ट वर्ष 2019 - 20 के अध्याय 10 हेतु हिंदी अनुभाग का रिपोर्ट हिंदी और अंग्रेजी द्विभाषी रूप में तकनीकी सचिव अनुभाग को प्रेषित किया गया है। इसके अलावा तकनीकी सचिव, भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर से प्राप्त भारतीय खान ब्यूरो के सभी महत्वपूर्ण स्कीम एवं प्राप्त की गई उपलब्धियों से संबंधित विवरण का 06 पृष्ठों का अनुवाद कार्य किया गया एवं टंकित कर उसे प्रेषित किया गया।

<u>हिंदी पखवाड़ा - 2019 की रिपोर्ट</u>

भारतीय खान ब्यूरो (मुख्यालय) नागपुर में दिनांक 03/09/2019 से दिनांक 17/09/2019 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। श्री पी. एन. शर्मा, मुख्य खान नियंत्रक (प्रभारी) भारतीय खान ब्यूरो एवं डॉ. रंजीत रथ, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, एम.ई.सी.एल., नागपुर ने दिनांक 03/09/2019 को दीप प्रज्ज्वलित कर हिंदी पखवाड़ा का उदघाटन किया।

डॉ. रंजीत रथ, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, एम.ई.सी.एल., नागपुर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस अवसर पर डॉ. पी. के. जैन, मुख्य खनिज अर्थशास्त्री एवं राजभाषा अधिकारी तथा श्री एस. के. अधिकारी, मुख्य खनन भूविज्ञानी भी उपस्थित थे।

दिनांक 03/09/2019 को हिंदी पखवाड़ा के उद्घाटन समारोह के अवसर पर दीप प्रज्ज्वलित करते हुए श्री पी. एन. शर्मा, मुख्य खान नियंत्रक (प्रभारी), भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर।

अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री पी. एन. शर्मा, मुख्य खान नियंत्रक (प्रभारी) ने दैनंदिन कार्यालयीन कार्य अधिकाधिक हिंदी में ही करने पर बल दिया। साथ ही उन्होंने कहा कि हिंदी हमारी निज भाषा है तथा यह भाषा अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम है। हमें अपनी भाषा के प्रति आदर और सम्मान होना चाहिए तथा हिंदी को हमें प्राकृतिक एवं स्वाभाविक रूप में ही अपनानी चाहिए। उन्होंने भारतीय खान ब्यूरो मुख्यालय में हिंदी संबंधित कार्यों में हो रही प्रगति की सराहना की तथा इसमें और वृद्धि की आशा जताई।

दिनांक 03/09/2019 को हिंदी पखवाड़ा के उद्घाटन समारोह के अवसर पर अध्यक्षीय भाषण देते हुए श्री पी. एन. शर्मा, मुख्य खान नियंत्रक (प्रभारी), भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर।

समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. रंजीत रथ ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि राजभाषा हिंदी का विकास सिर्फ सीमित दायरे में ही रहकर नहीं हो सकता है । हमें हिंदी के विकास के लिए अपने सीमित दायरे से बाहर निकलकर कार्य करना होगा।

इसके पूर्व श्री एस. के. अधिकारी ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि हिंदी पखवाड़े के दौरान अंतरविभागीय प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाना चाहिए ताकि विभिन्न विभागों के कार्मिक समान रूप से प्रतियोगिता में भाग ले सकें।

राजभाषा अधिकारी डॉ. पी. के. जैन ने स्वागत भाषण दिया तथा भारतीय खान ब्यूरो कार्यालय की हिंदी प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसके अंतर्गत वर्षभर का लेखा - जोखा प्रस्तुत किया गया। तत्पश्चात उन्होंने हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित होने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं की जानकारी दी।

हिंदी पखवाड़ा के उद्घाटन समारोह का संचालन कु. प्रतिभा शर्मा, भंडार लिपिक ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन श्री अभिनय कुमार शर्मा, सहायक संपादक द्वारा दिया गया। उद्घाटन समारोह की सफलता हेतु हिंदी अनुभाग के श्रीमती मिताली चटर्जी वरिष्ठ हिंदी अनुवादक,

श्री असीम कुमार, हिंदी अनुवादक, श्री किशोर डी. पारधी, हिंदी अनुवादक, श्री श्रीनाथ, हिंदी अनुवादक, श्री प्रदीप कुमार सिन्हा, अवर श्रेणी लिपिक, श्री एन. एम. मोरे, प्रेसमैन तथा श्री ए. के. नाल्हे, एम. टी. एस. ने अपना पूर्ण योगदान दिया।

हिंदी पखवाड़ा के अवसर पर केंद्रीय पुस्तकालय, भारतीय खान ब्यूरो के सहयोग से आयोजित 'राजभाषा पुस्तक प्रदर्शनी' का भी उद्‌घाटन श्री पी. एन. शर्मा, मुख्य खान नियंत्रक (प्रभारी) एवं डॉ. रंजीत रथ, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, एम.ई.सी.एल. द्‌वारा किया गया । यह पुस्तक प्रदर्शनी दिनांक 03/09/2019 से 13/09/2019 तक प्रतिदिन आयोजित की गई जिनमें राजभाषा, अनुवाद, कम्प्यूटर, तकनीकी, स्वास्थ्य, व्यक्तित्व विकास, पर्यटन, महान व्यक्तित्व, खेल - कूद साहित्य, धर्म, दर्शन, अध्यात्म, काव्य, नाटक, उपन्यास एवं कहानियां विषयक पुस्तकें प्रदर्शित की गई। उक्त प्रदर्शनी में करीब 500 पुस्तकों का प्रदर्शन किया गया तथा करीब 80 कार्मिकों ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

दिनांक 03/09/2019 को हिंदी पखवाड़ा के उद्‌घाटन समारोह के अवसर पर डॉ. रंजीत रथ, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, एम.ई.सी.एल. पुस्तक प्रदर्शनी' का उद्‌घाटन करते हुए।

हिंदी का आयोजन दिनांक 03/09/2019 से 17/09/2019 तक किया जाएगा, जिसके दौरान हिंदी निबंध, टिप्पण आलेखन, हिंदी अनुवाद, तात्कालिक वाक, हिंदी टंकण, हिंदी शुद्‌धलेखन एवं हिंदी प्रश्न मंच प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। अधिक से अधिक कार्मिकों को प्रोत्साहित

करने के उद्देश्य से ये प्रतियोगिताएं हिंदी एवं हिंदीत्तर भाषी वर्गों के लिए अलग - अलग आयोजित की गईं। उक्त सभी प्रतियोगिताओं में अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़ - चढ़कर हिस्सा लिया। पखवाड़े के दौरान कुल - 13 प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं जिनमें करीब 60 कार्मिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। साथ ही वर्ष के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु तीन प्रभागों / अनुभागों यथा खनिज अर्थशास्त्र प्रभाग, मुख्य खान नियंत्रक कार्यालय एवं खान नियंत्रक (मध्य) कार्यालय को क्रमश: प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया।

दिनांक 17/09/2019 को निदेशक (अयस्क प्रसाधन), श्रीमती इन्दिरा रविन्द्रन की अध्यक्षता में हिंदी दिवस, हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर वी. एन. आई. टी., नागपुर के निदेशक, डॉ. प्रमोद पडोले मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। साथ ही श्री पी. एन. शर्मा, मुख्य खान नियंत्रक (प्रभारी), श्री एस. के. अधिकारी, मुख्य खनन भूविज्ञानी एवं डॉ. पी. के. जैन, मुख्य खनिज अर्थशास्त्री एवं राजभाषा अधिकारी भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

कार्यक्रम के आरंभ में डॉ. पी. के. जैन, राजभाषा अधिकारी द्वारा माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार श्री अमित शाह जी का संदेश वाचन किया गया। श्री पी. एन. शर्मा द्वारा माननीय संसदीय कार्य, कोयला तथा खान मंत्री, भारत सरकार श्री प्रल्हाद जोशी जी का संदेश पढ़ा गया।

दिनांक 17/09/2019 को हिंदी दिवस के अवसर पर माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार श्री अमित शाह जी का संदेश वाचन करते हुए डॉ. पी. के. जैन, राजभाषा अधिकारी।

हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह के अवसर पर भारतीय खान ब्यूरो नागपुर की हिंदी गृह पत्रिका 'खान भारती' - 2019 का विमोचन भी किया गया।

दिनांक 17/09/2019 को हिंदी दिवस, हिंदी पखवाड़ा समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर हिंदी गृह पत्रिका 'खान भारती' का विमोचन।

सभा को संबोधित करते हुए श्रीमती इन्दिरा रविन्द्रन ने राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग पर बल दिया और कहा कि संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का अत्यंत ही महत्वपूर्ण स्थान है। इसके पूर्व सभा को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि डॉ. प्रमोद पडोले ने कहा कि सभी सरकारी कर्मचारियों को अपना दैनंदिन कार्य हिंदी में करना चाहिए। इसके पूर्व सभा को संबोधित करते हुए श्री पी. एन. शर्मा, मुख्य खान नियंत्रक (प्रभारी) ने कहा कि हिंदी भाषा का विकास अवश्य होना चाहिए परंतु साथ ही अन्य भाषाओं का निरादर भी नहीं होना चाहिए। राजभाषा अधिकारी डॉ. पी. के. जैन ने हिंदी पखवाड़े के दौरान की गई गतिविधियों और विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन की जानकारी सभा के समक्ष रखी।

दिनांक 17/09/2019 को हिंदी पखवाड़ा के समापन समारोह के अवसर पर अध्यक्षीय भाषण देते हुए श्रीमती इन्दिरा रविन्द्रन, निदेशक (अयस्क प्रसाधन) भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर।

हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित की गई विभिन्न हिंदी विषयक प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों को अध्यक्ष, मुख्य खान नियंत्रक (प्रभारी), मुख्य अतिथि महोदय एवं राजभाषा अधिकारी द्वारा पुरस्कार वितरित किए गए।

दिनांक 17/09/2019 को हिंदी दिवस, हिंदी पखवाड़ा समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर पुरस्कार वितरित करते हुए मुख्य अतिथि डॉ. प्रमोद पडोले, निदेशक, वी. एन. आई. टी., नागपुर।

हिंदी पखवाड़ा के पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह का संचालन श्री निलेश महात्मे, अवर श्रेणी लिपिक ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन श्री अभिनय कुमार शर्मा, सहायक संपादक द्वारा दिया गया। उक्त समारोह को सफलतापूर्वक आयोजन में हिंदी अनुभाग के श्रीमती मिताली चटर्ली वरिष्ठ हिंदी अनुवादक, श्री असीम कुमार, हिंदी अनुवादक, श्री किशोर डी. पारधी, हिंदी अनुवादक, श्री जगदीश अहरवार, आशुलिपिक ग्रेड-I, श्री श्रीनाथ, हिंदी अनुवादक, श्री प्रदीप कुमार सिन्हा, अवर श्रेणी लिपिक, श्री एन. एम. मोरे, प्रेसमैन तथा श्री ए. के. नाल्हे, एम.टी.एस. का पूर्ण योगदान रहा।

आइये, हम सब मिलकर
राजभाषा नीति के निष्ठापूर्वक अनुपालन में
अपनी सक्रिय भूमिका निभाएँ....

भारतीय खान ब्यूरो

नागपुर